श्रीमती मणिबेन एम. पी. शाह
वॉमेन्स कॉलेज
ऑफ
आर्ट्स एण्ड कॉमर्स

कक्षा: एम. ए.
भाग: दो (२)
सत्र: चतुर्थ
विभाग: हिंदी

प्रशिक्षुता परियोजना
जून - २०२१

नाम: मनीषा कहार
पंजीक्रमांक: तीन (३)
विषय: प्रेरणास्पद और नैतिक मूल्यों पर आधारित कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन (१५ - कहानियाँ)

INDEX

Name : मनीषा कहार

Std : एम. ए. (भाग) → Div : २ Roll No : ३

Sub : प्रशिक्षुता - परियोजना जून - २०२१

~~School~~ / College : श्रीमती एम. एम. पी. शाह वा. का. ऑ. ए. का.

Sr. No.	Date	Title	Remark	Pg. No.
१.		काबुलीवाला (रवींद्रनाथ टैगोर)		३.
२.		रामलीला (प्रेमचंद)		७.
३.		खिलौने और बोझ (विष्णु प्रभाकर)		११.
४.		मंगल सूत्र (पन्नालाल पटेल)		१५.
५.		बिल्ली और बनीर (कृश्न चन्दर)		१९.
६.		फोटोग्राफर (कुर्रतुलऐन हैदर)		२३.
७.		सावधान ब्रिज आइस्ड है (कमलेश बख्शी)		२५.
८.		चप्पल (श्री कमलेश्वर)		२९.
९.		वापसी (डॉ. उषा प्रियंवदा)		३३.
१०.		पूरब और पश्चिम (जयकान्तन दण्डपाणि)		३७.
११.		आस्था के आयाम (मालती जोशी)		४१.
१२.		सजा (हिमांशु जोशी)		४५.
१३.		मुआवजा (डॉ. चित्रा मुद्गल)		४९.
१४.		निर्वासित (डॉ. सूर्यबाला)		५३.
१५.		काशीदाकारी (नासिरा शर्मा)		५९.

१.
काबुलीवाला
(रवींद्रनाथ टैगोर)

(सन् १८६१ - सन् १९४१)

प्रस्तावना

रवींद्रनाथ ठाकुर जी गुरुदेव के नाम से भी जाने जाते हैं। वे बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा थे अर्थात युगदृष्टा। आप ने साहित्यिक कला से नोबेल पुरस्कार के विजेता रह चुके हैं। वे एक मात्र रचनाकार हैं जिनकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनी।

१. भारत का राष्ट्रगान 'जन-गण-मन'
२. बाँग्लादेश का राष्ट्रीयगान 'आमार सोनार बाँग्ला'

रवींद्रजी एक लेखक, कवि, नाटककार, संगीतकार, चित्रकार हैं। इनकी भाषा बांग्ला और अंग्रेजी है। गीतांजलि, महुआ आदि इनकी मुख्य रचनाएँ हैं। इनकी इन्हीं रचनाओं में मैंने इनकी विश्व प्रसिद्ध कहानी 'काबुलीवाला' पढ़ी। जिसमें मानवीयता दिखाई गयी है। इस कहानी का अनुवाद बांग्ला से हिंदी में सुरेन्द्र तिवारी जी ने किया है।

'काबुलीवाला' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु —

इस कहानी में काबुलीवाले के बारे में बताया है जो काबुल शहर से कलकत्ता आकर काजू, बादाम आदि सब बेचता था। लेखक की बेटी मिनी जो पाँच साल की है वह रहमत से घुल-मिल गयी थी। शुरुआत में नहीं पर जब लेखक उससे सामान लेने लग गया तब रहमत ने उसके नन्हें दिल पर काबू पा लिया था। दोनों में कुछ बंधी हुई बातें और हँसी मजाक चलते रहते। रहमत मिनी से कहता कि ससुराल कभी मत जाना उल्टे मिनी ही उससे पूछ पड़ती की ससुराल कब जाओगे। जवाब में रहमत कहता

ससुराल में ससुर को मारूंगा। उसकी पत्नी, लेखक की पत्नी को रहमत पर भरोसा नहीं सिर्फ शक रहता था कि वह बाहर का व्यक्ति है वह कभी भी कुछ भी कर सकता है। मगर रहमत ऐसा नहीं है। लेखक को रहमत पर भरोसा है।

कुछ दिनों बाद लेखक को अपने घर के सामने खूब शोर सुनाई देता है जब वह देखता है तब रहमत के हाथ में हथकड़ी और पुलिस पकड़ी थी। उसका उधार न चुकाने के कारण उसने हत्या कर दी थी। इसी आरोप में रहमत जेल ले जाया जा रहा था तभी मिनी वहाँ पहुँची और रहमत से बोली ससुराल जाओगे रहमत बोला वहीं जा रहा हूँ।

कई वर्ष तक रहमत को जेल हुई थी। जब वह जेल से छूटकर आता है मिनी से मिलने तब तक मिनी बड़ी हो चुकी होती है और जब वह मिलने आता है तब मिनी का विवाह रहता है उसे इस दुल्हन की वेश-भूषा में देखकर दंग रह जाता है। तभी लेखक को वह मिनी से मिलने से पहले अपनी बेटी के छपे छोटे-छोटे हाथ कागज में दिखाता है और इस लेखक की बेटी में वह अपनी बेटी की छवि पहले देखा करता था। मिनी को देखने के बाद लेखक ने उसे कुछ रूपए दिए और उसे उसके घर जाने को कहा। रहमत को भी याद आया कि उसकी बेटी भी उसकी राह देख रही होगी। वो भी बड़ी हो गई होगी मिनी की तरह विवाह योग्य।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण) –

इस कहानी में लेखक ने मुख्य पात्र रहमत के जरिए एक आदर्श और सहानुभूति व्यक्तित्व का चरित्र बताते हुए बिना भेद भाव के मिनी में ही अपनी बेटी की छवि देखा करता है। जो समानता लाने में प्रयत्न करती है। इस कहानी में लेखक ने रहमत के प्रति विश्वास दिखाते हुए हर व्यक्ति एक जैसा नहीं होता का अनुभव प्रस्तुत करता है।

वह यह कि लेखक कि पत्नी रहमत पर संदेह करतीहै। लेखक नहीं करता वह बल्कि विश्वास करती है।

मिनी और रहमत पात्र में एक हास्य और व्यंग्य आ जाताहै। जब रहमत को हत्या के जुर्म में पुलिस ले जातीहै तब वह रहमत के एक बात जो वह बार-बार मिनी से कहा करता था उसे वह कहतीहै ससुराल जाओगे। रहमत कहा वहीं जा रहा हूँ। इस संवाद में हास्य और मिनी जो चंचल सी बच्चीहै उस बच्ची कि नासमझ ही सही मगर कभी-कभी बच्चें सही मौके पर चौके मार ही जातेहैं यह लेखक बखूबी प्रस्तुत किए हैं।

इस कहानी में उपस्थित संवाद पाठक के समझ में आए इस तरह लेखक ने लिखा है। जिसे पढ़ते ही ऐसा लगता है मानो कहानी के पात्र स्वयं पाठक बन गए हों। यही कहानी लेखक ने सरल भाषा और हिंदी भाषा में है। जिसे पढ़ने में और रोचकता आतीहै। यह कहानी विश्व प्रसिद्ध कहानी आखिर क्यों है वह इस कहानी में आपसी सौहाद्र, समानता, मानवीयता का उद्देश्य देते हुए पता चलता है रहमत और लेखक के आपसी स्वभाव से।

इस कहानी में मैं एक ही असमंजस में हूँ कि मिनी को रहमत के हाथ खून से लथपथ दिखते हुए भी वह डरती नहीं क्योंकि वह सिर्फ पाँच साल की बच्चीहै। इस उम्र में बच्चें डरते ही हैं। मगर कहानी में लेखक ने यहाँ एक हास्य, व्यंग्य प्रस्तुत किया है। इस कहानी में रहमत मुस्लिम धर्म और लेखक हिंदू धर्म काहै अच्छी बात तो यह है कि लेखक ने यहाँ धर्म के भेद-भाव न बताते हुए आपसी सौहाद्र का उद्देश्य देते हैं।

लेखक ने इस बात से भी सावधान कियाहै कि जिस

तरह रहमत ने आक्रोश में आकर गलत कदम उठा लिया जिसका परिणाम उसके परिवार पर पड़ा क्योंकि रहमत अपने परिवार के लिए ही काबुल से दूर कलकत्ता आया था कमाने के लिए लेकिन उसके एक गलती के कारण उसका परिवार न जाने किन-किन तकलीफों से गुजरा होगा। अगर वह यह गलती न करता तो सब अच्छा ही होता। इस बात का जिक्र कहानी में नहीं है मगर कहानी पढ़ने पर यह दुर्घटना सोचने पर मजबूर कर देती है। सावधानी इस हकीकत की कि अगर हम कहीं भी जाएं तो सोच-समझकर फैसले लें क्योंकि हमारा परिवार भी है।

निष्कर्ष: काबुलीवाला कहानी में लेखक रवीन्द्रनाथ जी ने मानव का मानव के प्रति विश्वास और इंसानियत का धर्म पर चलना इस कहानी में सिख दी है। रहमत के माध्यम से लेखक विभिन्न धर्मों के लोगों में भी आपसी सौहार्द्र व मानवीय प्रेम का वर्णन किया है। काबुलीवाला एक दयालु व सहृदय व्यक्ति है, जो लेखक से प्रेमपूर्ण व्यवहार रखता है। वह मिनी में ही अपनी बेटी का प्रतिबिंब देखता है यही उसकी दृष्टि एक ही है बच्चों के प्रति।

रहमत और मिनी को लेकर, उनके माध्यम से पिता-पुत्री के मर्मस्पर्शी संबंधों पर प्रकाश डाला है।

रामलीला
(प्रेमचंद)

(सन् १८८० - सन् १९३६)

प्रस्तावना

प्रेमचंद जी हिंदी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। वें हिंदी और उर्दू के कहानी और उपन्यास रचते थें। वें अध्यापक लेखक पत्रकार रहे हैं। उन्होंने कफन, पूस की रात आदि तीन सौ (३००) से अधिक कहानियाँ लिखीं। निर्मला, गबन आदि डेढ़ दर्जन अर्थात (१८) अट्ठारह उपन्यास लिखें।

१९०६ से १९३६ के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन ३० वर्षों का सामाजिक सांस्कृतिक दस्तावेज है। उनके साहित्य में समाज सुधारक आंदोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आंदोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। उनमें दहेज, लगान, छूआछूत आदि उस दौर की सभी समस्याओं का चित्रण मिलता है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनके साहित्य की मुख्य विशेषता है। ऐसे ही इनकी 'रामलीला' लघु कहानी में हमारे देव को लेकर लेखक एक आदर्श बने रहे हैं परंतु सभी उसी देव के प्रति मात्र नाम भर ढोंग करते हैं आदर्श का।

'रामलीला' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु-

यह कहानी रामलीला अर्थात राम की लीला रामायण को नाट्य रूप में भारत में रामनवमी के वक्त कहीं न कहीं होती रहती है। परंतु लेखक को रामलीला देखना और उसमें कार्य करना बचपन में ही अच्छा लगता था बड़े होने पर वही अच्छा लगना सिर्फ लेखक को रामलीला अपने बचपने में नजर आने लगता है। वह कहते हैं कि जब बचपन में वें रामलीला में कार्य करते थे तभी उसका महत्व नहीं था लोग मंचन

प्रदर्शित कर देखके जनता आनंद मात्र ही लेती थी। वहीं एक वेश्या भी नाचती है जिसे रामलीला के मंचन से ज्यादा जनता चाहती है और उस पर रुपए लुटाती है। जनता तो ठहरी सुबा। पर यहाँ लेखक के पिता एक पुलिसवाले होते हुए भी वे भी रामलीला को महत्व न देते हुए एक वेश्या के लिए अशर्फी देते हैं। फिर भी लेखक नाराज होते हुए भी यह सोचकर अपने पिता से रामलीला के मंचन करने के लिए राम-लक्ष्मण-सीता को मंचन करने के बावजूद उन्हें जनता कुछ नहीं देती तो वे अपने पिता से मदद माँगते हैं कि जब वेश्या को दे सकते हैं तो रामलीला के मंचन करनेवाले लोगों को देही देंगे। मगर पिता मना कर देता है लेखक तब अपनी जमापूँजी गल्लक तोड़कर दो आने-चार आने उन्हें दे आता है। तब से लेखक अपने पिता के विपरीत हो जाते हैं हालांकि उनका ही नुकसान होता था फिर भी वे विपरीत ही रहे।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण) -

'रामलीला' कहानी का शीर्षक पढ़कर तो मुझे यही प्रतीत हुआ कि यह कहानी राम के बारे में होगी। परंतु इस कहानी में, जब मैंने पढ़ी तो यहाँ मुझे मिलता है कि 'रामलीला' कभी किसी जमाने में बहुत बड़ी हुआ करती थी पर इस जमाने में 'रामलीला' एक वेश्या का ही हो गया है।

यह कहानी लेखक ने हिंदी भाषा में लिखी है जो पढ़कर पाठक को यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि आखिर राम क्यों खोते जा रहे हैं समय के परिवर्तन में। यह परंपरागत और आदर्श कि राह पर सीख देनेवाली कहानी है। राम जी हमारे परंपरा है जो कभी मिटेंगे नहीं ना ही हमें उसे मिटाना चाहिए। राम जी तो मर्यादा पुरुषोत्तम थे। फिर क्यों लोग उन्हें भूलकर दुनिया की माया-जाल वेश्याओं के प्रति ज्यादा लगाव रखते हैं?

लेखक यहाँ 'रामलीला' राम की ही मानता है और राम को महत्व देते हुए हमें भी उनके प्रति आदर्श रहने को कहता है। लेखक के पिता और मूर्ख जनता जैसे मत बनो जो सिर्फ दिखावे के हो इसकी भी सीख हमें लेखक देते हैं। इस द्वंद्व में हमें नहीं रहना चाहिए। राम जैसे आदर्शवादी मर्यादा पुरुषोत्तम की राह पर चलने को लेखक कहते हैं।

निष्कर्ष: इस कहानी में लेखक के पिता की दृष्टी सही-गलत के मामलें में उसके विपरीत थी। जबकि वे पुलिस के आदमी थे। मगर लेखक बचपन से ही सही-गलत की पहचान रखते हैं। चौधरी जैसे लालची आदमियों के कारण भी रामलीला का महत्व कम हो रहा है। इसमें राम के प्रति किसी की भी आस्था नहीं रही है। सबके सब उस वेश्या के ही भक्त बने हैं। राम का अस्तित्व धुंधला और आकर्षित वेश्या जैसे लोगों की ओर अस्तित्व को मुड़ाया जा रहा है। लेखक जरूरतमंद और उचित लोगों की ही मदत करने कहते हैं। नैतिक मूल्यों पर चलने को कहा है।

३. खिलौने और बेटे
(विष्णु प्रभाकर)

(सन १९१२ - सन २००९)

प्रस्तावना

विष्णुजी हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक थे जिन्होंने अनेकों लघु कथाएँ, उपन्यास, नाटक तथा यात्रा संस्मरण लिखें। उनकी कृतियों का देशप्रेम, राष्ट्रवाद तथा सामाजिक मुख्य भाव है। वे सच में रचनामुख्यभाव के थे इसका पता उनकी मृत्यु से पहले उनके अंगदान से पता चलता है।

इनके ढलती रात, अर्धनारीश्वर आदि उपन्यास रहे हैं। और खिलौने, हत्या के बाद आदि कहानी संग्रह रही हैं। इनकी लघु कथाओं में 'खिलौने और बेटे' प्रासंगिक और प्रतीकात्मक कहानी है जिसमें परवरिश, आजादी आदि के विषय चर्चित है।

'खिलौने और बेटे' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु-

लेखक ने इस कहानी में, प्रोफेसर सुभाष और उसकी पत्नी दीपा बहुत ही अच्छा परिवार है यहाँ प्रोफेसर की परवरिश बहुत ही आजादी से हुई है मगर प्रोफेसर ने कभी अपनी आजादी का गलत फायदा नहीं उठाया। यही आजादी प्रोफेसर अपने बेटे को देता है मगर वो उसका गलत फायदा उठाता रहता है। भले ही उसका बेटा उच्च पद पर है मगर वह हर दो-तीन महीनों में किसी न किसी शादी या प्रोग्राम में किसी-न-किसी लड़की से उसकी भेंट हो जाया करती थी। प्रोफेसर का बेटा अकल से शरीर से बाहरी लोगों के लिए बहुत ही आकर्षक और अच्छा दिखता था। और जिस लड़की से उसकी भेंट होती वह उस लड़की से कुछ दिनों बातें करता और उनके घर जाता उनके घर जाने से पहले वह उन लड़कियों से शादी का वादा करता

उनके घर चाय पीकर आता फिर बजाय विवाह करनेके वह उनके साथ बाहर एक-दो महीना रुकता फिर शादी से इंकार कर देता। यह सब देख प्रोफेसर को क्रोध आता कि यह शरीफों का खानदान है कोई वेश्यावृत्ति नहीं। उसकी माँ दीपा मिट्टी के खिलौने अपने घर के सामने बड़े प्यार से बनता देखकर अफसोस मनाती थी कि पहले ये लोग नौ महीने मिट्टी, कागज आदि इकट्ठा कर उन्हें दो महीने बनाते हैं फिर एक महीने बेचते हैं पर बहुत कम। अब तो मशीनों से सब तरह-तरह के सुंदर खिलौने बनने लगे हैं पुराने खिलौनों का मूल्य नहीं पर फिर भी दीपा पुराने खिलौने ही लेती। मगर अचानक अपने बेटे की दुल्हन जो नए जमाने कि रहती है और पुराने जमाने की हर चीज नकारती है जिसमें वह दीपा स्वयं को कोशती है ऐसे स्वप्न आने पर वह फौरन उठकर पुराने खिलौने बदसूरत कहकर तोड़कर फेंक देती है। तभी सुनील जो दीपा और सुभाष का बेटा है वह फोन करके अर्थात पत्र भेजकर यह संदेश देता है कि वह बाहर किसी अन्य स्वेतलाना नाम की लड़की से विवाह करेगा छः महीने बाद आएगा। तब सुभाष गुस्से से पत्र लिखता है कि सुनिश्चित करके बताना कि विवाह कब करोगे जब विवाह करोगे तब बताना जरूर हमारा ढेरों प्यार।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण) -

लेखक की इस कहानी में प्रोफेसर सुभाष और दीपा पात्र अच्छे हैं मगर वहीं सुनील नामक पात्र उनके परवरिश आजादी देने के कारण अधिक बिगड़ गया है। मगर यहाँ दोष आजादी को नहीं दिया जा सकता क्योंकि उसके पिता सुभाष को भी उसके पिता ने आजादी दी थी उसने गलत कदम कभी नहीं उठाया। फिर यहाँ सुनील क्यों बिगड़ जाता है यह प्रश्न दोनों कि परवरिश में द्वंद्व लाता है।

भाषा सरल और सुगम हिंदी में कहानी लिखी गयी है। यह कहानी लेखक ने इस तरह लिखी है जिसे पढ़कर क्रोध और असमंजस होता है कि आखिर सुनील के आस-पास बचपन से ही सब अच्छाईयाँ ही रही फिर कैसे वह लड़कियों को झूठे वादा करता है सुनील शायद इस नजरिये से देखा जाए तो वह मानसिक तौर पर थोड़ा बीमार नजर आता है। क्योंकि सभी लड़कियाँ भी उच्च पद पर ही होती हैं फिर किस चीज की कमी होती होगी। वे सुंदर भी, सुशील भी थीं। फिर भी वह ऐसा क्यों करता है यह बात कुछ समझ में बैठती है तो कुछ नहीं।

यह कहानी खिलौने को लेकर प्रतीकात्मक ही है कि यहाँ दीपा देखती है कि पहले मिट्टी के खिलौने बड़ी मेहनत से बनते थें पर उनमें सुंदरता कम होती अब मशीनों से सुंदर मिट्टी के खिलौने कुछ समय में ही तैयार हो जाते हैं जो आकर्षक लगते हैं। ऐसे ही उनका बेटा यहाँ है जो मेहनत करके बड़ा तो कर लिए घर अंदर से बुद्धिहीन, मानसिक रोग पीड़ित है। लेकिन दीपा पुराने खिलौने ही लिया करती उसे वही भाता मगर एक स्वप्न के कारण वह उन खिलौनों को भद्दा कहकर फेंक देती। ऐसे ही सुभाष और दीपा को सुनील से चिढ़ होने लगती है। क्योंकि सुनील, वह घृणित कार्य कर बैठता है।

यह कहानी देखी जाए तो प्रासंगिक भी है क्योंकि जो सुनील कर रहा है वो पहले से कोई न कोई व्यक्ति लड़कियों को धोखा देता है झूठे वादे करके। आज भी यह सिलसिला जारी ही है।

निष्कर्ष: इस कहानी में सुभाष और दीपा के बीच पति-पत्नी का अटूट रिश्ता है जिसे लेखक ने इस तरह दर्शाया है कि दोनों एक-दूसरे के साथ ही बैठकर खाना-

खाते हैं अकेले नहीं।

सुनील यहाँ एक प्रेमहीन प्राणी के रूप में नजर आता है तो बीमार मानसिक रूप से। पिता-पुत्र का संबंध लेखक ने राग-द्वेष पूर्ण दिखाया है। और वे बस ऊपरी तौर से रिश्ते नाम भर मात्र के लिए निभा रहे हैं।

४.

मंगल सूत्र

(पन्नालाल पटेल)

(सन १९१२ - सन १९८९)

प्रस्तावना

पटेलजी गुजराती भाषा के जानेमाने साहित्यकार थे। वे गुजराती के अग्रणी कथाकार रहें। इन्होंने अगणित लेखन कार्य किए थें। जिसमें उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, जीवनी, बच्चों के साहित्य और विविध प्रकार के अन्य लेख भी शामिल हैं। उनके साहित्य का भारत की लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इनके कार्य के चलते इन्हें 'रणजित-राम पुरस्कार' तथा 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

इनकी इन्हीं कार्यों का आधा, एक का आधा के आधा प्रतिशत एक लघु कथा 'मंगल- सूत्र' जिसमें अंधविश्वास तथा आर्थिक मजबूरी समेत सारी मुश्किलों का हल पति- पत्नी को 'मंगल सूत्र' ही मिलता है। इस कहानी को डॉ. आलोक ने अनुवादित किया है गुजराती से हिंदी।

मंगल सूत्र कहानी की समीक्षा

कथावस्तु -

इस कहानी में चेतनलाल एक प्रयत्नशील, कार्यशील व्यक्ति हैं परंतु उसके परिवार में माँ-बाप और दो छोटी बहन की भी पीड़ा है जिसमें उसे खर्च चाहिए होते हैं तो उसके निजी परिवार पत्नी और बेटा की भी खर्चे रहते हैं जिसमें उसे मकान का किराया, राशन, दवाई आदि तो कर्ज किए रहता है कर्ज के लिए समय पर न चुका पाना उनके सिर का बोझ बन जाता है। बेटा भी बीमार पड़ जाता है। चेतनलाल की इतनी तनख्वाह भी नहीं रहती कि उससे कर्जा चुकाया जाए आखिर करे तो वो क्या करें अंत में उसकी नजर उसके पत्नी के मंगल

सूत्र पर जाती है पर वह यह सोचकर कुछ नहीं कहता कि उसकी पत्नी मंगल-सूत्र अपशगुन कहकर बेच नहीं देगी। मगर उसकी पत्नी अंत में अपने पति कि चिंता देख उसे मंगल सूत्र स्वयं दे देती है वह भी इस तरह कि मानो वो अपने प्राण दे रही हो। उसे अंधविश्वास घेरा रहता है कि मंगल-सूत्र बेचना अपसगुन होता है। इससे पति की मृत्यु होती है। परंतु चेतन उसे कहता है कि अभी मैं जिंदा हूँ। फिर जाते वक्त टेलीविजन से अपसकुन वाली खबरें उसे सुनाई देती है तो वह और संदेह से अपने पति चेतन को ऐसे देख रही होती है मानो अंतिम बार देख रही हो।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण)-

इस कहानी में लेखक की यह अनुवादित कहानी हिंदी भाषी है जो बखूबी समझ में आती है और पाठक इस कहानी को पढ़कर प्रेरणा मुश्किलों से हालातों से लड़ना भी सिखाती है। इनकी यह कहानी अंधविश्वास के प्रति प्रकट हुई है। चेतनलाल मेहनती तो है मगर तनख्वाह कम और कहीं नौकरी नहीं मिलने के कारण उसे मजबूरन कम तनख्वाह वाला कार्य ही करना पड़ता है। मगर उसमें उसका गुजारा नहीं होता क्योंकि उसके ऊपर बहुत सी जिम्मेदारियाँ होती हैं।

चेतन बहुत मजबूत इंसान भी है वह हार नहीं मानता और ऐसे मजबूर हालातों में भी वह अपने पत्नी को खुश रखने की कोशिश करते रहता है। उसका मानना है कि, लेखक ने चेतन पात्र के जरिए बहुत ही विशेष बात कही है कि यदि मुसीबत है तो उदास रहने से उसका हल नहीं मिलता ढूंढने पर मिलता है तो हमेशा खुश ही रहना चाहिए। जैसे चेतन रहता है हाँ मगर थोड़ा चिंतित भी पर वह हल ढूंढते रहता है अंत में उसे मंगल सूत्र ही समाधान दिखता है। पत्नी के स्वयं देते

ही वह उसे बेचने चले जाता है। मगर उसकी पत्नी को यहा लेखक ने अंधविश्वास के चलते यह बताया है कि जब पति चिंता में रहे, परेशानी में रहे तो यदि मंगल-सूत्र से समाधान हो रहा है तो इसका मतलब यह नहीं कि पति की मृत्यु हो रही है बल्कि सिर का बोझ खत्म हो रहा है जिससे पति अच्छा रहे। और परिवार भी खुश। आभूषणों का क्या है जब भी खर्च हो तब जाकर ले लो।

निष्कर्ष: चेतन विवश होकर मंगल सूत्र बेचने चला जाता है।

इस कहानी में न हार मानने वाले चेतन ने आखिर समाधान परेशानियों का ढूंढ ही लेता है। साथ में यदि उसकी पत्नी कि बात करें तो अंधविश्वास ही सही मगर अन्य लोगों में, जीवन में ऐसी कई मजबूरियां आती है जिसे न चाहते हुए भी करना पड़ता है। जैसे कि चेतन की पत्नी का मंगल-सूत्र। मगर अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी पड़ती है।

५. बिल्ली और वजीर
(कृश्न चन्दर)
(सन् १९१३ - सन् १९७७)

प्रस्तावना

कृश्न जी हिंदी और उर्दू के कहानीकार थे। उन्होंने मुख्यतः उर्दू में लिखा किंतु भारत की स्वतंत्रता के बाद मुख्यतः हिंदी में लिखा। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन् १९६९ में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

गद्दार, रेत का महल आदि इनके उपन्यास हैं और तीन गुंडे, हम वहशी हैं आदि इनकी कहानी-संग्रह हैं। इनकी कहानियों में एक लघु कथा 'बिल्ली और वजीर' यह कहानी हास्यपद और व्यंग्यात्मक कहानी है।

'बिल्ली और वजीर' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु -

'बिल्ली और वजीर' कहानी में श्री उपाध्याय जी एक फकीर रहते हैं जो छोटे-मोटे इलाज करते हैं दवाई बनाते हैं आयुर्वेदिक। ऐसे ही चीफ मिनिस्टर के भानजे कि तबीयत खराब होने पर फकीर ने ठीक कर दिया। इससे खुश होकर उसने चीफ मिनिस्टर से मिलवाया। फिर चीफ मिनिस्टर की भी कई पुराने सालों की बवासीर फकीर ने छः महीने में खत्म कर दी। इससे खुश होकर चीफ मिनिस्टर ने उसे बंगला, कार आदि सब दिया। अब फकीर उन लोगों के साथ स्वास्थ्य का ख्याल रखने लग गया। चीफ ने उसे धीरे-धीरे अपना आदमी कहते-कहते उसे मंत्री बना लिया। जबकि फकीर इन सरकारी कामों में नहीं पड़ना चाहता था। मंत्री चीफ ने इसलिए भी बनाया कि राष्ट्रीय बचत पर उसने सबसे नीचे स्तर पर चपरासी

जैसे लोगों को कम करने की बात कही थी। जिससे चीफ बहुत खुश हुआ था। फिर उसे इस राष्ट्रीय बचत के सिल. सिले में उसे जंगल विभाग के पास भेजता है वहाँ भी उस फकीर को राष्ट्रीय बचत में बिल्ली का नौ रुपया आठ दूध का भारी लगा तो उसने उस बिल्ली को सस्पेंड किया। बिल्ली उस उपाध्याय को फिर आश्चर्यजनक देखने लगती है।

समीक्षा — लेखक की यह कहानी में श्री उपाध्याय पात्र हास्य और व्यंग्यात्मक के रूप में आए हैं। जिसमें वह सरकारी कामों में न चाहते हुए भी उसे मंत्री चीफ बना ही देता है। उसे मंत्री के बारे में कुछ नहीं पता फिर भी वह बना दिया जाता है और जब राष्ट्रीय बचत की बात आती है तो वह पहले सुझाव तो अच्छा देता है कि उच्चपद पर जो कार्य कर रहे हैं जैसे यदि आठ लोग हैं तो पाँच कर दो। मगर चीफ को इसमें राष्ट्रीय बचत नजर नहीं आती परंतु जब वह सबसे नीचले स्तर पर आता है तब उसे राष्ट्रीय बचत आता है।

चीफ भी मंत्री के लायक नहीं वह भी छोटे लोगों को परेशान करने में उसे राष्ट्रीय बचत नजर आता है। यहाँ यह बात क्रोध लाती है।

श्री उपाध्याय भी तो देखो बिल्ली को सस्पेंड करने से राष्ट्रीय बचत होती है। बिल्ली भी उसे आश्चर्य से व्यंग्यात्मक दृष्टि से देखती है। वह भी सोचती होगी कितना मुर्ख मंत्री है राष्ट्रीय बचत तो उच्च स्तर के लोगों को कम करने से होगी जो नीचले हैं वही तो मुख्य है। कैसा मंत्री है।

इस कहानी की भाषा हिंदी है और कहानी पढ़ने में मजा भी आता है तो कहीं गुस्सा।

निष्कर्ष: इस कहानी में उपाध्याय जो पहले कभी साधारण हकीम था अब वह मंत्री पद पर पहुँच गया। मगर सच कहें तो वह मंत्री जैसा काम न कर सका। यह बात उसके राष्ट्रीय बचत से ही पता चलती है। और न ठीक खुद मंत्री के लायक है। उसे आम लोगों को कम करने में राष्ट्रीय बचत नजर आती है।

इस कहानी में लेखक ने राजनेता जो व्यंग्यात्मक ही रहते हैं और उनके विचार उस लायक ही नहीं।

६.
फोटोग्राफर
(कुर्रतुलऐन हैदर)
(सन १९२७ - २००७)

प्रस्तावना

हैदर जी एक भारतीय उर्दू उपन्यासकार और लघु कथाकार, एक अकादमिक और एक पत्रकार थे। अपने दोस्तों और प्रशंसकों के बीच 'ऐनी आपा' के रूप में लोकप्रिय है। उन्हें लघुकथाओं के लिए भी पुरस्कार मिले हैं।

इनकी इन लघुकथाओं में 'फोटोग्राफर' कथा देखी जाए तो दार्शनिक कथा है। इस कथा में जिंदगी और उसकी रणभूमि में जीवन की बात को लेकर कहा गया है। इस कहानी को उर्दू से हिंदी में डॉ. सादिक ने अनुवाद किया।

'फोटोग्राफर' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु -

इस कहानी में एक गेस्ट हाऊस की सुंदरता और उसके पास की सुंदरता देख उसमें ऐसे ही एक फिल्म नर्तकी जो सुप्रसिद्ध थी और गायक वह भी उस नर्तकी से ज्यादा सुप्रसिद्ध था। दोनों वहाँ आते हैं साथ में नर्तकी के साथी अमर भी आता है। वहाँ कुछ दिनों बाद वहाँ से वे लोगों को कम ही लोग जानते हैं जिसमें फोटोग्राफर ही उन्हें जान पाता है। उस फोटोग्राफर के आग्रह करने पर उसने उनकी फोटो खींचकर उन लोगों को दी। मगर उस गेस्ट हाऊस से जाते वक्त तस्वीर वहीं भूल गए।

जब वह नर्तकी ठीक पंद्रह सालों बाद उसी गेस्ट हाऊस में आती है तो वह अकेली और थोड़ी वृद्ध हो जाती है। वही

कोटोगताफर भी रहता है। वह उसी कमरे में सकती है जहाँ वह अपनी ही तस्वीर पंद्रह साल पहले की पाती है। तब वह फोटोगताफर को चिल्लाती है कि यहाँ पंद्रह सालों से सफाई नहीं हुई तब वह उसे पहचानता है और बाकी दो के बारे में पूछता है जवाब में वे दोनों इस दुनिया में नहीं रहे। फिर वह नर्तकी वहाँ से चल देती है।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण)-

इस कहानी में लेखिका ने दार्शनिक विचार प्रकट किया है और इस कहानी का अनुवाद हिंदी भाषा में हुआ है। दार्शनिक विचार यह कि इस कहानी में लेखिका कहती है कि हम कहीं भी जाएं मगर एक साथी हमेशा हमारे साथ रहता है वह है मौत। वह कभी भी आ सकती है।

इस कहानी में लेखिका का कहना है कि जीवन की रणभूमि में लड़ते-लड़ते इंसान खो ही जाता है अर्थात स्वर्गवास हो ही जाता है जैसे कि पंद्रह साल बाद वह नर्तकी अकेली आती है। बाकि दो नहीं आते क्योंकि वे इस दुनिया में नहीं रहते।

अंत में लेखिका इस नर्तकी पात्र के जरिए यह संदेश दे जाती है कि जिंदगी इंसानों को खा जाती है सिर्फ कीड़े-मकौड़े अर्थात उनकी कुछ यादें या तस्वीरें ही बची रहती है जिसे कीड़े-मकौड़े ही उस पर जमा होने लगते हैं।

निष्कर्ष: लेखिका ने दार्शनिक विचार उत्पन्न करते हुए इस कहानी में यह हकीकत बताई है कि जिंदगी में हमेशा सफर के साथ मौत ही साथी रहता है। जो कभी भी प्रकट हो सकता है। जिंदगी के लिए इंसान जीता है और वही खा जाती है।

6.
सावधान, ब्रिज आइस्ड है
(कमलेश बख्शी)
(जन्म : १९३१)

प्रस्तावना

कमलेश जी आजीवन हिंदुस्तान प्रचार सभा कि सदस्य रही है। इनको इनकी रचनाओं पर सम्मानित पुरस्कार भी मिले हैं। इन्होंने उपन्यास, कहानी संग्रह, यात्रावृत्तांत, लेख संग्रह, अनुवाद किए और रचे हैं। कच्चे-पक्के रास्ते आदि उपन्यास; नया मोड़, कब तक आदि कहानी-संग्रह इनकी है जो संदेशमय है।

इनकी 'सावधान ब्रिज आइस्ड है' कहानी प्रतीकात्मक है जिसमें किसी सोकिया की जिंदगी भी इसी ब्रिज की तरह आइस्ड है।

'सावधान ब्रिज आइस्ड है' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु –

इस कहानी में सोकिया जो अनाथ है वह हमेशा अकेले रहती है और उसे अकेलापन खाता रहता है। वह अपने माँ-बाप के पास भी जाना चाहती है मगर वह नहीं जा पाती वह उनका पता नहीं कर पाती फिर वह अनाथालय से दूर रहकर अकेले अपने पैरों पर खड़ी होकर अच्छी नौकरी पर लग जाती है उसका खुद का घर रहता है। कॉलेज के दौर से ही वह महमूद को प्यार करती थी पर महमूद के एक शर्त के कारण वह उसे छोड़ दूसरा विवाह कर लेता है। पर साथ जार्ज भी उसे चाहता है। महमूद के धोखे के कारण वह पहले से अकेले और अब धोखे से टूट जाती है फिर भी जार्ज उसके साथ रहता है वह जार्ज से खुलकर नहीं रहती इस कारण जार्ज भी एक हक्के से बाहर रहता है मगर जार्ज के

अनुपस्थिति में वह उसे बहुत याद करने लगती है उसकी अनुपस्थिति न सहने के कारण वह उसके लिए पत्र छोड़ जाती है जिसमें वह जार्ज से प्यार करती है लिखी रहती है। और किसी अनजान जगह जाकर सारा धन जार्ज के नाम कर जाती है।

अंत में सोफिया कि लाश उस आइस्ड ब्रिज पर कार में मिलती है। सोफिया मर जाती है।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण) -

इस कहानी में लेखिका ने सोफिया पात्र के जरिए सच्चे प्रेम का संदेश देती है कि प्रेम में कोई शर्त नहीं होती जैसे कि महमूद ने शर्त रखी थी मगर प्रेम नहीं था और सच्चा प्रेम वही जो हर सुखदुख में तुम्हारे साथ हो जैसे कि जार्ज।

हिंदी भाषा में रचित कहानी पाठक के मन को ठंडा कर देती है क्योंकि इसमें सोफिया बचपन से अनाथ रहती है जब उसे प्रेम होता है तो वह भी एक शर्त के कारण टूट जाती है। मगर जार्ज से फिर वह चाहने लगती है मगर उसे कह नहीं पाती। अंत में उसके अनुपस्थिति में वह उसके लिए पत्र लिख छोड़ जाती है।

इस तरह यह कहानी लेखिका ने प्रतीकात्मक बताई है। और सोफिया का अंत में हार जाना अकेलेपन से इस बात का बखूबी वर्णन किया है।

निष्कर्ष: इसमें, सोफिया का अकेलापन, उसकी मृत्यु का कारण बनता है यह जाहिर किया है। अंत में वह जार्ज के अनुपस्थिति के कारण अशांत होकर अनजान जगह जाने से पहले उसे पत्र लिख देती है। सोफिया का अनाथ होना उसके लिए बोझ था। जिसे ढोते-ढोते अंत में वह थक जाती है हार मान लेती है।

महमूद पात्र भी देखा जाए तो वह सच्चा प्रेमी नहीं। जार्ज पात्र ही इस कहानी में सच्चे प्रेम का अर्थ बता रहा है।

सोफिया कि माँ का तेरह वर्ष में उसे गर्भवती कर सोफिया के जन्मते लोक-लाज के भय से उसे हमेशा के लिए अनाथालय छोड़ आती है दुबारा कभी मिलने भी नहीं आती। यह बात उसे अनाथालय के मैडमों द्वारा पता चल जाने पर उसके मन को गहरी चोट पहुँचती है।

८.
चप्पल
(श्री कमलेश्वर)
(जन्म १९३२ - मृत्यु २००७)

प्रस्तावना

कमलेश्वर जी लेखक थे वे पटकथा और आलोचक भी थे। नई कहानी के लेखक रहे। उपन्यास, लघु कहानी, निबंध इनकी शैली रही है। इनकी सबसे प्रसिद्ध फिल्में आँधी, मौसम, छोटी सी बात और रंग बिरंगी है।

इनके साहित्य में नई संवेदना है इन्हीं लघु कथा 'चप्पल' में लेखक ने दार्शनिक विचार प्रस्तुत किया है।

'चप्पल' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु -
इसमें, लेखक अस्पताल में आकर अपने मित्र के बताने पर संध्या को देखने आता है। अस्पताल में मरीजों और उनके परिवारों को चीखता देख लेखक दार्शनिक विचार प्रकट करता है और सभी के लिए प्रार्थना करता है। वह जब एक छोटे बच्चे और उसके पिता को देखता है तब वह बच्चा अपनी चप्पल लिए बड़ी सावधानी रखता है उसी बच्चे को लेखक लीफ्ट से दोबारा आते वक्त देखता है तो उसके दोनों पैर कटे होते हैं। तब लेखक सोचता है कि जब वह उठेगा तो अपने पैर मांगेगा या चप्पल।

समीक्षा (भाषा, चरित्र, चित्रण) -
लेखक दार्शनिक दृष्टिकोण इस कहानी में प्रस्तुत करता है वह अस्पताल में आकर आँसू, खून, माँ के दूध का रंग एक बताकर सभी का दुःख एक सा अस्पताल में है कहता है। यह सच भी है।

वह देखने तो संध्या को आया रहता है मगर संध्या भी एक डॉक्टर रहती है और उसका पति भी वही उसका इलाज करता है। यहाँ वह उदास भी रहता है। इससे लेखक ने एक बात स्पष्ट कर दी है कि यदि ये डॉ. मरीजों का इलाज करते हैं तो दया, उदासी नहीं होती बस उन्हें बचाना है। मगर जब स्वयं पर बात आती है तो उदासी, दया सब आता है। यही दुनिया का रसूल है।

लेखक ने यह भी बताया है कि अगर किसी समस्या का समाधान न मिले तो उसे दार्शनिक विचार सेती समतल बनाया जाता है। भाषा शैली सरल सुगम है कहानी कि साथ में एक संवेदना भी पैदा करती है कि उस बच्चे के होश में आते ही वह बेचारा अपनी नीली हवाई चप्पल मांगेगा या अपने पैर यह प्रश्न अंत में पाठकों पर लेखक छोड़ देते हैं। मैं एक पाठक के नजरिये से कहूँ तो इस पर शायद उस बच्चे के पिता दार्शनिक विचार प्रस्तुत कर अपने बेटे कि निराशा को दूर करेंगे या उसका पिता स्वयं अपने बेटे के पूछने पर टूट जाए ऐसा हो सकता है।

लेखक संध्या की भी हालत देखकर हैरान रह जाता है कि आखिर संध्या भी जिंदगी और मौत से लड़ रही है और मौत से लड़ना कोई आम बात नहीं।

निष्कर्ष: इस कहानी में लेखक ने बहुत दार्शनिक विचार प्रस्तुत किया है। साथ ही डॉक्टरों का मरीजों के और स्वयं के परिवार में इलाज का फर्क बताया है। लेखक ने उस छोटे बच्चे के बाप कि दुःख व्यथा के बारे में भी विचार प्रस्तुत किए हैं। लेखक दार्शनिक

विचारों को प्रकट कर, जीवन-मृत्यु ईश्वर की देन है और मनुष्य भी मगर वह कभी संपन्न नहीं दिया। शायद इसलिए कि ईश्वर रहस्य ही रहे।

९.

वापसी

(डॉ॰ उषा प्रियंवदा)

(जन्म : सन् १९३२)

प्रस्तावना

डॉ॰ उषा जी प्रवासी हिंदी साहित्यकार है। इनके कथा साहित्य में छठे और सातवें दशक के शहरी परिवारों का संवेदनापूर्ण चित्रण मिलता है। उस समय शहरी जीवन में बढ़ती उदासी, अकेलेपन, ऊब आदि का अंकन करने में उन्होंने अत्यंत गहरे यथार्थबोध का परिचय दिया है।

इनकी कितना बड़ा झूठ आदि कहानी संग्रह, पचपन खंभे लाल दिवारें आदि उपन्यास है।

इनकी इन्हीं संवेदनाओं में 'वापसी' कहानी में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व बताया है। व आधुनिकता के इस बदलाव के कारण परिवार में मतभेद बताएं है।

'वापसी' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु -

'वापसी' में गजाधर बाबू स्टेशन मास्टर की नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद वे अपने परिवार के साथ रहने के इच्छा से घर लौटते हैं। रेल्वे क्वार्टर में रहकर नौकरी करते हुए गजाधर बाबू को पैंतीस सालों तक परिवार से दूर रहना पड़ता था। ताकि उनका परिवार शहर में सुख सुविधाओं के बीच रह सके। शहर में रहने से उन्हें किसी प्रकार की कमी का एहसास न होने पाए। जब वे घर लौटे तो उन्होंने पाया कि परिवार के लोग अपने-अपने ढंग से जी रहे हैं। बेटा घर का मालिक बना हुआ है। बेटी और बहू को घर के काम नहीं करने पड़ते। पत्नी रसोई की जिम्मेदारी अपने

ऊपर ले लीहैं। घर के अन्य कामों के लिए नौकर रखा गया है जिसकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। जिस परिवार के लिए सालों तक दूर रहे वे ही आज बिल्कुल भी लगाव नहीं रखते केवल पैसा कमाने के साधन मात्र हैं। फिर परिवार के बीच गजाधर बाबू का हस्तक्षेप किसी को स्वीकार नहीं होती। यह सब देख वे फिर 'वापसी' के लिए कहते हैं और उनके वापसी कि बात सुनते ही उनका बेटा तैयारी शुरू कर देता है जाने की। बड़े दुःख मन से वे वापस चले जाते हैं।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण)-

लेखिका कि यह कहानी आधुनिक परिवार और वृद्ध बूढ़े व्यक्ति के विचारों और स्वभाव, आदत और व्यवहार में द्वंद्वमय है। कहानी कि भाषा शैली हिंदी है जिसमें शब्दों के अर्थों को समझने में कोई भी कठिनाई नहीं हो रही है।

इस कहानी में, परिवार में गजाधर बाबू की वापसी आधुनिक परिवार में टूटते पारिवारीक संबंधों के साथ परिवार के बूढ़े व्यक्ति की लाचारी की झांकी प्रस्तुत करती है। बाबू के हर फैसले का विरोध करते हैं उनके बच्चे। यहां तक कि बाबू ने जिस परिवार के लिए दूर रहकर काम किया आज उसी परिवार के बीच उसके लिए कोई जगह ही नहीं रह गई है। उसकी पत्नी को भी पति से कोई ज्यादा लगाव नहीं रहा बस दो वक्त का खाना देने से अब वह पत्नीधर्म समझती है।

गजाधर बाबू अपनों के ही बीच पराया सा अनुभव करने लगते हैं यह बात उनको असहनीय लगती है और अंत में वे निराश होकर दूसरी नौकरी पर निकल पड़ते हैं।

निष्कर्ष: 'वापसी' कहानी में लेखिका ने आधुनिक युग के वास्तविक यथार्थ को प्रस्तुत किया है। कहानी यह दर्शाती है कि आधुनिक पीढ़ी के लिए परिवार में पुराने मूल्यों की तरह पिता का भी कोई स्थान नहीं रह गया है। वह केवल धनोपार्जन के निमित्त पात्र मात्र बन गया है। परेशानी यह है कि वह जीवन यात्रा के अतीत के पन्नों को पुनः वैसे ही जीना चाहते हैं किंतु संभव नहीं है।

इस प्रकार यह वर्तमान युग में बिखरते मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी तथा मूल्यों के विघटन की समस्या पर प्रकाश डालती है।

१०. पूरब और पश्चिम
(दण्डपाणि जयकान्तन)

(जन्म : सन् १९३४)

प्रस्तावना

जयकान्तनजी कार्यकर्ता, (भारतीय) लेखक, पत्रकार, वक्ता, फिल्म निर्माता, आलोचक थे। अपने छः दशकों के करियर में उन्होंने दो आत्मकथाओं के अलावा लगभग ४० उपन्यास, २०० लघु कथाएँ लिखीं। साहित्य के बाहर दो फिल्में बनाई। इसके अलावा उनके चार अन्य उपन्यासों को अन्य लोगों द्वारा फिल्मों में रूपांतरित किया गया।

इनके साहित्यिक कला के कारण इन्हें सम्मान में कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। दण्डपाणि जी कि अधिकांश रचनाएँ रिक्शा चालक, वेश्याओं और कूड़ा बीनने वालों जैसे निम्न वर्ग के लोगों के जीवन के ईद-गिर्द घूमती है।

इनकी लघुकथा जो डॉ. के. ए. जमुना जी ने हिंदी में अनुवाद किए हैं। इनकी 'पूरब और पश्चिम' कहानी देखी जाए तो इसमें एक स्त्री और माँ, साँसु माँ, बहु, पत्नी का रूप एक बताया गया है फिर चाहे वह पूरब से हो या पश्चिम से।

'पूरब और पश्चिम' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु-

'पूरब और पश्चिम' कहानी में, एक परिवार जो भारत में रहता है और उनका परिवार रूढ़िवादी है। ऐसे परिवार में अल्मु आच्चि जो अपने दो बड़े बच्चों और बेटी को पढ़ा-लिखाकर अच्छे पद पर पहुँचाया माता-पिता ने। मगर उनके एक छोटे बेटे जो डॉक्टर था उसने अपने परिवार के खिलाफ जाकर एक अंग्रेज सेक्रेटरी अर्थात असिसटेंट से विवाह कर लिया।

उसने परिवार को सुनाया पर कोई नहीं माना। जिसके कारण उसके परिवार में माँ को छोड़कर सबने उसे त्याग दिया। जब माँ अधेड़ उम्र में गर्भवती हुई तो परिवार में माँ को लोग गलत बोल रहे थे कि इस उम्र में माँ बनने चली है वो शर्म नहीं आई। यह बात रवि जो डॉक्टर है वह अपने माँ को लेने चला आया क्योंकि वो रूढ़िवादी सोच का नहीं था उसके लिए यह खुशी कि बात थी सेलिना के लिए भी। उसकी माँ को भी गर्भवती होना गलत लगा अधेड़ उम्र में इसलिए वह अपनी बहु और बेटे से रवि और सेलिना से लज्जा रही थी। एक तरफ उसके मन में डर भी था कि सेलिना उसके रीति-रिवाजों को नहीं अपनाई और उसे गंदा या उसे घृणा तो नहीं करेगी? तब वह भगवान पर छोड़ देती है। जब वह पहुँचती है अपने रवि के घर तो सेलिना गले लगाकर उनका स्वागत करती है अपने तरीके से। जो माँ को अजीब लगता है। पर वह माँ कि खुशी के लिए रवि से पूछती है कि स्वागत कैसे करूँ मैं? रवि ने कहा हमारे यहाँ सासु माँ बहु का स्वागत करती है। फिर तैयारी करके सेलिना माँ के पास गई और माँ खुशी के आँसू भर आँखों में उसका स्वागत करने लगी। तब रवि ने सोचा यह दृश्य देखकर कि चाहे पूरब हो या पश्चिम स्त्रीत्व एवं मातृत्व इन भेदों से परे है और यही परम सत्य उसे लग रहा था।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण) -

यह कहानी लेखक ने स्त्रीत्व एवं मातृत्व पर लिखी है जो हर जगह दुनिया में एक सी है फिर वह किसी भी दिशा या दूर देश से हो। यह कहानी हिंदी भाषा में रूपांतरित कि गई है।

इसमें रूढ़ीवादी अर्थात हमारे भारत को जो रूढ़ीवादिता है वह नया भारत अर्थात विकास में रोक लाती है जैसे कि अल्मु अच्ची का परिवार उसके बेटे रवि को अंग्रेजन से विवाह

करने के कारण त्याग देते हैं।

एक तरफ सेलिना है जो लेखक ने इस पात्र के जरिए भारत की सच्चाई बताई है कि भारत आयु में यूरोप से बड़ा है आय लोग अर्थात भारतवासी पुराने व्यक्ति हैं। भारत की सभ्यता और संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है। यही भारत के लोगों के शक्ति और शक्ति-हीनता का भी कारण है।

स्त्रीत्व और मातृत्व कि भी बात लेखक ने सेलिना और अलिमु अच्चि पात्र के जरिए बताया है कि माँ तो हर जगह कहीं भी जाएँ वो माँ ही रहती है और एक बहू जो किसी भी देश से हो मगर उसे अपनी साँसु माँ के प्रति एक अलग सी खुशी होती है।

निष्कर्ष: इस कहानी में लेखक ने रूढ़ीवादी भारत की शक्ति तो शक्तिहीनता का कारण बताया है। और इन्हीं में भारत का विकास भी अटका रहता है। सेलिना और अलिमु अच्चि के सास-बहु अर्थात स्त्रीत्व एवं मातृत्व को लेकर परम सत्य ही है चाहे वह पूरब से हो या पश्चिम से। क्योंकि माँ को कहीं भी रखो उसे हमेशा अपने बच्चों कि चिंता रहती है।

११.
आस्था के आयाम
(मालती जोशी)

(जन्म: सन १९३४)

प्रस्तावना

मालती जोशी जी एक भारतीय उपन्यासकार, निबंधकार और लेखिका हैं जो मुख्य रूप से हिंदी और मराठी भाषाओं में लिखते हैं। उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। इनके काम का उर्दू, बंगाली, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, मलयालम और कन्नड़ में अनुवाद किया गया है। उनकी रचनाओं का अंग्रेजी, रूसी और जापानी में अनुवाद किया गया है। उन्होंने अपने पात्रों को अपने परिवार और सामाजिक दायरे से आकर्षित किया, भारत में मध्यम वर्गीय परिवारों के अनुभव को बताना पसंद किया।

इन्हीं अनुभवों को इनकी 'आस्था के आयाम' पुस्तकों में हमें देखने मिलती है। जिसमें एक स्त्री जो कठिनाइयों में भी धैर्य व साहस के साथ अपने बेटी को भी पालती है। और बेटी अपनी माँ के आस्था के आयाम पर पानी नहीं फेरना चाहती इसलिए वो माँ के सम्मान के लिए खुद को समर्पित करती है।

'आस्था के आयाम' कहानी कि समीक्षा

कथावस्तु -

लेखिका कि इस कहानी में कौमुदी कि माँ जिसका पति शुरुआत में कुछ साल तक प्यार किया एक बेटी हुई। फिर कुछ सालों बाद उसके पति ने ऐशो-अय्याश में शराब पीने लगा बाहर वैश्याओं को बुलाने लग गया घर पर पहले वैश्याओं से मिलने बाहर जाता था। पत्नी के मना करने पर उसने बेटी-माँ को शराब के नशे में आधी रात को

घर से निकाल दिया। उन्हें नौकरों द्वारा मदत मिली उस रात। गाड़ी पकड़े फिर वो अपने मायके आकर रहने लगी। उस माँ के भाई ने, कौमुदी के मामा ने दोनों को सहारा दिया। कौमुदी के लिए माँ ने अपनी उम्र, ख्वाहिश और बलि, त्याग देकर उसे पाली पढ़ाई और उसे उसके पैरों तक खड़ा कि स्वयं भी खड़ी हुई। जब कौमुदी के रिश्ते कि बात आती है तो धीरू की माँ, धीरू का चाचा, धीरू की चाची, धीरू का पिता सबकी यही माँग रहती है कि कौमुदी की शादी अगर धीरू से हो तो उसके पिता का होना जरूरी है वरना लोग क्या कहेंगे। मगर कौमुदी की माँ शुरूआत में नहीं मानती पर अपनी बेटी के लिए बाद में वह मान जाती है। पर कौमुदी को यह मंजूर नहीं आता। वह अकेले धीरू की माँ से मिलकर अपनी माँ के इतने सालों के संघर्ष के बारे में बताती है धीरू के माँ-बाप को सिर्फ इतना ही पता है कि कौमुदी के माँ-बाप का तलाक हो चुका था। आगे कि तलाक के कारण की कहानी कौमुदी ने बतायी तो उसने अंत में यही कहा कि अगर मैं उसके पिता के बिना विवाह नहीं होगा तो वह विवाह नहीं करेगी क्योंकि ऐसा करने से उसके माँ के संघर्षों पर पानी फिर जायेगा। वह ऐसा नहीं चाहती वह अपने माँ के आत्मसम्मान को ठेस नहीं पहुँचाना जाती। धीरू उसके जाते वक्त वहाँ आ जाता है और वह धीरू को अनदेखा करके चली जाती है। उसकी माँ धीरू से कहती है कि वह कौमुदी को सह पाएगा। वह कहता है उसके पिता कि तरह तो नहीं बनना। मैं उसका साथी सक्षम रूप में बनूँगा।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण) —

लेखिका इस कहानी में शब्द अर्थ सहित यह कहानी हिंदी भाषी, पाठक जब पढ़े तो क्रोध आ जाए साथ में कई सवाल उठते हैं कि जो कौमुदी के पिता ने कौमुदी की पत्नी के साथ ऐसा व्यवहार क्यों रखता है ऐसा भी

क्या नशा चढ़ा जो उसे परिवार की फिक्र ही नहीं रही। साथ ही रासलीला उसकी आखिर उसकी दृष्टिकोण हवस में थी। इसलिए तो वह अपनी पत्नी-बेटी को घर से बाहर निकाल देता है। वह भी आधी रात को उसके बाद वह उनको ढूंढता भी नहीं। कैसा निर्लज्ज पुरुष है!

कौमुदी के माँ, कहानी में मुख्य भूमिका निभाती है क्योंकि यह कहानी 'आस्था के आयाम' कौमुदी के माँ के संघर्ष और कई वर्षों के तपस्या की कहानी है। उसके ही संघर्ष का परिणाम उसका स्वयं पैरों पर खड़े होकर अपनी बेटी को भी खड़ा करवाना। उसके इसी परिणाम को उसकी बेटी कौमुदी, जायें या कोई किमत नहीं लगाना चाहती थी। इसलिए वह स्वयं के रिश्ते से अंत में इंकार कर देती है।

धीरू पात्र को भी देखा जाए तो वह पुरुष की मर्यादा तक रहता है पहले तो यह कि वह कौमुदी से प्यार करता है सच्चा। उसे कौमुदी के परिवार के व्यवहार और घटना जो हो चुकी है उसे लेकर वह कौमुदी को गलत नहीं समझता है। और वह कौमुदी से रिश्ता जोड़ने से पहले उसके पिता कि गलती वह न दोहराए इस बात पर वह विशेष ध्यान देता है।

धीरू के चाचा-चाची कि सोच इस कहानी में रूढ़ीवादी लाने की कोशिश करती है मगर धीरू इनकी यह कोशिश नाकामयाब करता है कि विवाह में कौमुदी के पिता के नहीं आने से पहाड़ नहीं टूट पड़ेगा।

धीरू के माता-पिता की भी यही माँग रहती है पर उनकी सोच में आधुनिकता छलकती है। जब कौमुदी की बातें सुनकर उसे डाँटती नहीं बल्कि उसे समझाती है धीरू की माँ।

धीरू के पिता कि बात करें तो वह कौमुदी के पिता के विपरीत है वह एक अच्छा पिता, अच्छा पति है। वह धीरू की माँ को खुश ही रखता है जो भी कोई काम हो तो या किसी भी फैसले कि बात हो तो आपस्त्री से होते हैं।

कौमुदी के मामा कि बात कि जाए तो वह दुःख भरे मन में रहता है कि उसकी बहन की जिंदगी नरक सी बन जाती है उसे नरक से हटाने में उसका सहयोग पहले रहता है कि जब पहली बार आधी-रात को वह भगाई गई तो उसके मामा ने ही उन लोगों को पनाह दी। सिर्फ यही नहीं उन्हें उनके मंजिल तक पहुँचाने में भी मामा का बड़ा सहयोग रहा। तभी तो कौमुदी धीरू के माँ से कहती है कि मामा ही सब कुछ है और कौमुदी की माँ भी यही कहती है कि कन्यादान के लिए उसके पिता कि क्या जरूरत यह तो मेरा भाई भी कर सकता है।

निष्कर्ष: लेखिका कि यह कहानी स्त्री के संघर्ष की गाथा है साथ ही कुछ रूढ़िवादी तो कुछ आधुनिकता में मुड़ती है। इस कहानी में यह सीख जरूर मिलती है कि जरूरी नहीं कि एक स्त्री किसी का गुलाम बनकर रहे अगर वह ऐसा करती है तो उसके इस आस्था का आयाम उसके लिए तकलीफदायक होगा अगर वह इसके विपरीत रहती है तो उसके इस आस्था के आयाम उसके आत्मसम्मान को कभी चोट नहीं लगने देगा।

जैसे कि इस कहानी के अंत में कौमुदी सिर्फ अपने माँ के संघर्षों को, उसके आत्मसम्मान को ठेस न पहुँचे और ना वो ऐसी रूढ़ीवादी सोच में रहे गुलाम बनकर। इसलिए वह इंकार कर देती है।

१२.
सजा
(हिमांशु जोशी)

(जन्म : सन् १९३५)
(मृत्यु : सन् २०१८)

प्रस्तावना

जोशी जी हिंदी के ख्यातिलब्ध कहानीकार, उपन्यासकार और पत्रकार थे। साथ-साथ दूरदर्शन और आकाशवाणी के लिए भी कार्य किया। उन्होंने हिंदी फिल्मों के लिए भी लेखन कार्य किया।

उनके पिता 'पूर्णानन्द जोशी' स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उनका संघर्ष जोशी के लिए प्रेरणा बना, जिसका असर उनके लेखन पर भी पड़ा।

जोशी जीने, अपनी साहित्यिक कला के चलते उन्हें अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। उपन्यास 'सु-राज' पर आधारित फिल्म बनी। 'तुम्हारे लिए' पर आधारित दूरदर्शन धारावाहिक। शरत चन्द्र के उपन्यास 'चरित्रहीन' पर आधारित रेडियो धारावाहिक निर्देशन। अनेक सरकारी, अर्द्धसरकारी समितियों में हिन्दी सलाहकार रहे।

जोशी कि साहित्यिक कला का एक छोटा अंश हमें इनकी लघु-कथा 'सजा' में देखने मिलती हैं इस कहानी में अचंभे कि बात यह है कि 'सजा' जो जुल्म करता है वो तो अपनी सजा भुगत जाता है मगर जिसपर जुल्म करता है उसकी सहायता उस जुल्म करनेवाले के परिवार के लिए किसी 'सजा' से कम नहीं होता।

'सजा' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु -

'सजा' कहानी में भावना जिसकी माँ बचपन में ही चल बसी होती है। उसे सिक्को मौसी संभालती है साथ में उसकी बहन श्रुति को भी। उसका विवाह हो जाता है भावना का जिससे विवाह होता

है उसका नाम रतन रहता है जो विवाह के बाद किसी औरत के प्यार में पागल होकर भावना को यंत्रणाएँ दिं। फिर उसे एक दिन घर से भी बाहर निकाल दिया था। भावना अब अपने मायके ही रहकर जॉब करने लगी थी नौ साल हो गए थे उसे इस बुरी याद को लेकर।

नौ साल बाद उसके घर पत्र आया जिसमें रतन की मौत हो गई लिखा था। वह पत्र पढ़ते ही शोक में रही फिर वह रतन की घर चली गयी। वहाँ देखती है तो वह औरत और उसके दो बच्चे रतन की लाश पर रो रहें होते हैं रतन की माँ किसी से कह रही थी कि रतन की बीमारी में घर के सारे रुपए चले गए यहाँ तक कि बच्चों का विद्यालय तक छूट गया उसके इलाज में। फिर वह भावना को देखी। भावना इज्जत से पैर छूकर उनको कहा कि आप ही हो जो मेरी माँ के गुजर जाने पर दोबारा आपसे ही माँ का प्यार मिला था। रतन की माँ को कुछ रुपए देती है और कहती है कि बच्चों को विद्यालय अब भेजो और खर्च के लिए रखो। उससे जितना हो सकेगा वह करेगी। रतन की माँ कहती है भावना से कि रतन तो अपने किए कि सजा भुगत गया मगर भावना के इस विशाल हृदय उसे सजा लगा रहे थें वह भावना से कहती है कि भावना इतनी बड़ी सजा न दें उन्हें।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण)-

लेखक की इस कहानी में भावना मुख्य पात्र है जिसका हृदय बहुत विशाल है और वह उसके बच्चों के लिए भी सोचती है जिसके कारण रतन उसे घर से बाहर तक निकाल देता है। सच में भावना जैसी स्त्री एक महानता की मूर्ति दिखाई देती है।

इस कहानी में यह सवाल जरूर खड़ा होता है कि रतन-भावना का विवाह होता है अगर इसमें रतन की मंजूरी नहीं होती है तो

उसे वह कह भी सकता था इससे उसे यंत्रणाएँ देने कि क्या जरूरत थी वह खुद निकल जाती थी रतन की जिंदगी से। जिससे उसे भी चोट नहीं पहुँचती। साथ ही कहानी में रतन की बीमारी कौन-सी थी यह पता नहीं मगर बीमारी को खत्म करने में घर के सारे खर्चे लग जाना फिर भी बीमारी खत्म न होना अंत में उसकी मौत हो जाना। क्या उसे कोई बड़ी बीमारी थी? यह सवाल उठता है मगर यह तो कहानी को पढ़कर अपने-तौर में समझ ही आ जाता है।

इस कहानी में श्रुति, भावना कि बहन अपनी दीदी की जिंदगी सोच-सोचकर फूट-फूटकर रोने लगती है और उसे रतन की मौत की खुशी होती है मन ही मन में कि रतन मर गया। यहाँ उसकी खुशी भी ठीक है तो नहीं भी। क्योंकि उसने उसकी दीदी को यंत्रणाएँ दी थी जो असहनीय थी।

सिक्को मौसी भी इस कहानी में जिस तरह भावना का हृदय-विशाल है उसी तरह उसकी मौसी में नहीं दिखता क्योंकि अगर भावना कि माँ गुजर गई तो मौसी में उसे माँ दिखनी चाहिए थी मगर नहीं दिखती इस कहानी में यह जिक्र तो नहीं पर कहानी को पढ़कर ऐसा ही अनुभव होता है कि मौसी का व्यवहार भावना, श्रुति के प्रति कठोर रहा हो। तभी भावना रतन की माँ से कहती है कि उसके माँ के जाने के बाद रतन की माँ में उसे माँ दिखी।

रतन अपने किए कि सजा तो भुगता ही मगर उसके कारण भावना और उसके घर वालों की भी जिंदगी में उसने यंत्रणा भर दी। जिसमें से भावना संभल गई और रतन के घरवाले को भी उसके जाने के बाद संभालती है उन्हें खर्चे देती है।

कहानी हिंदी भाषी सरल सुगम है पाठक इस कहानी को पढ़े तो उसे इस कहानी का अंश उसके आस-पास भी दिखाई दे।

साथ ही सावधानी भी देता है कि विवाह के रिश्ते में बंधने से पहले और बाद में भी मंजूरी जानलेना जरूरी है नहीं तो यंत्रणाएँ ही मिलती है।

रतन अच्छा पात्र नहीं है इस कहानी में पर उसकी सौत इस कहानी में रतन पात्र के प्रति भाव, शोक भाव जरूर दिखाती है जिससे उसकी बुराई पर थोड़ा कम ध्यान जाता है।

सजा कि बात करें तो रतन ने भावना और उसे जीते-जी यंत्रणाएँ दी थी। रतन के जाने के बाद वह औरत और उसके दो-बच्चे उसकी माँ को यंत्रणाएँ दे गया। और अंत में भावना का उनकी मदत करना उस परिवार के लिए सजा ही रहता है। अगर किसी के साथ बुरा करो मगर वह अच्छा ही करें तो यह जिंदगी कि सबसे बड़ी सजा ही होती है।

भावना के पिता का भी दुःख नजर आता है इस कहानी में कि उसके पिता कहा करते थे कि हमारी भावना अच्छे घर गई है। खुश रहेगी फिर कुछ महीनों बाद भावना कि ऐसी हालत से वह दुःखी ही होते होंगे। पिता-पुत्री का भी मर्मस्पर्शी संबंध झलकता है इस कहानी में।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहानी पत्नी व सौतन की कहानी नजर आती है। जिसमें सजा पत्नी को नहीं बल्कि उस रतन और सौतन को ही मिलती है। भावना इस कहानी कि स्त्री संघर्ष में आती है। रतन चरित्रहीन नजर आता है। सौतन वह भी चरित्रहीन नजर आती है क्योंकि वह भी जानती है कि रतन शादी-शुदा रहता है फिर भी उसकी जिंदगी में भावना को हटाकर उसकी जगह ले लेती है।

१३.
मुआवजा
(डॉ. चित्रा मुद्गल)

(जन्म: सन् १९४४)

प्रस्तावना

चित्रा मुद्गल हिंदी की वरिष्ठ कथालेखिका हैं। उन्हें हिंदी भाषा का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया है। उनके उपन्यास 'आवां' पर उन्हें वर्ष २००३ में 'व्यास सम्मान' मिला था। उनका जीवन किसी रोमांचक प्रेम-कथा से कम नहीं है। चित्राजी ने तो शुरु से ही कठिन मार्ग के विकल्प को अपनाया। चित्रा ने हर चुनौती को हँसते-हँसते स्वीकार किया।

जिनावर, बेईमान आदि कहानियाँ इनकी हैं। आवां उपन्यास रहा है। चित्रा जी कि 'मुआवजा' कहानी देखी जाए तो उसमें एक स्त्री जो आजादी से अपनी मंजिल तो पा लेती है पर उसके बाद वही आजादी उसकी सजा बन जाती है अंत में उसके मृत्यु का शोक कम उसके मुआवजे के लिए बहस होती है।

'मुआवजा' कहानी कि समीक्षा

कथावस्तु -

इस कहानी में, शैलू, पलाश और मधु इन दोनों भाई-बहन की माँ रहती है। और पिता। सुमित शैलू का पति है।

शैलू एक ऐसी लड़की है जो आजादी से रही है। वह एयर इंडिया में काम करती है एयर होस्टेज का। सुमित और शैलू एक-दूसरे से प्यार करते थे दोनों ने परिवार की रजामंदि से शादी तो कर ली। पर सुमित कि यह शर्त थी कि वह मॉडलिंग छोड़ दे। इसपर शैलू के माता-पिता कहने लगे कि पता है कि वह मॉडलिंग करती है यह सब जानके भी शादी सुमित ने ही

कि थी। फिर अब वो क्यों छोड़े। ऐसा न करने पर उसके माता-पिता कि दखलअंदाजी के कारण सुमित शीलू को यंत्रणाएं देने लगा था। फिर वह अपने घर चली आई। कुछ साल बितने बाद अचानक एयरइंडियन में कुछ आतंकवाद घुस आते हैं जिसमें शीलू सबकी जान बचाने के बाद अंत में आतंकवादी द्वारा मार दि जाती है।

उसके इस मृत्यु से उसके माता-पिता शोक में रहते हैं। मगर वहीं शीलू के मृत्यु पर सरकार ने मुआवजा दे रखा है जिसे अब तक उसके माता-पिता नहीं लिया क्योंकि उन्हें शीलू ही प्यारी थी। उसके जाने के बाद वह मुआवजे का क्या करेंगे। तो वहीं सुमित जो कभी उसको पूछा तक नहीं वह उसके पति होने के नाते उसके मुआवजा को लेने आया जिसे उसके माँ-बाप झड़के उठते हैं। फिर अंत में फैसला लेते हैं कि मुआवजा शीलू का वे लेके रहेंगे और उसे अनाथालय में देंगे।

समीक्षा (भाषा, चरित्र-चित्रण) —

लेखिका कि इस कहानी में, हिंदी भाषी कहानी पाठक पढ़े तो गुस्सा और शीलू के प्रति शोक भाव, हिम्मत आदि उत्पन्न होते हैं। कहने का सारांश यही है कि शीलू आजादी तरीके से जीती है मगर वही आजादी से सुमित को समस्या होने लगती है। फिर भी वह हार नहीं मानती। सुमित के यंत्रणाओं के बाद भी वह आजादी से ही रहती है। मगर अफसोस वह आतंकवादियों के चंगुल से सवारी हुए रात्री को आजादी देते हुए शहीद हुई। यह बहुत खुशी वाली बात है कि वह मृत्यु शहीद हुई वरना हर किसी को इतनी सम्मानित पद नहीं मिलता।

शीलू के माता-पिता उसे आजादी से परवरिश किए उससे बहुत प्यार भी करते थे। इसलिए शीलू के शहीद होने का उन्हें गम ज्यादा खुशी कम थी। खुशी इसलिए भी

कि वह लोगों को बचाते-बचाते मरी। दुख इस बात का था कि अब वह इस दुनिया में नहीं रही।

पलाश और ज्योति दोनों पति-पत्नी है। दोनों में प्रेम है। दोनों एक-दूसरे को समझते हैं तो वहीं पलाश की बहन शैलू का पति उसे यंत्रणाएँ देता है। पलाश का ज्यादा जिक्र कहानी में तो है नहीं पर कहीं-कहीं वह मुझे इस कहानी में शैलू के प्रति भाव कम नजर आता है। ज्योति का कोई खास जिक्र नहीं है इस कहानी में।

मधु शैलू की माँ है जो शैलू के मुआवजे के प्रति दिलचस्पी ही नहीं रखती। मगर सुमित के मांगने पर वह मुआवजा लेकर अनाथालय देना चाहती है क्योंकि सुमित लालची है। वह अपनी बेटी को सुमित के हाथों सौंपकर बहुत पछताती है मगर सुमित को वह मुआवजा देने से इंकार कर देती है। कि मुआवजा तो अनाथालय ही जाएगा।

मधु का पति, शैलू का पिता वह भी एक अच्छा पिता और एक अच्छा पति है जिसने शैलू को इस मुकाम तक पहुँचा दिया था कि जिससे शैलू को सब कुछ मिल सके और हुआ भी यही।

शैलू का पति उसका चरित्र इस कहानी में पति के नजरिए से अच्छा नहीं है। वह शैलू से प्रेम करके विवाह तो कर लेता है मगर वह उसकी आजादी उससे छिनना चाहता था। जो शैलू ने होने नहीं दिया।

शैलू बहुत ही बहादुर स्त्री थी। इसलिए तो वह अंत में शहीद हो जाती है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहानी स्त्री संघर्ष, नैतिक शिक्षा वि.

है। जिसमें शैलू संघर्ष करते-करते अंत में आतंकवादियों द्वारा मारी जाती है। नैतिक मूल्य इसलिए कि उसके मुआवजे को मधु, शैलू की माँ अनाथालय में दान करना चाहती है। सुमित जैसे लालची को नहीं।

निर्वासित
(डॉ. सूर्यबाला)

(जन्म: सन् १९४४)

प्रस्तावना

साहित्यिक रचना संसार का सुपरिचित नाम है सूर्यबाला। इनके आज तक १५० से ज्यादा उपन्यास - कहानियाँ और व्यंग्य आदि प्रकाशित हो चुके हैं। सृजन की शृंखला का प्रथम पुष्प 'मेरे सान्धे पत्र' (उपन्यास) जो साहित्य के सुधि पाठकों में काफी चर्चित रहा। इनकी अधिसंख्य कृतियाँ कोमल एवं नाजुक अनुभूतियों को निगलने वाली व्यावसायिकता पर चिंता प्रकट करती हैं। जीवन की विविध परिस्थितियों को परखने की कथा के लिए लेखिका के पास गांधीवादी दृष्टि है।

समाजगत, सकारात्मक परिवर्तन तथा जीवन मूल्यों की श्रेष्ठता हेतु विरोध और विद्रोह के स्थान पर विवेक को महत्व देती है। लेखिका के मतानुसार तेजी से बदल रहे समय में नारी अस्मिता एक चुनौती भरा सवाल है, लेकिन उससे भी बड़ी चुनौती यह है कि विश्व को बचा ले जायें। प्रकृति और परंपराओं से मिले मूल्यों को अगर खारिज कर दिया तो खुद ही खोखले हो जायेंगे।

(कथावस्तु)

'निर्वासित' कहानी कि समीक्षा।

कथावस्तु -

जेठ की तपती दोपहरी में चलने वाली लू का कमरे में आने से रोकने के लिए जैसे ही राजन की माँ ने खिड़की का शीशा बंद किया तो वह उस समय के ख्यालों में डूब गई, जब उनके दोनों बेटे राजेन और रनधीर छोटे थे। उन दोनों को संभालने और घर का काम करने में जेठ की इतनी बड़ी दोपहर का भी उन्हें पता नहीं लगता था। उन्हें जरा भी फुरसत नहीं मिलती थी। अब यह दोपहर काटने में ही नहीं आती है। उन्होंने धीरे-धीरे

बिना आवाज किए अपने कुछ काम निपटाए और बैठक में पहुँच गई जहाँ राजेन के बाबूजी किताब पढ़ते-पढ़ते कुर्सी पर ही सो गए थे। उन्होंने आराम से उनका चश्मा और किताब हटाई किंतु वे जान गए।

उनसे चाय को पूछकर वह चुपचाप रसोई में चाय बनाने पहुँच गई, किंतु हाथ से तेल की बोतल फिसलकर गिर जाने से उनके बहू-बेटे, राजेन और रीमा की नींद खुल गई। माँ के इस प्रकार रसोई में चाय बनाने पर रीमा ने उन पर व्यंग्य कसा। उसके इस प्रकार अपने प्रेम और स्नेह पर व्यंग्य कसे जाने से आहत वे दोनों अपने-अपने काम में व्यस्त हो गए। राजेन की माँ फिर पुराने दिनों के बारे में सोचने लगी जब रिटायर होने के बाद डेढ़ साल तक पैसे भेजने के बाद एक दिन राजेन ने उन्हें अपने पास रहने के लिए बुला लिया। यहाँ आकर वे दोनों पहले तो कभी-कभी अधिकारपूर्वक राजेन को बुला लेते थे किंतु धीरे-धीरे वे शांत होते गए।

उनके द्वारा किए जानेवाले कार्यों और पूजा-पाठ पर बेटे-बहू ने बड़े मीठे स्वरों में रोक लगा दी। इतना ही नहीं उनके मिलने, साथ बैठने, बातें करने पर भी वे मजाक उड़ाते। इसी बीच उनका छोटा बेटा रघुवीर भी वहाँ आ गया। वह बहुत ही चुलबुले स्वभाव का था। वह कुछ दिन वहीं रहा। सब साथ बातें करते, हँसते। सब ठीक चल रहा था। किंतु एक दिन अचानक राजेन के बाबूजी ने माँजी से कहा कि वे छोटे बेटे के साथ रहने जा रहे हैं। इस बात को सुनकर माँजी पर तो जैसे पहाड़ टूट पड़ा। बाबूजी भी असह्य दर्द को चुपचाप झेल रहे थे, किंतु उनकी आँखें सब कुछ कह रही थीं। इस प्रकार अपना बाँटा जाना किसी अपराध की सजा के जैसा लगा।

समीक्षा – (पात्र संयोजन, संवाद गठन, भाषा शैली, देशकाल और वातावरण) – (शीर्षक) –

लेखिका सूर्यबाला द्वारा लिखित 'निर्वासित' एक मार्मिक दुःखांत कहानी है। इस कहानी की कथावस्तु भावप्रधान कथावस्तु है, जिसमें बुजुर्ग दंपत्ति की भावनाओं का बहुत ही मार्मिक ढंग से वर्णन किया गया है। कहानी संक्षिप्त, सरल, सरस, सुगठित और प्रभावोत्पादक है। यह पाठक पर गहरा प्रभाव डालती है और साथ ही उन्हें निर्वासित होने के कष्ट से भी परिचित कराती है।

शीर्षक-

कहानी का शीर्षक कथानक के अनुरूप एवं उसके संपूर्ण भाव एवं उद्देश्य को स्पष्ट करने में सक्षम है। इस कहानी के सभी भाव उस बुजुर्ग दंपत्ति निर्वासन के उपजे कष्ट और दुःखों पर आधारित हैं।

पात्र संयोजन-

कहानी के मुख्य पात्र भी बुजुर्ग दंपत्ति और उनके पुत्र, पुत्रवधु हैं। पौत्री, पड़ोसी व जमना आदि गौण पात्र हैं। कहानी मुख्यतः वृद्ध-दंपत्ति और बड़े पुत्र व पुत्रवधू के इर्दगिर्द घूमती है।

संवाद गठन-

कहानी के संवाद भी छोटे और पात्रानुकूल हैं। सूर्यबाला जी कि संवाद योजना मार्मिक, गंभीर और सारगर्भित है।

जैसे -

- सुनो मैं जा रहा हूँ छोटे के साथ
- कब?
- कल।
- क्यों?
- कुछ नहीं, यों ही ... का की दिन हो गए यहाँ रहते। थोड़ा घूम फिर आना चाहिए।
- मुझे भी तो यहाँ रहते .....
- मैं आ जाऊँगा, तब तुम जाओगी।

भाषा - शैली -

लेखिका सूर्यबाला ने परिस्थिति, भाव और प्रसंगानुसार भाषा शैली का प्रयोग किया है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने व्यंग्य और भावप्रधान शैली का प्रयोग किया है। जिससे भाषा कहीं चुटीली तो कहीं बहुत अधिक मार्मिक बन पड़ी है। साथ ही संवादों की योजना ने कथा को नाटकीयता भी प्रदान की है।

देशकाल और वातावरण -

गाँव के सामान्य जीवन से शहरी और आधुनिक जीवन शैली और उनके प्रभावों का सजीव वर्णन है। इस कहानी में निर्वासन से उपजे दुःख से पाठकों को अवगत कराया गया है। इस उद्देश्य से लेखिका ने परिस्थितियों का विशेष संयोजन किया है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः प्रस्तुत कहानी में वृद्ध दंपत्ति द्वारा अपनी इच्छाओं को दबाना और पुत्र व पुत्रवधु के अनुरूप खुद को ढालना और अलग रहने के दुःखों और कष्टों को लेखिका ने बखूबी दर्शाया है। इस कहानी के माध्यम से अपने बड़े-बुजुर्गों की पीड़ा को समझने और उसे आत्मीय व्यवहार रखने तथा अपना सुख-दुःख साझा करने करने की आयु में अलग न करने की सीख भी छिपी हुई है।

इस प्रकार कहानी कथ्य और शिल्प में बेजोड़ है, भाषा सहज सरल तथा भाव सम्प्रेषण के अनुकूल है। कहानी का अंत करुणायुक्त एवं दुखांत है।

'निर्वासित' कहानी की प्रासंगिकता-

वर्तमान समय में एकाकी रहने और स्वार्थपूर्ण मानसिकता रखनेवाले समाज में घर के वृद्ध दंपत्ति के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाता है। उनके बच्चे उनकी भावनाओं को बिना समझे और जाने उन पर अपनी मनमानी भावनाएँ थोपते हैं। इस समय जब वृद्ध दंपत्ति को एक-दूसरे के साथ और बच्चों के स्नेह की आवश्यकता होती है, बच्चे उन्हें अपनी सहूलियत और सुविधाओं के अनुसार रखते हैं। वे अपने माता-पिता को भी संपत्ति अथवा किसी वस्तु के आधार पर बाँट लेते हैं।

माता-पिता जिन्होंने उन सभी को साथ पाला-पोसा, बड़ा किया वे ही बच्चे अपने माता-पिता दोनों को एक साथ रखने में असमर्थ होते हैं और यदि वे उन्हें अपने साथ रख भी लेते हैं तो अक्सर ही उनकी आत्मीय भावनाओं का मजाक उड़ाते हैं, उन पर व्यंग्य कसते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वृद्ध दंपत्ति खुलकर एक-दूसरे से बात करना तो दूर अपने सुख-दुख भी साझा नहीं कर पाते हैं। जिस समय पर उनके बीच एक खामोशी आ जाती है। वह बच्चों के सामने एक-दूसरे से बात करने और अपनी स्नेह प्रदर्शन करने में हिचक महसूस करते हैं। बच्चे उन्हें इस तरह से अलग कर देते हैं जैसे उन्होंने कोई अपराध किया हो। वर्तमान समय में यदि दो बेटे हैं तो वे अलग-अलग माता-पिता को रखते हैं।

एक निश्चित अवधि और आवश्यकतानुसार वे पुनः उनकी अदला-बदली कर लेते हैं। अपनी सुख-सुविधाओं के मध्य वे उनकी तकलीफों को भूल जाते हैं। वे सोचते हैं कि यदि उन्हें सभी सुविधाएँ उपलब्ध करा दो तो उन्हें कोई कष्ट नहीं है।

इस प्रकार वर्तमान समय में अर्थात वर्तमान संदर्भों में यह कहानी पूर्णतः प्रासंगिक है। कहानी में भी ऐसे ही बुजुर्ग दंपत्ति की व्यथा का वर्णन किया गया है, जिन्हें उनके बेटे आपस में बाँट

कर एक-दूसरे से विछिन्न कर देते हैं। उनकी भावनाओं का हनन कर देते हैं। उनके स्वभाव और आदतों पर कटाक्ष करते हैं।

१५

काशीदाकारी - (काशीदाकारी)
(नासिरा शर्मा)

(जन्म: सन् १९४८)

प्रस्तावना

नासिरा शर्मा जी हिंदी की प्रमुख लेखिका हैं। सृजनात्मक लेखन के साथ ही स्वतंत्र पत्रकारिता में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। वह ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य कला व सांस्कृतिक विषयों की विशेषज्ञ हैं। वर्ष २०१६ का साहित्य अकादमी पुरस्कार उनके उपन्यास 'परिजात' के लिए प्रदान किया गया। वर्ष २०१९ का व्यास सम्मान इनके उपन्यास 'कागज की नाव' के लिए दिया गया।

'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं' कहानियों पर अब तक 'वापसी', 'सरजमीन' और 'शाल्मली' के नाम से तीन टीवी सीरियल और 'माँ', 'तड़प', 'आया बसंत सखि', 'काली मोहिनी', 'समेल का दरख्त' तथा 'बावली' नामक दूरदर्शन के लिए छः फिल्मों का निर्माण हो चुका है।

इनकी कहानी 'काशीदाकारी' एक ऐसी कहानी है जिसमें इतिहास से दूर लोग आपसी सौहार्द्र बनाएं रखते हैं।

'काशीदाकारी' कहानी की समीक्षा

कथावस्तु -

इस कहानी में राजकुमार जी. आई. जी है जो ग्वालियर से पाकिस्तान और भारत के सरहद पर उसकी ड्यूटी लगी रहती है। जहाँ आने पर वें देखते हैं कि गेंदालाल धोबी गायब रहता है। दो सप्ताह बाद वह आ जाता है। राजकुमार क्रोध से उससे पूछता है करता है कि आखिर वह भारत के राज पाकिस्तान

को तो न बता आया। गेंदालाल धोनी है और पाकिस्तानवाले उसे नींद से उठाने गए थे क्योंकि उनके यहाँ धोनी गायब था। ढेरों कपड़े होने के कारण वो लोग गेंदालाल को आधी रात नींद से उठा लाए थे। दो सप्ताह उधर काम करके आ जाता है। यही बात बताने पर राजकुमार का गुस्सा गिर जाता है। फिर भी वह शक के नजरिए गाड़े रहता है गेंदालाल पर और वह उस पर नजर रखने को कहता है

सेवाराम राजकुमार का सेवक है राजकुमार का ट्रांसफर भारत और बांग्लादेश के सरहद पर हुआ ट्रांसफर था। वे सोचे थे कि ग्वालियर में दो सप्ताह कि छुट्टी लेकर अपने परिवार के साथ रहेंगे। मगर ट्रांसफर के वजह न जा पाएं तो इनकी यह कोशिश नाकामयाब रही। पर अपने साथ ग्रामोफोन जरूर लाए थे जिसमें उनके और उनके परिवारों के पुरानी यादों के रिकार्डस थे। जिसे वे समय-समय पर सुनते। जिसमें राजकुमार इस ग्रामोफोन जो दादी की तरफ से दादा को मिला था। यहाँ उसके परिवार का इतिहास भी वे बताते हैं कि दादा को दादी का गाना-बजाना पसंद न था इसकी ओर उनकी मानसिकता ठीक नहीं थी क्योंकि दादा के पिता गजल, मुजरों में अपनी जिंदगी बर्बाद कर दिए थे और वे अंतिम दम तक इससे पीछा नहीं छुड़ा पाए उनके इस शौक में पूरा घर दाम पर लग गया था।

राजकुमार को अचानक आवाजें आती हैं जिसमें कुछ बांग्लादेशी लोग बारात लिए, वे लोग मछुआरे थे। इसलिए वे अपनी बिरादरी में ही शादी करते हैं जिसमें भारत और बांग्लादेश के बीच नदी जो सरहद है क्योंकि सरहद के इस पार और उस पार मछुआरे हैं। वे लोग को राजकुमार नहीं जाने देता। क्योंकि वो लोग बांग्लादेशी और सरहद पार करके आए थे। उन्हें सजा सुनाता है। जिससे वो गरीब लोग रोने लगते हैं कहते हैं कि वे तो शादी करने जा रहे हैं नहीं पहुंचे तो बदनामी

होगी पर राजकुमार उन्हें इतिहास पता हो ऐसे बात करके उनसे कहता कि यह बहुत बड़ा अपराध है वे लोग कहते कि ये हम सदियों से अपनी बिरादरी में ही शादी-ब्याह करते आए हैं इस पार से उस पार हमें क्या लेना-देना दुश्मनी से हम लोग तो सच्चे आरे ठहरें। कहकर इतना लड़के का पिता और उसके पिता के पिता ने अपनी पगड़ी राजकुमार के पैरों पर रख दी। इन सबमें जवान, राजकुमार को सख्ती से जवाब दे रहा था। राजकुमार दुविधा में फंसा। लेकिन भावुक हो उसने जाने की आज्ञा दे दी कहा आइंदा पत्र बिना मत आना। फिर वो देखता है शाम को कुदरा नदी व सरहद किनारे रंग-बिरंगी लाइटें चमकती हैं। उन्हें देख वह सोचता है कि शायद वे इतिहास से बेखबर हो लेकिन राजनीति के झूठ भी तो इस सरहद को बनाने में अपने फायदे के लिए बना रखे हैं शायद इन्हें बांग्लादेश बनने की खबर न हो। और उन लोगों को यह बात भी कैसे समझाएं जिन लोगों के लिए जल की धारा, लोकगीत की जमीन, आसमान का रंग, नदी के उठते उफान की भाषा एक ही हो जिनमें रिश्तों की पैठ इतनी गहरी है कि उससे मुक्त करना कोई आसान काम नहीं। वे लोग इस धरती पर काश्तकारी करने वाले सरहद के बँटवारे के सच से बेखबर हैं।

समीक्षा - (पात्र संयोजन, भाषा शैली, संवाद गठन, देशकाल और वातावरण) —

लेखिका कि इस कहानी में हास्य व्यंग्य और सरहद पर तैनात राजकुमार और उसके परिवारों का इतिहास और सरहद के आर-पार लोगों कि भावना का वर्णन किया है जिसमें वे काश्तकारी मिलने-जुलने का काम करते हैं।

पात्र संयोजन -

डी.आई.जी राजकुमार मुख्य पात्र है। रोंदालाल धोबी, बंदी इलाही बावर्ची, सेवाराम, लड़का, अर्द्ध उम्र का व्यक्ति,

वृद्ध व्यक्ति, जवान ये सब भी मुख्य पात्र हैं। कहानी मुख्यतः राजकुमार के इर्द-गिर्द घूमती है।

संवाद गठन -

कहानी के संवाद भी छोटे और पात्रानुकूल हैं। लेखिका कि संवाद योजना भावुक तो हास्य प्रदान करती है। तो कुछ गंभीरता में।

जैसे -

- सलाम सर।
- कहाँ थे इतने दिन?
- सीमा पार सर।
- सीमा पार जानते हो कौन देश है?
- जी सर पाकिस्तान

- - - - - - - - -

- नहीं सर।

- - - - - - -

[भारत पाकिस्तान सरहद संवाद]

[भारत बांग्ला सरहद संवाद]

- हम बर्बाद हो जायेंगे ... हमको जाने दें।"
- ठीक है। ठीक है।
- हमारा कसूर क्या है?
- नदी पार कर कहाँ जा रहे हो?
- लड़के का ब्याह है, समधियाने जा रहे थे।

भाषा-शैली -

लेखिका नासिरा ने परिस्थिति और पात्रानुकूल भाषा शैली का प्रयोग किया है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने हास्य और

भाव प्रधान शैली का प्रयोग किया है। जिससे भाषा में कहीं हँसी तो कहीं गंभीरता है। साथ ही संवादों की योजना ने कहानी को नाटकीयता का रूप प्रदान किया है।

देशकाल और वातावरण -

सरहद के उस पार और इस पार जो पहले भारत और पाकिस्तान के सरहद का सजीव वर्णन की है तो ट्रांसफर के बाद भारत और बांग्लादेश के सरहद का दृश्य का सजीव वर्णन है साथ ही सरहदों के किनारे बसे मछुआरों का भी सजीव वर्णन है जिसमें कुछ लोक का भी अंश है। यह कहानी इसलिए भी है कि इस कहानी में मछुआरों और गेंदा लाल धीवी जैसे लोग अगर इतिहास में पहले भी रहते थे तो इसका अर्थ कि ये सरहदें अपने स्वार्थपूर्ति के लिए राजनीति चाल है।

साथ ही राजकुमार के दादा के पिता के जरिए उनके परिवार के जरिए एक घर का दृश्य का भी सजीव वर्णन है और लोगों का, मदिराघर का लोकगीतों व गीतों का भी सजीव वर्णन है। और साथ ही बचपन के कुछ यादों का भी।

निष्कर्ष: यह कहानी उन काशीदाकारों की है जो इतिहास से अनजान है जिनके अंदर इंसान धर्म से बढ़कर और कुछ नजर नहीं आता फिर चाहे वो इस पार के हो या उस पार के।

साथ ही हमें भी मतभेद न करने की सीख देती है यह कहानी।

श्रीमती मणिबेन एम. पी. शाह
वूमन्स कॉलेज
ऑफ
आर्टस एन्ड कॉमर्स

कक्षा एम. ए. भाग - दो (2)
सत्र : चतुर्थ
विभाग : हिंदी
प्रशिक्षुता परियोजना
जून - 2021

नाम : योगीता कांबळे
पंजीक्रमांक : 2

विषय : दलितों पर आधारीत कहानियों की समीक्षा (15 कहानियाँ)

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

पच्चीस चौका डेढ़ सौ
पहलवान की ढोलक
ठाकुर का कुआ
नौ बार
लालपान कि बेगम
चीफ कि दावत
वापसी
नशा
सलाम
जिंदगी और गुलाब के फूल
खून का रिश्ता
उसने कहा था
एक कहानी यह भी
ये अंत नही
सिक्का बदल गया

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना.

महाविद्यालय में इंटर्नशिप के लिए हमे लॉकडाउन और करुना के स्थिती कि वजह से हमे घर पर ही बैठकर सुरक्षीत रहकर हमे यह इंटर्नशिप का कार्य दिया है जिसमे 15 कहानिया लेकर उनपर समीक्षा करनी है। और मैने इसलिए दलित कहानिया चुनी है। और ये कहानीया सामाजीक परिस्थितीयो से ही समबद्धीत है।

दलित शब्द का अर्थ है दबाया गया कूचला गया, उत्पीडित। भारतीय सामाजीक व्यवस्था के सन्दर्भ में दलित सम्बोधन वर्ण व्यवस्था के निचले पायदान पर होने के कारण शताब्दियो से शोषण, दमन, सामाजीक असमानता के शिकार असवर्ण वर्ग लिए जाते है। आधुनिक काल में भारतीय नव जागरण के साथ निम्नवर्ण की दुरावस्था की ओर सुधारको का ध्यान आकृष्ट हुआ बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी प्रभृती विभूतीयो ने समाज सुधार के प्रयत्न किये

दलित विमर्श का प्रारम्भ मराठी साहित्य से हुआ, तदुपरान्त हिन्दी, गुजराती, कन्नड.. में भी दलितो द्वारा रचित साहित्य के सुर

हिंदी में ओम प्रकाश वाल्मीकी, मोहनदास नैमिशराय, कृष्णा सोबती, जैसे लेखकों ने दलित साहित्य कि रचना कि है। दलित साहित्यकारों ने दलित साहित्य कि विशेष स्थिती और आवश्यकता रेखांकित करते है।

दलित साहित्य के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए डॉ जयप्रकाश कर्दम कहते है दलितों द्वारा लिखा गया ऐसा साहित्य है जो उन्हे अपनी दमन और शोषण करने वालो के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरीत करे। उनके अन्दर सम्मान और स्वाभीमान से जीने की भावना पैदा करे, भाग्य, भगवान पुर्नजन्म, परलोक आदि मे विश्वास की बजाय वैज्ञानिक सोच का विकास करे। वर्ण व्यवस्था सहित उन तमाम शोषण मूलक व्यवस्थाओ का विरोध करने को सीख दे जो असमानता अन्याय और अमानवीय की जनक या पोषक है। दलित साहित्य केवल प्रतीकार या प्रतीशोध नही है या केवल नकार या निषेध नही है। बल्की जो कुछ मंगल और शुभ है हम सबकी निर्मिती के लिए यह पूर्व परम्पराओ से विद्रोह है।

Scanned with CamScanner

पच्चीस चौका डेढ़ सौ

सुदीप के पिताजी उसका पच्चीस चौका डेढ़ सौ ओमप्रकाश जी वाल्मीकि रचित एक आत्मकथात्मक चर्चित व आलोचित कहानी है। दलित विमर्श का केंद्र रखकर लिखि गई इस कहानी में लेखक ने वस्तुपरक निस्सगता और वैचारिक संयम के साथ दलित शोषण की अनवरत शृंखला को खोला है

सुदीप जिसकी लगे हुए अभी मात्र एक महिना ही हुआ है, अपनी पहली तनख्वाह अपने हाथ मे थामे हुए अपने गाँव वापिस लौट रहा है। वह बहुत खुश है। एक ऐसी खुशी दिखाई पड़ रही थी जिसे पाने के लिए उसने असंख्य कटील झाड़-झंखाड़ो के बीच अपनी राह बनाई थी। वह युवाहोड़ और वर्तमान जीना चाहता है, परन्तु भूतकाल उसका पिछा नही छोड़ रहा है। वह अपने विगत और वर्तमान की कशमकश में डूबा हुआ बस अड्डे पर आ जाता है। उसे शीघ्र ही अपने गाँव की बस मिल जाती है। जब वह बस में बैठता है तो देखता है कि बस का कंडक्टर एक दुबले-पतले शख्सीयत पर चिल्ला रहा था, शायद उसके बात का जवाब कुछ गिड़गिड़ कर दे रहा था। उसे देखकर सुदीप को अपने पिता कि छवी याद आने लगती है। उसका रोम-रोम झंझोरने लगता है। जैसे कोई धीरे से शरीर पर आरी चला रहा है

Scanned with CamScanner

उसे याद आता है कि वह एक साधारण दलित पिता का लड़का है। बचपन में पिता पता नहीं कैसे उसके पिताजी के मन में यह विचार आगया कि सुदीप को स्कूल भर्ती करवा दिया उस समय उसके पिता ने बहुत गिड़गिड़ाकर भर्ती करवाया। पढ़ाई में चल निकली दूसरी कक्षा तक आते-आते वह अच्छे विद्यार्थियों में गिना जाने लगी सभी विषय में वह ठिक था लेकीन गणित में अधिक रूची था। घर लौटकर पच्चीस का पहाड़ा याद कर रहा था। तभी थके हारे लौटे। उसके पिता ने उसे टोका नहीं बेटे पच्चीस चौका सौ नहीं- पच्चीस चौका डेढ़ सौ होते है। उसने पिता कि बात काटी परन्तु उसके पिता बड़े आत्मविश्वास से उसे बताया कि पच्चीस चौका डेढ़ सौ होते है। और वह यह गणित चौधरी साहब ने सीखाया था। चौधरी साहब ने उसके पच्चीस रुपये मासीक धान के चार महीने के डेढ़ सौ रुपये मेरे बीस रुपये माफ कर दिए उस समय वह उसे सही लगा पिता की बात सुनकर वही स्कूल में कहा और थप्पड़ मिले इस घटना उझलन पैदा हुई थी।

इन्ही विचारो और स्मृतीयो में डूबा
सुदीप अपने गाँव और फिर अपने घर और
आया। जब उसने अपनी माँ को दे दिया
(इन्ही विचारो और) तो वे गद्गद्
हो गए। फिर उसकी माँ को पुकारकर बोले
दिपि कि माँ; करके यह तो आ... ले संभाल
अपने लाडले कि कमाई। माँ ने भी आँचल
पसारकर रुपए लिए और सुदीप ने पच्चीस-
पच्चीस रुपए की चार ढेरीयाँए लगाई और फिर
अपने पिताजी से गिनने को कहा उन्होने
कहा कि उन्हे तो बीस से अधिक गिनती
नहीं आती वह ही उन्हे गीने इस पर

Scanned with CamScanner

पहलवान की ढोलक

फणीश्वर नाथ रेणु की प्रतिनिधि कहानियों में पहलवान की ढोलक भी शामिल है। यह कहानी कथाकार रेणु की समस्त विशेषताओं को एक साथ अभिव्यक्त करती है। इनकी लेखनी में अपने गाँव अंचल, लोक संस्कृति को सजीव करने की अद्भुत क्षमता है ऐसा लगता है मानो प्रत्येक पात्र वास्तविक जीवन जी रहा है पाठक लोक परिवेश का इतना वास्तविक चित्रण अत्यन्त दुर्लभ है। रेणु उन गिने चुने कथाकारों में से है। जिन्होंने गद्य में भी संगीत पैदा कर दिया है। अन्यथा ढोलक की उठती गिरती आवाज और पहलवान के क्रियाकलापों का ऐसा सामंजस्य दुर्लभ है।

रेणु जी की यह कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक-कला और उसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। रामा साहब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना सिर्फ व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पूरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एकदम नई व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है। यह भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या है। जो लूटन पहलवान की

को लोक कलाकार के आसान से उठाकर
पेट भरने के लिए हाय - तौबा करनेवाली
निरीहता की भूमि पर पटक देती है।
लिए हाय - तौबा करने वाली निरीहता की
भूमि पर पटक देना कहानी के अंत में
महामारी की शक्ल में आम मौलिक उद्योग
अजेय लूदन की भरी पूरी चहल को फाटे ढोल
की पोल में बदल देते गासदो में लूदन
हमारे सामने कई सवाल छोड़ जाते है।
जो प्रश्न इस तरह है कि -
अमावस्या की अँधेरी रात, निस्तब्ध वातावरण
पृथ्वी पर प्रकाश का नामोनिशान न होना
निस्तब्धता को तोड़कर ललकारती पहलवान
की ढोलक की आवाज.
ढोलक की आवाज मृत गाँव में संजीवनी शक्ति
लूदन का शेर के बच्चे को चुनौती देना
श्यामनगर के दंगल और शिकार प्रिय वृद्ध
राजा साहब द्वारा उसे दरबार में रखने की बात
राजा साहब द्वारा बीच में ही कुश्ती बंद करवाना
अचानक राजा साहब का स्वर्ग सिधारना
नए राजकुमार का विलायत से आकर राजपाट
अपने हाथ में ले लेना

ठाकुर का कुआ

पानी की समस्या को लेकर गहन चिन्ता में डूबे अछूत पति-पत्नी जोखू और गंगा को लेकर शुरू होती है। जोखू और गंगा के अछूत होने के कारण ही पानी की समस्या से वे छूटा रहे हैं। जोखू ने लोटा मुंह से लगाया तो पानी से सख्त बदबू आयी। जोखू बोला - यह कैसा पानी में सख्त बदबू आयी। मारे बास के पिया नहीं जाता लम्बे समय से बीमार जोखू प्यास के मारे तड़प रहा था। गंगा प्रतीदीन शाम को पानी भर कर लिया करती है। कल पानी पानी लायी तो बू बिल्कुल नहीं थी। आज पानी में बदबू कैसी गंगा के सामने पानी समस्या आकर खड़ी हुई थी। गंगा जानता तो जानती थी कि खराब पानी से बिमारी बढ़ जाती अशिक्षा के कारण यह न जानती थी कि पानी को उबालने से खराबी जाती है। यह पानी कैसे पियोगे न जाने कौन जानवर मरा है। कूम से मैं साफ पानी लाये देती हूं। जोखू बहुत आश्चर्य में पड़ गया, लेकिन दूसरा पानी कहां से आएगा। गंगा कहती है दो दो कूम है, एक लोटा पानी न भरने देंगे जोखू ने उस सामान्य यथार्थ की ओर संकेत किया जिस पर सबसे पहले प्रेमचंद कि नजर पड़ी थी।

Scanned with CamScanner

हाथ पाव फुलता आयेगी और कुछ न होगा बैठे चुपके से। ऐसा क्यों होगा? क्योंकि ब्राम्हण देवता आशिर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे और साहूजी हक के पांच करने में लगे रहेंगे गरीबो का दर्द कौन समझता है। यह तो मर भी जाए तो दुआर पर कोई झाकने तक नही आता। कंधा देना तो बड़ी बात है। जोखू के इस कथन मे सदियो की पीड़ा की अभिव्यक्ति वह यह तो नही समझ पा है। जोखू व रहा की ऊची जातियाँ अछूतो के प्रती इस हद तक असंवेदन शील क्यों है, उनके दुःख में शामिल होने उनकी गरीबी को हटाने या उनकी मृत्यु पर भी कोई क्यो नही साथ आता? प्रेमचंद ने जोखू व गंगी के द्वारा इन प्रश्नो को पहली बार रचना के जीवन की वास्तविक दिखलाया अछूतो की एक गहन समस्या पानी की है जिसकी ओर सबसे प्रथम ध्यान आकर्षित किया है। स्वाधीनता के राजनितीक मुद्दे पर छूआछूत की समस्या को को प्रथम बार शामिल किया गया था क्योंकी डा. अम्बेडकर का दलित मुक्ति आंदोलन तब तक तीर पकड़ चूका था। स्वय गांधीजी भी इस समस्या से अवगत हो चूके थे फिर भी डॉ अंबेडकर पर मानसिक और राजनीतीक दबाव डालकर पूना पैक्ट द्वारा अछूतो को मिले पृथक निर्वाचन अधिकार से वंचित कर दिया

जातिप्रथा और ऊँच-नीच भेदभाव पर कमजोर सी प्रतिक्रिया गंगा के पात्र द्वारा प्रेमचंद करते है गंगी का विद्रोही दिल रिवाजों पांबदियों और मजबूरीयों पर चोटे करने लगा हम क्यो नीचे है और ये लोग क्यो ऊँचे है गंगा का गुस्सा केवल शब्दो में अभिव्यक्त होता है, यथार्थ में गंगा इनका मुकाबला नही कर पाती और अंततः ठाकुर के कूप से गंगी का संघर्ष किए बिना भागना सीधे-सीधे सवर्ण अधिपत्य के सामने समर्पण दर्शाता है। क्योंकि ठाकुर का कुआ कथनी गंगी की ठाकुर के कूप पानी लेने की कोशीश करने की घटना के इर्द गिर्द ही घूमती है। गंगी का विद्रोह दिल रिवाजों पाबंदियां और मजबूरीयां पर चोटे करने लगा प्रेमचंद का यह कथन जातिप्रथा से उत्पन्न की घिनौनी परंपरा के खिलाफ गंगा के मन में 36 रहे गुस्से को दर्शाती है, इसलिए अगला प्रश्न भी गंगा के द्वारा 36 उठाया गया है हम क्यो नीचे है। और ये लोग क्यो ऊँचे है? जातिप्रथा के कारणो पर कही न कही यहां चोट करने का प्रयास तो है लेकिन जीस धर्म के अधीन इस भेदभाव को मान्यता प्राप्त है उसके विरोध में लेखक ने चुप्पी साध ली

गंगा ने चोट की है ये लोग गले में तागा डाल लेते है। यहाँ तो जीतने है, एक से एक छोटे है। चोरी करे ये, जाल करेब करे, झुठ मुकदमे ये ~~करे~~ करे। गंगा के इस कथन में यह सत्य छिपा है कि तथाकथित ऊँची जातीवालो को नीचता के किसी भी काम को करने में शर्म नही महसुस होती। और ये लोग ऊँचे है?

पानी के लिए गंगा जिस माणसीक व जागतिक दबाव को झेल रही थी और साथ ही पकड़े जाने पर उसके आने वाले स्थीती से भी अवगत थी। इसलिए रस्सी तेज सी खीचती गई शायद कोई पहलवान रस्सी को तेज सी खिचती। सावधानी दिखाई गई तेजी और दृढ सकल्प का नतीजा कुछ नही निकला क्योकी ज्योही गंगा झकी की घडे को पकडकर जगत पर रखे की एकाएक ठाकुर का दरवाजा खुला गंगा घबरा गई अब तक बंधा धैर्य टूटा गंगा घबरा गई और वह दौडने ~~हू~~ हुए घर पहुची क्योकी गंगा में इतनी ताकत नही थी वह खुद अपने रक्षा कर सके

हर पड़चका गंगा ने देखा की तोंबू कोन
मूंह से लगाये वही मैला गंदा पानी
पी रहा है।

पानी का अथाह भंडार तो कुदरती है
संपत्ती है जिस पर कथित ऊँची जाती
का स्वामित्व है और अछूत पानी की
एक बूंद लेना का हकदार नहीं है। यह
तत्कालिन सामाजीक धार्मिक और सांस्कृतीक
स्थीती की वास्तविकता को उजागर करती
है। एक वर्ग को सत्ता, संपत्ति और
श्रेष्ठत्व बदल करके कथित निम्न वर्ग को
अभाव अपमान को झेलते और अवहेलना
को सहते रहने का पर्याय बनाए रखना
कहां का न्याय है जाती और वर्ण व्यवस्था
पर प्रश्नचिन्ह लगाती यह कहानी जितनी
तत्कालीन समय में प्रांसगिक थी आज के
संदर्भ में भी उतनी ही प्रासंगिक है।

Scanned with CamScanner

नो वार

नो वार कहानी में राजेश एक दलित नव युवक था। वह पेपर में निकलनेवाले हर एक मेट्रोमोनीयल कालम के अवश्य पढ़ता था। उसे एक ऐसी योग्य लड़की की तलाश थी, चाहे वह अपनी जाति की हो या किसी अन्य जाती की। एक दिन उसे पत्रिका में ऐसा ही एक मेट्रोमोनीयल देखने को मिला। तुरन्त एक विवरण युक्त पत्र लड़की के घर भेजा पत्र में अपना विवरण में शिक्षा उम्र, स्वास्थ्य, रूप, रंग नौकरी वेतन, शिक्षा, शौक बाते लिखी। जाती के बारे में लिखते इस अटक गया बिना जाती का उल्लेख किए पत्र भेज दिया

लड़की ने कहा की राजेश पसंद है। अनिल के पिता राजेश से राजनितीक विचारो की चर्चा करते है। और कहते है की हमारे परिवार में जितने भी शादिया अंतजातीय हुए है। शादि के मामले में जल्दबाजी नही (हुई) करना है। आप दोनो एक-दुसरे को पहचानना चाहिए। तुम लोग पढे लिखे हो, दुनिया को देखते हो अपना भला बुरा अच्छा समझते हो। तुम जो भी करोगे ठीक ही करोगे ठीक ही

यदि तुम्हे अच्छा लग रहा है, तुम्हारा मन कह रहा है, तो हमारे लिए भी अच्छा है। तुम्हारी खुशी में ही हमारी खुशी है। इतना कहकर वो चुप हो गए। उनकी यह बात राजेश को बहुत उपयुक्त लगी थी। उसने उनके विचारो के प्रती अपनी सहमती जताई। जी हाँ आप ठीक कहते हैं। मैं आपके विचारो से पूरी तरह सहमत हूँ। फिर वह चाय पीकर और थोडी देर ठहरकर चला आया था

उसके बाद राजेश और अनिता दोनो शादि के सपने देखते है। वैसे ही कई बार डेटिंग पर उनकी मूलाकात और बातचीत हूई। वे एक दुसरे के पहचान में बहूत निकट आये अंत में शीघ्र एक दुसरे के साथ विवाह-बंधन में बाँधने की आशा और उमंग के साथ वे दोनो अपने-अपने सपनो में डूबे रहते है और अनेक बाते कहते है।

अनिता के पिता अंदर जाकर मन के संदेह को व्यक्त करते है। पूछते है कि अनिता वह लड़का किस जाति का है वह कहती है कि पापा मुझे मालुम नही, मैं भी कभी उसे पूछा नही, लडका अच्छा है और अच्छी आदत है। उसमे कोइ बुराइ नही है, स्मोकिंग एक नही करता है।

Scanned with CamScanner

और फिर पापा हमारे पत्रिका पहले ही नो बार छापा था। इसलिए नहीं जानना चाहते कि वह किस जाती का है। पापा, जब हम जाती-पाती को मानते है नही तो फिर वह किसी भी का हो उससे क्या फर्क पडता है। लडकी ने बड़ी सहजता से कहा. यह सुनकर अनिता के पिता कहते है कि वह सब ठिक है। हम जाती-पाति को नही मानते और मैट्रोमोनियल मे नो बार छपवाया था। फिर भी कुछ चिजे देखनी ही होता है। आखीर तो 'नो बार' का यह मतलब कायस्थ, अग्रवाल तथा खत्री ही होता है। कोई चमार, चूहडे के साथ नहीकर सकते ऐसा कहकर राजेश को अछूत और निम्न जाती का समझकर उसके साथ अनिता की शादि कराने से मुकर जाता है।

ऐसे होने पर प्रगतीशीलता का ढोंग क्यो कि जाता है? क्योकी ब्राम्हणवादि संस्कारी के है कहानीकार ने ऐसे ही आधुनिक विचारोवाले समाज के लोग के वास्तविक पर्दाफाश किया है। इस में कहानीकार ने एक रहस्यात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। जहाँ कहानी के अंत में पता चलता है कि वह निम्न जाती का है, इसी समाज में दिखावा ढोंग करनेवाले लोगो का अंकन अत्यन्त सजग रूप से अभिव्यक्त किया है।

Scanned with CamScanner

समय पर गाड़ी न मिल पानेसे बिरजू के पिता को आने में देर हो जाती है। वह आयगा या नहीं, इसी दुविधा ग्रस्त मन: स्थिति में बिरजू की माँ झुँझलाती है तभी मखनी बुआ का यह सवाल चूभ गया। मखनी बुआ ने सहजता से ही पूछा था, किन्तु गुस्से में उसने मखनी बुआ का ऐसा उत्तर दिया कि तुम्हारे आगे पीछे कोई नहीं है, लेकिन मुझे सब देखना पड़ता है। यह बात मखनी बुआ को चूभ गई।

Scanned with CamScanner

पानी भरते समय जब यह बात मखनी बुआ ने गाँव की औरतों को बताई तो पनिहारियों ने बुआ को सान्त्वना देने की कशिश की

बातों-बातों मे बात निकली कि बिरजू के पिता हाल मे ही मजूर से स्वतन्त्र किसान हुए थे मे मन चार पैसे आ जाने का ही नतीजा है कि बिरजू की माँ के पैर जमीन पर नहीं टिकते जंगी की पतोहू (बहू) मे इसी बीच बिरजू की माँ को लोलपान की बेगम कह दिया। इससे बिरजू की माँ की नाराजगी और अधिक बढ़ गई। नाराजगी और खुशियाँ कैसी आधिक है, ये दर्शाने मे फणिश्वरनाथ के समान कोई अन्य लेखक नहीं है। बिरजू के पिता को गाड़ी मिल जाति है। बिरजू की माँ बैलगाड़ी का आहट, बैलो की घण्टियाँ सुनकर खिल उठती है। भारतीय परिवेश मे कोई अकेला नही होता, समाज परिवार का ही विस्तृत रूप होता है, अभि तक बिरजू की माँ जिनसे चिढ़ी बैठी थी उन सभी को गाड़ी में बिठा लेती है। बिरजू की माँ ने बड़ी खुशी से मखनी बुआ को घर बुलाया। जंगी की बहू और सुनरी को अपनी साथ-साथ नाच देखने चलने के लिए गाड़ी पर बिठायी

रास्ते में खाने के लिए वह पहले ही अपने साथ कुछ सामान ले चुकी थी। साथ ही डंगी की पतोहू, जिसने बिरजू की माँ को लाल पान की बेगम कहा था, उसके दिए सम्बोधन को अपना लिया गया। बिरजू की माँ की झुंझलाहट और नाराजगी मन की अभिलाषा पूर्ण न हो पाने की आशंका से उत्पन्न निराशा ने मन में उदासी आ जाती है।

कहानिकार ने कहानी में यह दिखाने का प्रयास किया है कि मनचाही परिस्थिति न होने पर जो सारी बातें बिरजू माँ को नाराज बना रही थी वही अनुकूल परिस्थिति होने पर उसे सहज व भली प्रतीत होने लगी। डंगी की पतोहू के जिस लाल पान की बेगम के सम्बोधन से वह बिफर हुई थी। परिस्थिती व उनके मध्य मानवीय सम्बन्धो भावो को यह शीर्षक दिखा पाने में समर्थ है इसी में इसकी सार्थकता है।

Scanned with CamScanner

कहानी के प्रमुख पात्र

बिरजू की माँ कहानी की नायिका व एक सशक्त महिला है, जो समाज और परिवार में सामंजस्य बनाते हुए सबको साथ लेकर चलने वाली एक नारी है।

बिरजू के पिता कहानी में एक इन्सान के रूप में दिखते है, जो अपनी इच्छाओं को हमेशा दबाकर रखते है।

बिरजू चम्पिया कहानी के बाल पात्र भाई-बहन है, जो समय-समय पर कहानी के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

मखनी बुआ गाँव की एक स्त्री पात्र है, जिसके आगे पीछे कोई नही है।

संगी पतोहू गाँव की नई बहू है जो झगड़ालू प्रवृत्ती की स्त्री है

सुनरी गाँव की एक महिला पात्र है।

Scanned with CamScanner

चीफ की दावत

भीष्म साहनी

चीफ की दावत भीष्म साहनी द्वारा रचित प्रमुख कहानी है। इस कहानी में उन्होंने मध्यमवर्गीय समाज खोखलेपन तथा दिखावटीपन को दर्शाया है। उनके द्वारा रचित कहानी आज के शिक्षित युवा वर्ग अपने माता पिता को बोझ समझते है। व्यक्ती अपनी सुख सुविधा के लिए अपने माता-पिता को छोड़ देते है। वे यह तक भूल जाता है कि आज जिस समाज में तुम रह रहे हो उनकी बदौलत है अपने बच्चो को काबिल बनाने के लिए माता पिता अपना सर्वस्व समर्पित कर देते है। उनका पूरा जीवन अपने बच्चो की खुशी के लिए बलिदान में व्यतीत हो जाता है। 'चीफ की दावत' एक ऐसी कहानी है, जिसमें स्वार्थी बेटे शामनाथ को अपनी विधवा बूढ़ी माँ का बलिदान है

शामनाथ दफ्तर में नौकरी करता है। वह धीरे धीरे उच्च पद जाने की महत्वाकांक्षा रखने लगता है। अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए वह विदेश चीफ की खुशामदी करता है। परंतु वह अपनी माँ को एक अनावश्यक सामान की तरह उपेक्षा करता है।

Scanned with CamScanner

वह अपनी निरक्षर व बूढ़ी माँ को कहीं छुपाना चाहता है। वह सोचता है कि चीफ उसकी माँ के (साक्षात) उपस्थिती से न नाराज हो इसलिए वह अपनी पत्नी से कहता है, नहीं, मैं नहीं चाहता कि इस बुढ़िया का आना जाना फिर से शुरू हो पहले ही बड़ी मुश्किल से बन्द किया था। माँ से कहो की जल्दी से खाना खाकर शाम को ही अपनी कोठरी में चली जावे मिहनता कहीं 8 बजे आएगे इससे पहले ही अपने काम निपटा ले शामनाथ अपनी पदोन्नती के लिए अपनी माँ को अकेलेपन का शिकार बना देती है। वह उसके द्वारा बलिदान को भी नहीं समझता। ऐसा ही होता है जब बच्चे की पढ़ाई के लिए माता-पिता ने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया हो परन्तु उनके बच्चे को वे घर में पड़े कूड़े की तरह लगते है। मिस्टर शामनाथ अपने माँ के प्रती अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं समझता। वह अपनी माँ के हृदय को ठेस पहुचाता है। जब वह अपनी माँ को छिपा नहीं पाता तो झूठा प्रदर्शन भी करता है। जब वह अपनी माँ को छिपा नहीं पाता तो झूठा प्रदर्शन भी कहता है एक कुर्सी को उठाकर बरामदे में बाहर रखते हुए बोला "आओ माँ, इस पर जरा सा बैठो तो इसमें प्रदर्शन में शामनाथ की चिन्ता छिपी हुई है।

Scanned with CamScanner

वह सोचता है कि उसकी माँ की पहचान उपस्थीती उसके चीफ को कभी अच्छी न लगे। उसको लगता। शाम की दावत के समय शामनाथ मन ही मन सोचता है कि विदेशी चीफ को कैसे बताएगे की उसकी माँ निरक्षर है। आधुनिकता तथा चकाचौंध में आज के युवा वर्ग बुजुर्गो के दिल पर घाव करते है। शाम को मेहमानो के आने के बाद उनकी खुशामदगी मे लग जाता है। शामनाथ की माँ बरामदे मे कुर्सी पर बरामदे में बैठी नींद के खर्राटे ले रही थी कि वह अचानक चीफ के सामने गिर गई। शामन अपने आप को लज्जित महसूस करने लगा कि माँ ये क्या कर रही है। शामनाथ की म के गिरने के बाद साथी माँ कि दयनिय स्थीत पर हंसने लगे परन्तु चिफ ने बात संभाली और चीफ शामनाथ की वृद्ध माँ से हाथ मिलाता है। उसे शामनाथ की माँ बहुत अ लगी। शामनाथ ने अपनी माँ का परिचय करवाते हुए बताया कि मेरी माँ गाव से ताल्लु रखने वाली महिला है। और वह माँ का परिचय देते समय हिचकिचाता है।

Scanned with CamScanner

शामनाथ कि माँ चीफ को विवाह का गीत सुनाती है। उसकी साथ - साथ शामनाथ ने अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए मालती को नई फुलकारी बनाकर देने का वादा किया वह भी अपनी माँ को पूछे बिना और जब बेटे ने चीफ को फुलकारी की के लिए हाँ अपने माँ से पूछे बिना और माँ ने भी समर्थन प्रकट कि। शामनाथ अवसरवादिता व स्वार्थपूर्ति की साक्षात मूर्ति है, परन्तु विडम्बना की बात तो यह है कि जिस माँ को वह अपनी तरक्की में बाधा समझता था उसी माँ ने उसे तरक्की दिलवाई। आज के शिक्षित युवा वर्ग भी शामनाथ की भांति स्वार्थी होते जा रहे है। उनके नैतिक मूल्य इतने गिर चुके है कि उन्हे उपर उठाना मुश्किल है ज्यों ही दावत आरम्भ हुई माँ अपनी कोठरी में धीरे से चली गई और अपनी कोठरी में बैठकर जोर जोर से रोने लगी। और जब शामनाथ अपनी माँ के पास आता है और कहता है कि तुम ने पार्टी में रंग ला दिया तरक्की होगी तब माँ कहती है कि मुझे हरिद्वार छोड़ आ मैं कब-से कह रही हूँ तब श्यामनाथ गुस्सा हो जाता है। कहता है

Scanned with CamScanner

उस समय माँ। यह कहना युवा पीढ़ी पर व्यंग्य है जो अपनी झूठी शान के लिए अपने माँ के हृदय पर घात पहुंचाते है। जिसको माँ किसी के सामने बयान नही कर पाती और युवा पिढी अपने माता-पिता को अपनी सफलता में बाधा समझती है।

भीष्म साहनि चीफ की दावत में युवा पीढी के संवेदशील व्यवहार का चित्रण है सामाजिक यथार्थ को इन कथाकार ने

Scanned with CamScanner

वापसी

उजाड़ियांवाला

गजाधर बाबू स्वभाव ने कमरे में जमा सामान पर एक नजर दौड़ाई - दो बक्से

कहानी का मुख्य पात्र गजाधर बाबू रेलवे में नौकरी करता है। वह अपने परिवार से दूर रेलवे क्वार्टर में अकेले रहता है। बच्चों की उच्च शिक्षा के कारण परिवार शहर में रहता है, जहाँ उनका अपना मकान है। वह जीवन के पैंतीस वर्ष अकेले हो इस आशा में व्यतीत कर देते है, कि सेवानिवृत्त होने पर उन्हे परिवार की संगति मिलेगी इसके उलट, वह परिवार के मध्य स्वयं को उपेक्षित एवं अपमानित अनुभव करते है। परिवार में कोई उनका कहना नही मानता। बड़ा बेटा पिताजी के बीच में बोलने पर देता है, तो बेटी बसन्ती टोकने पर रूठ जाती है। बहू घर का काम करना नही चाहती है। पत्नी घर की शिकायते तो करती है पर उन शिकायतो में आत्मीयता नही होती और न ही निवारण हेतु सलाह ही ली जाती। बड़ा बेटा अभय के पत्नी के साथ अलग गृहस्थी बसाना चाहता है। उनके शिकायतो में आत्मीयता नहीहोती और न ही निवारण हेतु सलाह ही ली जाती है। बड़ा बेटा पत्नी के साथ अलग गृहस्थी बसाना चाहता है।

Scanned with CamScanner

उनके आने से पूर्व सम्पूर्ण परिवार परिवार पर अमर की ही आज्ञा चलती थी। बैठक में पिता का बैठना उसे पसन्द नही है। इस स्थिति में गजाधर बाबू को अपना जीवन एक खोई निधि-सा प्रतीत होता है। वह अपने ही घर में स्वयं को एक परदेशी के समान महसूस करने लगते है।

इन्ही परिस्थितियो के मध्य गजाधर बाबू को सेठ रामजीमल की चीनी की मिल में कार्य करने का प्रस्ताव मिलता है जिसे वह बिना सोचे समझे स्वीकार कर जाने को तैयार हो जाते है। परिवार में कोई उनका कहना नही मानता। बड़ा बेटा पिताजी के बीच बोलने पर ताने देता है, तो बेटी बसन्ती टोकने पर रूठ जाती है। बहू घर का काम करना ही नही चाहती है। पत्नी घर की शिकायते तो करती है पर उन शिकायतो में आत्मीयता नही होती और न ही निवारण हेतु सलाह ही ली जाती है। बड़ा बेटा अमर अपनी पत्नी के साथ अलग गृहस्थी बसाना चाहता है। उनके आने से पूर्व सम्पूर्ण परिवार पर अमर की ही आज्ञा चलती थी। बैठक में पिता का बैठना उसे पसन्द नही है। इस स्थिति में गजाधरबाबू को अपना जीवन एक खो निधि-सा प्रतीत होता है। वह अपने ही घर में स्वयं को एक परदेशी के समान महसूस करने लगते है।

Scanned with CamScanner

इन्ही परिस्थितियो के मध्य गजाधर बाबू को सेठ रामजीमल की चीनी की मिल मे कार्य करने का प्रस्ताव मिलता है जिसे वह बिना सोचे समझे स्वीकार कर जाने को तैयार हो जाते है, परिवार भी उनके जाने की तैयारी में लग जाता है और उन्हे विदा करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

Scanned with CamScanner

नशा

प्रेमचंद

नशा कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद कृत एक बड़ी ही सुन्दर कहानी है। यह उनकी एक यथार्थवादी तथा मार्मिक कहानी है, जिसमें लेखक ने एक गरीब विद्यार्थी पर वैभव का नशा चढ़ने और उतरने का अत्यन्त स्वाभाविक एवं विश्वसनीय वर्णन किया है। यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई एक बड़ी ही सुन्दर कहानी है। इस कहानी को पढ़ कर ऐसा लगता है, मानो कथानायक स्वयं अपनी कहानी सुना रहा है।

लेखक एक क्लर्क का बेटा है, जिसके पास मेहनत - मजदूरी के सिवा और कोई जायदाद न थी। वह इलाहाबाद के एक छात्रावास मे रहकर पढ़ाई करता है। उसके साथ ही ईश्वरी नामक एक धनी लड़का भी पढ़ता है। उसके पिताजी एक बड़े जमींदार है। दोनो में गहरी मित्रता थी प्रायः दोनो आपस में हल्ला भी करते थे। लेखक जमींदारो की बुराई करता है, जब कि ईश्वरी जमींदारो का पक्ष लेता है। वह लेखक उन्हे पशु और खून चूसने वाली जोंक और वृक्षो की चोटी चोटी पर फूलने वाला बेशा कहता है।

Scanned with CamScanner

दशहरे की छुट्टीयो में लेखक अपने घर नही जाना चाहता था, क्योंकि उसके पास किराये के पर्याप्त पैसे नही थे। वह होस्टल में अकेला भी नही रहना चाहता था। एक दिन जब ईश्वर उसे अपने साथ अपने गाँव ले चलने की बात कहता है तो वह उसके साथ जाने के लिए तुरन्त तैयार हो जाता है। निश्चित दिन ही वे शाम को ही स्टेशन पर पहुच गए जबकि गाडी रात को जाती थी रिफ्रेशमेंट रूम मे भोजन करते समय खानसामो ने यानी बैरा ने ईश्वरी ने उन्हे आठ आने टिप दिया ईश्वरी के उनके अदब तथा तमीज कि प्रशंसा करने तथा अपने नौकरो की बुराई करने पर लेखक ने कहा कि यदि ~~घर~~ ~~अपने~~ और कोई ध्यान नही दिया। सैकन्ड क्लास की गाडी में निकले सुबह उनकी गाड़ी मुरादाबाद पहुँची उन्हे लेने के लिए दो नौकर रियासत अली और राम हरख तथा सामान उठाने के लिए पाँच बेगार यानी मजदूर आए हुए थे। लेखक कि वेशभूज देखकर देखकर रियासत अली ने ईश्वरी से पूछा तो ईश्वरी ने बताया कि ये तो मेरे घर आना तो नही चाहते थे, कारण इनके घर से कई अर्जेंट पत्र आए थे सो इन्हे में घर नही जाने

इनकी ढाई लाख सालाना की रियासत है। उन्हें घर ले जाने के लिए दो बढ़िया घोड़े तैयार थे लेखक उतने-उतने घोड़े पर बैठ गया और अपने घोड़े को ईश्वरी के पीछे डाल दिया।

ईश्वरी का घर बिलकुल किले के समान था। उसका इमामबाड़े के समान था अनेक नौकरी थे। हाथी था। ईश्वरी ने लेखक का वही परिचय घर के सभी सदस्यों को दिया, जो रियासत अली का स्टेशन पर दिया था। फिर क्या था, सब लोग लेखक का सम्मान करने लगे। कई तो उन्हें हुजूर-हुजूर भी कहने लगे

धीरे धीरे छुट्टियाँ कैसे बीत गई, पता ही नहीं चला। कई लोग उन्हें स्टेशन छोड़ने आए। लेखक प्रत्येक को इनाम देना चाहता था, लेकिन सामर्थ्य नहीं थी गाड़ी आई तो भरी थी। किसी तरह तीसरे दर्जे में जगह मिली। भीड़ देखकर लेखक को बुरा लग रहा था। डिब्बे में तरह-तरह के लोग। कुछ लोग अंग्रेजी राज्य की प्रशंसा कर रहे थे। एक आदमी की पीठ पर बड़ी गठरी बंधी थी। कहीं जगह न थी। वह दरवाजे के पास खड़ा हो गया। उसकी गठरी लेखक की नाक से छूने लगी

Scanned with CamScanner

लेखक का क्रोध आ गया और उसने धक्के कर दो तमाचे लगा दिए। उसके प्रतिवाद करने पर दो-तीन तमाचे और जड़ दिए। गाड़ी में शोर मच गया सब लोग लेखक को बुरा भला कहने लगे एक ने तीसरे दर्जे में यात्रा करने पर व्यंग्य किया तो दूसरे ने कहा कि उसे मारना तो दिखावा था। वास्तव में उसका कोई कसूर न था क्या अमीर होकर आदमी अपनी इन्सानियत बिल्कुल खो देता है। इस प्रकार सभी लोग कुछ न कुछ कह रहे थे। तभी ईश्वरी ने लेखक से अंग्रेजी में बुरा भला कहा। यहाँ तक ईश्वरी ने उसे अजीब बेवकूफ तक कह डाला। तब लेखक को महसूस हुआ कि अमीर के नशे में वह उस गरीब आदमी का पीटना था, जो बहुत ही गलत था। इन सबकी आलोचना से उसका नशा धीरे-धीरे उतरने लगा था।

Scanned with CamScanner

प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी नशा एक उद्देश्य पूर्ण कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बतलाने का प्रयास किया है कि कई बार आदमी जब अमीर हो जाता है तो वह अपनी इन्सानियत खो देता है मनुष्य को कभी भी अपनी वास्तविक स्थिती नहीं भूलनी चाहिए तथा हमारी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए इस कहानी में कथा नायक के आचरण से लेखक ने यही स्पष्ट किया है कि इस कहानी में कथानायक के आचरण से लेखक ने यही स्पष्ट किया है कि किस प्रकार वह बातें तो आदर्शवादी करता है, किन्तु जब उसे अवसर मिलता है तो वह स्वयं भी समाज के निम्न वर्गों का शोषण करने के लिए तैयार हो जाता है। इसी कारण उसे अपने मित्र ईश्वरी से ईर्ष्या खानी पड़ती है। अतः मनुष्य को प्रत्येक स्थिती में अपने सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए उन पर आचरण भी करना चाहिए

Scanned with CamScanner

सलाम

ओम प्रकाश वाल्मीकि

कहानी का मुख्य पात्र हरिश जो एक दलित जाति से संबंधित है उसका विवाह सुम्मन की बेटी से तय होता है सुम्मन गाँव में उच्च जाति के चौधरी भी उसी में रहते है उस गाँव कि यह परम्परा है कि विवाह के पश्चात दुल्हा अपनी पत्नी के साथ चौधरी के दरवाजे पर सलाम के लिए जाते है। बदले में वो लोग उसे कुछ उपहार देकर अपनी ऊँची जाति होने का घमंड से स्वयं को संतुष्ट महसूस करते है सलाम लेने कि जो परम्परा थी वह अपने को बड़ा साबित करने वाली थी कि तुम हमारे दरवाजे आए हो और अपनी स्थिति को समझो कि तुम क्या हो।

कहानी में दुसरा महत्वपूर्ण पात्र है कमल उपाध्याय जो हरिश के बचपन का साथी है। जिसके मन में उच्च निच, जात-पात का कोई भेद भाव ही नही था। कमल भी अपने मित्र के विवाह में शौक से जाता है। विवाह की रश्म रात में ही हो जाती है। सुबह विदाई का समय आता है। लेकिन सुबह ही कमल चाय पीने गाँव में निकल पड़ता है।

Scanned with CamScanner

उस जगह चौधरी चाय बनाता है जब पर कमल पहुँच कर चाय पीने कि इच्छा जाहिर करता है। तो स्वाभाविक जिज्ञासा के अनुसार चायवाला यह पुछ उठता है कि आज इस गाँव में तुम नए लगते हो कहाँ से और किसके यहाँ आए हो।

कमल बताता है कि आप के गाँव में जो बारात आई है उसी बारात में दुल्हे का मैं मित्र हूँ इस पर चायवाला बोलता है वह बारात चूहड़े के घर आई है तो चूहड़े के घर बारात में आने वाला व्यक्ती भी उसी जात का होगा उसके बारे में यह सब जान कर चायवाले ने कमल को चाय देने से मना कर दिया कि हमारे यहाँ चूहड़े के लिए चाय नही है। इस पर कमल ने चायवाले से बार-बार कहा कि मैं उपाध्याय हूँ और ऊँची जाति का हूँ। परंतु वह चाय नही देता

समाज में जातिवादी जटिलता इतनी जकड़ी हुई है कि उस चायवाले की मानसिकता यह सच स्वीकार करती है की मानवता के नाम पर कोई भी जाती का व्यक्ति भी अपने दलित मित्र की शादि में भी जा सकता है।

Scanned with CamScanner

चायवाले ने कमल को उसी जाति का मानकर उसे धक्का दे दिया जाता है वह अपमानित होकर बारात मे लौट जाता है। विवाह के उपरांत सलाम ठोकने की के मुताबिक हरिश के पास संदेशा आता है कि वहाँ पर लोग तुम्हारे द्वारा किए जाने वाले रस्म का इंतजार कर रहे है चलो और परम्परा का पालन करता परंतु हरीश ने सलाम ठोकने से मना कर दिया हरिश के पिताजी ने यह साफ कह दिया कि हम सलाम पर अपने लड़के को नही भेजेगे लोगो ने उन्हे बहुत समझाया कि वे बड़े लोग है सलाम पर तो जाना ही पड़ेगा और फिर जल मे रहकर मगरमच्छ से बैर रखना तो ठीक नही और इसी बहाने उनके यहा से नए कपड़े-लत्ते बर्तन-भाँडे, नेक दस्तुर आदि आ जाते है।

इस पर हरिश ने स्पष्ट तौर से मना कर दिया और कहा मुझे न ऐसा कपड़े चाहिए, न बर्तन चाहिए और न ही मै उनके पर सलाम ठोकने के लिए जाउगा। आप चाहे जो समझे मैं इस रिवाज को नही मानता हूँ और सलाम की रस्म बंद होनी चाहिए कमल ने हरिश की आँखो में देखा। उसकी आँखो में आत्मसम्मान का आत्मविश्वास चमक रहा था।

Scanned with CamScanner

जिंदगी और गुलाब के फूल

जिंदगी और गुलाब फूल कहानी पारिवारिक संबंधों के ह्रास का जीवंत उदाहरण आर्थिक स्वार्थ इतना बड़ा है कि इसको कोई संबंध, रिश्ता महत्वपूर्ण नहीं देती हमारे समाज में आज भी पैसे को महत्व है।

कहानी का सुबोध नौकरी करता था उसको प्रतीक्षा थी। वह नौकरी करता था तब उसके सभी चीजों को ध्यान दिया जाता है और उसके कमरे कि देखरेख चीजों का साजसजावट सभी का ध्यान रखा जाता था। एक दिनों काम के बोझ उसे अपमानित किया गया था। तब वहां से उसने अपने नौकरी से त्याग दी बैठा और उसने अपनी माँ और बहन उनसे कह सुनी हो गई वह अपनी नौकरी छूट जाने की बात अपनी घरवालों से छुपाता है बाद में पता चले जाने पर उसकी पत्नी उसके माँ और बहन का व्यवहार बदल जाता है। वह अपनी नौकरी के लिए बहुत प्रयत्न करता है लेकिन उसे अच्छी नौकरी नहीं मिलती है।

Scanned with CamScanner

उसकी छोटी बहन अब काम पर जाने लगती है। और अब वह कमाने लगी है तो अपने बड़े भाई कि थोड़ी-सी भी परवाह नहीं करती है। अब घर में सभी चीजे उसकी बहन कि मन कि होती थी उसको खाने में जो पसंद है वही चीजे बनाई जाती थी। सुबोध ने अपने मैले कपड़े धोबी को देता है धोने के लिए तब उसकी बहन उसे रोक देती है। सुबोध को शोभा पसंद करती थी और वह शादि के भी सपने देखा करती थी तब वह सुबोध को बता देती है कि उसके पिताजी विवाह के लिए लड़का देख रहे है और शादि भी कर देंगे तब वह कहता है कि प्यारि कि आग से भी ज्यादा पेट कि आग को बुझाना ज्यादा महत्वपूर्ण है। और शोभा कि शादि दुसरे व्यक्ती से होच जाती है। सुबोध अपनी नौकरी कि तलाश में रहता है।

Scanned with CamScanner

एक दिन वह घुस्से से घर से घर से चला जाता है और बिच मे हि वह सायकल से टकराकर गिर कर उसे चोट आ जाती है वह पार्क मे जाकर सो जाता है। उसे ऐसा लगता है। कि उसकी माँ और बेहन ढूँढते हुए आ जाएंगे लेकिन वह नही आते है। वह खुद हि घर जाता है उसे लगता है कि मेरी माँ में नही हू इसलिए भूखी प्यासी चिंता में डूबी होगी लेकीन ऐसा कुछ भी नही होता है। और बेरोजगार होने कि वजह से उसे अपने बेहन कि शादि भी रह जाती है। सुभोध कि जींदगी गुलाब कि फूलो कि तरह है। जब सुभोध कि नौकरी थी तब उसे मान-सम्मान देते थे उसकी जींदगी मानो गुलाब के फूलो कि तरह थी। अब उसके पास उपहास, अवहेलना है यह मानो काटो कि तरह हो जाती है यह तात्पर्य है।

Scanned with CamScanner

खून का रिश्ता

भीष्म साहनी

बाबूजी एवं वीरजी में वैचारिक मतभेद आधुनिक दृष्टिकोण वाला वीरजी एम ए पास नवयुवक है, जो सगाई ब्याह आदि अवसरों पर धन की एवं किसी भी प्रकार के आडम्बर का विरोधी है, जबकि परम्परागत सोच वाले बाबूजी आडम्बर प्रिय दहेज के समर्थक लगते है। वीरजी अपनी सगाई में किसी तरह का आडम्बर एवं दिखावा पसन्द नही करता है, इसलिए वह सदा रुपये में सगाई करने तथा सगाई में केवल बाबूजी की बात का विरोध करते हुए अपनी बात पर अडिग रहते है। जब बाबूजी ने पगड़ी खोल कर अपने रसूख वालो की दुहाई देते हुए कुछ लोगो को साथ ले जाने की बात कही तो वीरजी अपने चाचा मंगलसेन को बाबूजी के साथ जाने के लिए कहता है। मंगलसेन बाबूजी का चचेरा भाई है, जो फौज से रिटायर होने के बाद बाबूजी के साथ ही रहता है और घर का काम करता है। गरीब मंगलसेन को बाबूजी बात पर अपमानित करते है तथा उसे उचित सम्मान नही देते जो वीरजी को बुरा लगता है। मंगलसेन को विश्वास था कि वह सगाई में जरूर जाएगा और

समधी जी द्वारा ही सगाई देने वाली और मंगलसेन तैयार होकर अपने होने वाले समधी के घर पहुंचे जहा उन दोनो की खूब आवभगत हुई सगाई देने के समय बादाम से भरे कितने ही थाल समधी जी द्वारा लाए गए पर बाबुजी ने केवल सवा रुपये लेने की ही बात कही। अन्त में समधी जी अन्दर से चाँदी का एक थाल लाए जिसमे चाँद की तीन कटोरीयाँ एव चाँदी का रुपया एव चवन्नी रखी हुई थी। वापस आने पर एक चम्मच गायब मिलना थाली को कन्धो पर रखकर मंगलसेन घर पहुचा वीरजी की माँ ने रुमाल हटाकर देखा कि चाँदी की कटोरीया तीन थी, लेकीन दो चम्मच ही थे। सभी को आश्चर्य हुआ की तीसरा चम्मच कहा गया। मंगल सेन की तलाश होना चाँदी का एक चम्मच गायब हो जाने पर सभी को करीब मंगलसेन पर सन्देह हुआ। मंगलसेन द्वारा बार-बार इनकार करने के बावजुद आँगन में उसे खड़ा कर उसकी तलाशी ली गई तो उसकी जेब में मैला रुमाल रिक्शे की गल्ली माचिस और छोटी-सी पेन्सील

Scanned with CamScanner

के अलावा कुछ न मिला, तलाशी लिए
जाने से मंगलसेन अत्यन्त अपमानित महसूस
करने लगा। उसकी साँस फूलने लगी और
वह खड़ा-खड़ा गिर गया। घर के
नौकर मन्नू ने उसे छज्जे पर लिटा
दिया। गोपाल चम्मच का मिल जाना
तिलक की आवाज सुनकर पड़ोस की
हिलाक घर में इकट्ठा होने लगी, तभी
दीवाली का माला आकर चौकी को
चम्मच मनोरमा को देकर चला गया।
कुमारी और सगाई में जाने सम्बन्धी
मुद्दे पर मन्नू ने मंगलसेन से शर्त लगाई
थी, जिसे वह हार चुका था। मन्नू
कहता है कि तनख्वाह मिलने पर वह शर्त
की रकम मंगलसेन को देगा। इसी बिन्दु
पर कहानी समाप्त हो जाती है,
लेकिन खून का रिश्ता तार-तार हो
जाता है। मंगलसेन को यह समझ नहीं
आता कि सगाई में उसका जाना उसके
लिए सम्मान का सूचक था या अपमान
का. क्योंकि सगाई में जाने के कारण
ही उस पर चोरी का आरोप लगाया गया
और अपमानित करके तलाशी ली गई

Scanned with CamScanner

उसने कहा था।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी है।

इस प्रेम कथा कि शुरुआत लहना सिंह से हुई है जब लहना सिंह की आयु 12 वर्ष के करीब थी वह अपने मामा के यहां जाने पर बाजार में मिली 8 साल की लड़की को ताँगे के नीचे आने से बचाता है। फिर दुकान से सौदा लेने के बाद जब वे दोनो वापस घर की तरफ लौटते है। इसी दौरान लहना सिंह, लड़की से पुछता है - तेरी कुडमाई हो गई है। जिससे लड़की शर्माते हुए जवाब में मात्र धत् कहकर चली जाती है। धीरे-धीरे दिन बितते है और यही छेड़छाड़ समय के साथ-साथ प्रेम में बदलने लगता है। परन्तु जब 15 दिन फिर से लहना सिंह लड़की से पूछता है कि तेरी कुडमाई हो गई है। तब लड़की उसे बताती है कि हा हो गई। यह बात सुनते ही लहना सिंह निराश हो जाता है। वह रास्ते में जाने-वाले लोगो से टकराकर अंधे कि उपाधि पाता हुआ घर पहुंचता है। धीरे-धीरे समय बीतता और लहना सिंह 77 राइफल्स का जमादार बन जाता है। उसी राइफल्स में लहना सिंह के बचपन का प्रेम का पति सुबेदार हजारा सिंह और उसके बेटे बोध सिंह रहते है

Scanned with CamScanner

जिसके दौरान उसकी मुलाकात सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी से हो जाती है। वे दोनो अपने बचपन कि यादो को समेटते है। जाते समय हजारा सिंह कि पत्नी, अपने पति और पुत्र की रक्षा का लहना सिंह से वचन लेती है। अंत में लहना सिंह अपनी जान देकर अपने बचपन का प्रेम का वचन रखता है। और हजारा सिंह और उसके बेटे से कहता है कि जाओ उससे कह देना उसने जो कहा था मैने कर दिया

Scanned with CamScanner

एक कहानी यह भी

मन्नू भंडारी

एक कहानी यह भी में लेखिका मन्नू भंडारी के जीवन से जुड़े कुछ संस्मरण है। लेखीका का जन्म मध्य प्रदेश में हुआ लेकिन उसकी यादे अजमेर के दो मंजिले मकान से शुरु होती है घर में उनके पिता का साम्राज्य था उन्होने अंग्रेजी - हिंदि शब्द कोज बनाया किन्तु घर कि आर्थिक दशा में सुधार न हो सका पिता लेखीका बड़ी बहन को उसके गोरे रंग के कारण स्नेह करते थे, जबकी लेखीका का रंग इससे लेखीका हीन भावना से ग्रस्त रहती थी उनकी माँ अनपढ़ थी जो पिता कि आज्ञा को भाग्य और बच्चो की फरमाइशी को पुरा करना अपना फर्ज समझती थी। घर में गोष्ठियाँ चलती रहती थी, जिनमे लेखीका के पिता लेखीका को भी बिठा लेते थे मैट्रिक के बाद लेखीका के पिता लेखीका का परिचय प्राध्यापक शीला अग्रवाल से हुआ जिन्होने लेखीका को साहित्यीक अभिरुचि को बढ़ावा दिया। पिता से टक्कर लेने का सिलसिला राजेंद्र यादव से शादि करने तक चलता रहा एक बार कॉलेज से लेखिका के विरुद्ध कार्यवाही करने का पत्र मिलने पर पिता बहुत क्रोधीत हुए

Scanned with CamScanner

परन्तु कालेज से लौटने पर सब महसूस कर रहे थे। इसी प्रकार हड़ताल करवाने में आगे रहने पर पिता के मित्र ने उन्हें भड़का दिया परंतु जब पिता के अन्तरंग मित्र अंबालाल जी ने जोशीले भाषण के लिए मन्नू को बधाई दी और प्रशंसा की तब पिता ने गर्व महसूस किया मई 1947 में शीला अग्रवाल पर लड़कियों को भड़काने का आरोप लगा और नोटिस दिया गया और थर्ड इयर की कक्षाएं बंद करा दी गई। किन्तु अंततः छात्राओं के विरोध के कारण कक्षाएं खोलनी पड़ी। मन्नू भंडारी के लिए शताब्दि कि सबसे बड़ी उपलब्धि थी 15 अगस्त 1947 की आजादी थी और एक कहानी यह भी से भी बड़ी प्रतीत होता है।

Scanned with CamScanner

ये अंत नहीं

ओम प्रकाश वाल्मीकि

रविवार का दिन है विजय बगीचे में अपने झूले पर बैठा है सामने दो छोटे बच्चे क्रिकेट खेल रहे है तब ही प्रिया चाय लेकर आती है और दोनो साथ बैठ चाय का आनंद उठाती है। चाय पीने के बाद प्रिया रसोई में खाना बनाने चली गई उसके जाने के बाद विजय सोचने लगा। हँसी खुशी और प्यार ही प्यार है जीवन में और वो उस समय ना जाने क्या करने जा रहा था। ओ अतीत में खो गया मैं बचपन से सुन्दर लगता था, आस पडोस की हम उम्र लडकिया मुझे पर जान छिडकती थी। अभी तो पढने में बहुत होशियार हर काम में सब से आगे स्कूल की पढाई खत्म होने के बाद। कॉलेज के पहले वर्ष बहुत अच्छे अंको से पास हुआ मैंने सब से घर में कहा कि मैं अब आगे अच्छी पढाई कर बहुत बड़ा अफसर बनुगा कॉलेज की ही प्रिया नामक की लडकि जो कि बहुत सुन्दर थी मुझे पसन्द करने लगी थी, मुझे भी

Scanned with CamScanner

श्री वो बहुत अच्छी लगती और फिर
हम दोनों ने जिन्दगी भर साथ रहने
का फैसला किया कॉलेज में ही तीन
अच्छे दोस्त बन गये। मैं दिखने में
आकर्षित अच्छे होने के कारण दूसरे वर्ष
कॉलेज के चुनाव में बहुत लोगों में
जीता और अध्यक्ष बना कुछ दिनों तक
सब ठीक चला पर जब अध्यक्ष होने
के कारण दोस्ती कॉलेज के बाहर उसी
इलाके के बड़े लोगों से होने लगी तब
मुझे आवण देने और दूसरे कार्यों की व्यवस्था
के लिए बुलाया जाता, अब कुछ अच्छा
चल रहा था। ये सब देख पिता और
मेरे दोस्तों ने सलाह दी की मैं पढ़ाई
में ध्यान दूँ ना की नेताशिरी में न पढ़े
पर मैं मजाक में ही बोलने लगा कोई नहीं
अब तो लीडर ही बनूँगा। फिर जब माता-
पिता ने ये देखा-सुना तो उनकी भी चिंताएँ
बढ़ने लगी पर मैं हर काम में होशियार भी
था जब तक कॉलेज में था चुनाव जीतता
रहा, पर पढ़ाई से थोड़ा दूर हो चुका था।
कॉलेज की पढ़ाई खत्म होने के कुछ दिनों
बाद में थोड़ा चिंतित होने लगा कि मैंने क्या

सोचा था और मै किस दिशा मे चला गया लेकिन ना पिया ने मेरा साथ छोड़ा और ना ही दोस्तो ने। मैने सोचा कोई बात नही दो साल ही तो ठीक से पढ़ा नही पर अब अच्छी पढाई कर कुछ बन के दिखाऊगा, अगले तीन सालो तक मैने पढाई करता रहा पर कही काम याबी ना मिली पिया अब भी मेरे एक अफसर बनाने का इंतजार कर रही थी दोस्त भी मेरा मुझे हर तरह से मदद करते। माँ हर वक्त मुझसे प्यार से बात करती पिताजी हर वक्त प्रोत्साहित करते पर जब भी मैं पढता मुझे कॉलेज की अध्यक्षता याद आ जाती। मैं वापस उन्ही बड़ी लोगो से कभी-कभी मिलने जाता कि मुझे फिर क्षेत्र चूनावो मे खड़ा हो जाना पढे लिखे ना होकर भी मजदूरी कर अपने और परीवार का पेट पालते है और खुश रहते है, उनके जीवन से तो भगवान ने तुझे अच्छा जीवन दिया है। तुझे भगवान को शुक्रिया कहना चाहिए और कोई समस्या हो तो परिवार से दोस्तो से शेयर करना चाहिए माँ-पिता ने सही कहा, मैं बहुत पछता रहा था माँ को बहुत रोते देखा और मेरी इस नादानी से पिताजी को हर

तो ये कदम उठा रहा था। जब कि क्या कमी थी मुझे बस कामयाबी ही नही मिल रही थी, वो आज नही तो कल मिल ही जाती, मैं फिर से उठा और पढ़ाई में लग गया पर बहुत बार निराशा हाथ लगी पर हिम्मत नही हारी आखिर कुछ समय में मेरी अच्छी नौकरी लग गई फिर प्रिया से शादि हो गई जिंदगी खुशहाल हो गई मेरे ३ नो दोस्तो ने भी अपने घर बसा लिए पर दोस्ती कम ना हुई तब ही बॉल विजय के पास आया, उसकी बेटी ने आवाज लगाई पापा बॉल दो ना विजय अतीत से बाहर और अपनी बेटी को गोद में उठा लिया और गले से लगा लिया

Scanned with CamScanner

सिक्का बदल गया
सिक्का कहानी का सारांश कृष्णा सोबती

सिक्का बदल गया कृष्णा सोबती द्वारा लिखी गई सिक्का बदल गया, कृष्णा सोबती जी द्वारा लिखी गयी प्रसिद्ध कहानी है। सिक्का बदल गया का प्रकाशन वर्ष 1948 है इस कहानी के माध्यम से अपने भारत विभाजन के समय उभरने वाली परिस्थितियो का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। पीढीयो से जो हिन्दू मुसलमान कभी आपस में बंधुत्व की भावना से रह रहे थे एक दुसरे के सुख, दुःख में साथ थे एकाएक अलग होने से विवश हो गए और उनके दिलो में परस्पर घृणा, हिंसा व अविश्वास कि भावना उत्पन्न हो गयी, उन्हे अपनी - अपनी जन्मभूमि या निवास भूमि छोडने को विवश होना पड़ा।

साम्प्रदायिक भावनाओ से प्रेरित होकर शाहनी का पुरवत पालित बालक शेरा भी उसकी हत्या साजिश में शामिल हो जाता है लेकिन मन में उठे विचारो के कारण हत्या नही कर पाता है। व शेरा है वह शहानी का अपना पूत नही है बस उसने पालन पोषण किया हुआ है। अपने अकेले पन को दूर करने के लिए उसका पालन-पोषण करता है।

Scanned with CamScanner

शाहनी कहानी के प्रारंभ में सुबह चनाब में नहाने जाती है। पिछले वर्षों से शाहनी इस प्रकार सबेरे चनाब के ठंडे पानी से नहाती है। पर उसे आजकल कुछ बदला-बदला लग रहा है। वह नहाकर शेरा के घर जाती है शेरा को शाहनी ने बचपन से पाला, पोसा है, पर आज शेरा का मनोभाव उसे समझ नहीं आता है शेरा भी अन्दर ही अन्दर शाहनी की हत्या कर हवेली पर कब्जा करना चाहता है। लेकिन उसे शाहनी द्वारा किये गए उपकारों व स्नेह की याद आ जाती है। शेरा शाहनी को घर तक छोड़ने जाता है। शाहनी वातावरण में फैले इस गंभीरता को परखकर उदास हो जाता है। सारा दिन शाहनी उदास रहती है। कभी वह हवेली में बहू बन कर आई थी, आज अपना सारा अधिकार खो रही है अचानक रसूली आकर शाहनी को दूर के आने कि सूचना देता है। वह समझ जाती है कि अब यह घर छोड़ने का समय आ गया है। बहुत सारे गाँव वाले उसे सान्त्वना देने आये है। गाँववालों के विचित्र व्यवहार को देखकर वह व्यथित हो जाती है और मन में टीस विवश लिए सबके प्रती ममता का भाव लिए चल पड़ती है।

Scanned with CamScanner

लखीका कृष्णा सीवती तीनों अपनी कलम द्वारा
आज विभाजन के दर्द को व्यक्त करने में
सफल रही है। वही साहनी जो शेरा को
पुत्रवत पालती रही और कक्षों को स्नेहपूर्वक
सहायता करती रही आज वही लोग धार्मिक
आग जलकर उसे अपने घर व गाँव छोड़ने को
मजबूर कर रहे लोग उसकी धन संपत्ति
लूटना चाहते है। थानेदार दाउद खाँ शाहनी
कि हालत देखकर विचलित हो जाता है अपराध
भाव से भरकर कहते है कि शाहनी उन
लोगो के बारे में गलत न सोचे यदी वे
लोग शाहनी के लिए कुछ करने कि स्थिती
में होते तो जरूर करते पर हालत के
हाथ वे सब निराश है राज बदल चुका है
सिक्का बदल चुका है।
रात को साहनी कैप में पहुँचकर जब
जमीन पर लेटती है तो सोचती है कि सचमुच
ही राज बदल गया है, पर सिक्का कैसे बदल
सकता है। सिक्का तो मैं अपने गाँव अपने
हवेली में ही छोड़ आई हूँ शाहनी की आखे
फिर गीली हो जाती है। फसल से लद-गाँवो
में खूनी संघर्ष जारी था। इस ही राज
का बदलना या सिक्के का बदलना भी कहा जाता
है।

निष्कर्ष :-

कहानीयो मे कुछ कहानिया दलित है। और कुछ सामाजीक भी है। प्रेमचंद जी की कहानी है नशा' जो कि एक दलित कहानी है उसमे सिर्फ उसे नशा पैसो का हो जाता है।

उषा प्रियंवदा जी की कहानी है जिंदगी और गुलाब के फूल उस कहानी है। एक बेरोजगार व्यक्ती कि कहानी है। या फिर ऐसे कहे कि समाज मे रहने नौकरी भी होना कितना महत्वपूर्ण होता सुबोध की नौकरी चली गई तो उसकी कोई आत्मीयता हि समाज हो गई थी। और ~~उसे~~ उसे अपने हि परिवार में अवलंबीत रहना पड़ रहा था। निष्कर्ष यही निकलता है कि समाज में या घर में रहने के लिए अपने पास पैसा रहना एक अच्छी नौकरी रहना महत्वपूर्ण है।

ओमप्रकाश वाल्मीकी जी की दलित कहानी है। सलाम जो कि एक दलित परिवार कि कहानी है लेकीन वह उस प्रथा का विरोध करते नजर आते है। इस कहानी में जो कि एक

Scanned with CamScanner

दलित परिवार का लड़का का शादि
के पश्चात एक उच्च कुल के व्यक्ती
के घर जाकर उसे सलाम करके
आना यह है। लेकीन यह प्रथा
उसके विताली और वह तोड़ना चाहता
है समाज उसे इस प्रथा से बाहर नही
आने देना चाहते है। और इस
कहानि से यही निष्कर्ष निकलता है
कि चाहे दलित कितने भी प्रयत्न करके
बाहर आना चाहते है इसी प्रथा ओ से
लेकिन समाज उसे आने नही देता है।
वापसी यह कहानी एक ऐसे
व्यक्ती जो कि अपने काम से निष्ठा
है। और उसकी घर में उसकी नही
बनते माने जाती इस कहानी में यही
बताया गया है जो व्यक्ती काम करता
है घर चलाता है उसकी हि मानी जाती
है। और वही गजाधर बाबू के साथ
हो रहा था। वह रेल्वे में थे और
सेवानिवृत्ती के पश्चात वह अपने घर में हि
एक परदेशी व्यक्ती कि तरह महसूस कर रहे
थे। और उनके जाने के बाद पर भी
सभी प्रसन्न हो जाते है।

Scanned with CamScanner

सिक्का बदल गया कहानी उषाप्रियंवदा जी
कि है। इस कहानी में उस वक्त की
तब विभाजन हो रहा था और सभी
को अपने गाँव छोड़कर जाने पड़ रहे
थे अब समय बदल रहा था और
उसे के साथ - साथ उन्हें दुःखी होने
म भी उन्हें अपना गाँव छोड़कर जाना
पड़ रहा था यही देख कर लेखक कहते
सिक्का बदल गया

ठाकुर का कुँआ यह कहानी
भी दलित है। इस कहानी में वही
ारे चीजें है जो कि पहले से दलितों
साथ किम जाते थे। जीस कुम
पानी दलित लिम जाते थे उस
कुम में एक कुत्ता मर चुका है।
किन उसे फिर भी दुसरा पानी पिने कि
जाजत नहीं थी और इस कहानी का
हत्वपूर्ण हिस्सा है। और मेरी प्रथमि
मात में आज भी चल रही है।

नौ बार यह कहानी भी दलित
के है। जो कि वेबसाइड पर शादि
लिम प्रस्ताव देखता है लेकिन वहा पर मेरे
ते भी होती है, जो कि लिखी बेती

लेकिन फिर भी सब कुछ तय होने के बावजूद उसे अ सीर्फ जीती कि वजह से हि ठुकराया जाता है। कितने भी पढे लिखे क्यो नो हो जाती का बंधन आता हि है।

चीफ कि दावत यह भीष्म सहानी जी कि कहानी है। और वह इस कहानी के माध्यम से जानना चाहता है कि व्यक्ती को अपनी उच्च शिक्षा हो या अच्छी नौकरी हो उसे अपने माता - पिता को नही भूलना चाहिए और और उनसे अच्छा बर्ताव रखना चाहिए। जो की श्यामनाथ नही करता है। अपने माँ की हि सबके सामने अच्छा बर्ताव नहि करता है।

खून का रिश्ता कहानी में नम सोच के साथ यह कहानी जो कि दहेज प्रथा का विरोधी सा प्रतती होता है। और वह जब सामने से दहेज माँगा जाता है तो वह दहेज लेने से इनकार कर देता है। और सभी कहानीयो में यही सीख मिलती है दलितो के प्रती भावनाए समाजव्यवस्था कैसी है यही दिखाई देता है।

Scanned with CamScanner

PAGE No.
DATE / /

श्रीमती मणिबेन एम. एम पी. शाह विमेन्स कॉलेज ऑफ आर्टस एंड कॉमर्स.

एम. ए. हिंदी (चतुर्थ सत्र)

इंटर्नशिप प्रोजेक्ट - जून - 2021

नाम :- शाह मुबिना बेगम मदार दरवेश

रोल नंबर :- 04.

विषय :- कहानियों की समीक्षा.

* * * *
* * *
* *
*
*

:सूची:-

अनुक्रमांक	कहानी का नाम	लेखक का नाम :-
1	गुण्डा कहानी	जयशंकर प्रसाद
2	पत्नी कहानी	जैनेन्द्र कुमार
3	पाजेब कहानी	जैनेन्द्र कुमार
4	आकाशदीप कहानी	जयशंकर प्रसाद
5	कफन कहानी	मुंशी प्रेमचंद
6	उसने कहा था	पंडित चन्द्रधर शर्मा
7	बड़े घर की बेटी	मुंशी प्रेमचंद
8	दासी कहानी	जयशंकर प्रसाद
9	बड़े भाई साहब कहानी	मुंशी प्रेमचंद
10	ईदगाह कहानी	मुंशी प्रेमचंद
11	राजा निरबंसिया	कमलेश्वर द्वारा
12	दूध का दाम कहानी	मुंशी प्रेमचंद
13	रोटी कहानी	सुभद्रा कुमारी चौहान
14	अपना-अपना भाग्य	जैनेंद्र कुमार
15	दो कलाकार	मन्नू भण्डारी

* प्रस्तावना *

एम.ए के चतुर्थ सत्र में हमें कॉलेज की तरफ से इंटर्नशिप करनी थी परंतु कॉविड 19 की वजह से हम लोग स्कूल में जा इंटर्नशिप नहीं कर पाए, फिर इसकी जगह हमें हमारे अध्यक्ष ने हमें 15 कहानियों की समीक्षा करने के लिए कहा। आरंभ में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि मेरे यहाँ से कॉलेज दूर था और मैं जा नहीं सकती थी और ना ही मेरे पास मुबाईल की सुविधा थी फिर भी किसी तरह मैंने कुछ कहानियाँ चुनी और एक सहेली के माध्यम से उसके ग्रुप में भेजी। कुछ कहानियों की तबादियों के बाद आखिर मैंने कहानियों की समीक्षा की जो के कुछ इस प्रकार है।

कहानियों की समीक्षा करते समय बहुत कठिनाईयाँ आई, फिर मेरे गुरुजन ने मेरी सहायता की। मैं ने लिखना आरंभ किया तो फिर मुश्किल नहीं लगी। चूंकी मुझे कहानियों के पहले से पढ़ने का शौक था। तो वह सारी कहानियाँ जो मैंने पहले पढ़ी थी उन्हीं पर समीक्षा की। उदाहरण गुण्डा कहानी जिसमें एक मनुष्य गुण्डा होने के बावजूद अपने कर्तव्य नहीं भूलता और जरूरतमंद लोगों की मदद करता है ज्यादा तर कहानियाँ मैंने प्रेमचंद जी की ली है। क्योंकि उनकी कहानियाँ गरीब लोगों की पीड़ा का वर्णन

इस प्रकार रहता है जैसे वह हमारे आस-पास घटित हो रहा हो। उन्होंने हर विषय को लेकर कहानीयां लिखी है। जैसे जानवर के ऊपर "दो बैल, गिल्ली और किसानों के ऊपर पूस की रात और स्त्री को लेकर कफन, बड़े घर की बेटी इत्यादि।

इन सब के अतिरिक्त मैं ने जयशंकरप्रसाद जैनेन्द्र, पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, मन्नूभंडारी, कमलेश्वर और सुभद्रा कुमारी चौहान इत्यादि की कहानियां पर समीक्षा की है। इन सब की कहानीयों में भी मानवता के प्रति जागृति लाने का संदेश दिया गया है।

①

गुण्डा कहानी की समीक्षा

जयशंकर प्रसाद जी एक समूचे योग तथा समस्त भाव धारा में तारतम्यता लाने के प्रयास में अपनी संवेदनाओं को विस्तृत कर कथा में चारुता उपस्थित कर देते हैं। प्रेम की उदारता और कर्तव्य की महानता व्यक्तित्व और राष्ट्रीयता में अद्भुत सामंजस्य कर कल्पना के रंगों में सजाकर आदर्श और यथार्थ के समन्वय से इस कहानी का निर्माण किया गया है। विद्वानों ने प्रसाद की गुंडा कहानी की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है कहानी कला की दृष्टि से गुण्डा कहानी की समीक्षा निम्नलिखित है।

कथानक :-

इस कहानी का कथानक अत्यंत सशक्त एंव मार्मिक है। कथानक का आधार सांस्कृतिक चेतना मनोवैज्ञानिक सौंदर्य एंव प्रेम तथा कर्तव्य के अनुसार संयोजन से है। कहानी की कथावस्तु में क्रमबद्ध के साथ-साथ कौतूहल एंव चमत्कार का भी महत्व है। इस कहानी की कथावस्तु बनारस से संबंधित है। जिसमें तमाम राजनीतिक उथल-पुथल के बीच नान्हकू सिंह जैसे नामधारी गुंडे के स्वर पूर्ण बलिदान की कथा है।

यह बलिदान सामान्य ना होकर विशेष हो जाता है। क्योंकि उसने प्रमाण पद की रक्षा की है। नन्हकू सिंह एक प्रतिष्ठित जमींदार का पुत्र था। अपने जीवन कि किसी अलक्ष्य

अभिलाषा को ना पूरी होने पर वह विरक्त हो गया। लेकिन वह विराग उसे सन्यासी ना बना सका। वह एक साथी गुंडा बन गया वेश्यालय में जना जुआ खेलना तथा लोगों की मदद करना उसका शौक था। वह जुए में जीती गई धनराशि गरीबों में बांटता था।

वेश्यालय में मुजरा सुनने का शौकीन अनुकूकुड़ा मौलवी के क्रूर आचरण से क्रुद्ध होकर उन्हें बनारसी झापड़ मारता है। कोबरा अंग्रेजों की चापलूसी करने वाला दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति है वह अंग्रेज रेजिडेंट के पास जाकर पूरा वेतन सुनाता है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण:-

गुंडा कहानी के पात्र बहुत ही सशक्त है इस के पात्रों में नानकू सिंह बौद्ध सिंह मलूक की दुलारी कुकड़ा मौलवी पन्ना राजा चेतन सिंह लेफ्टिनेंट इंस्पेक्टर तथा मनिहार सिंह आदि हैं। नन्हकू सिंह बाबू निरंजन सिंह के पुत्र हैं साथ ही पन्ना से प्रेम करते हैं लेकिन प्रेम में असफल होने के बाद गुंडा का रूप धारण कर लेते हैं। पन्ना के प्राप्त ना कर सकने के बावजूद उनकी प्रेम भावना पन्ना के प्रति कम नहीं होती है।

संकटा पन्ने एवं उसके पुत्र चेतन सिंह को बचाने के लिए नानकू सिंह अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। यही उनके चरित्र का सर्वाधिक उदात्त पक्ष है। प्रसाद जी नन्हकू

सिंह का चित्रण निम्न शब्दों मे करते है।

वह 50 वर्ष से ऊपर था। तब भी युवकों से अधिक बलिष्ट और दृढ़ था चमड़े पर झुर्रियां नहीं पड़ी थी। उसका रंग सांवला सांप की तरह चिकना और चमकीला था। उसकी ना पूरी धोती धोती का लाल रेशमी किनारा दूर से भी ध्यान आकर्षित करता था।

वह धार्मिक प्रवृत्ति की संगीत प्रेमी नारी है यद्यपि पद्मा और मनकू सिंह मे पारस्परिक प्रेम है किंतु कन्या का विवाह बलवंत सिंह से हो जाता है। इस प्रकार हम कह सकते है गुंडा कहानी मे प्रसाद जी ने जिन चरित्रों की सृष्टि की है वह कहानी की कथावस्तु को सशक्त बनाने मे पूर्णता समर्थ है।

कथोपकथन :-

~~कथाकार~~ कथोपकथन कहानी के विकास मे अधिक सहायक नहीं होता किंतु भावों और विचारों के आदान-प्रदान के लिए इसकी आवश्यकता अनिवार्य होती है गुंडा कहानी मे संवादों की बहुलता है लेकिन इसके संवाद कथा को गति प्रदान करते है साथ ही इनके कारण सौंदर्य मे चारुता उत्पन्न करते है कथाकथन मे कहीं-कहीं उदासीनता और वैराग्य की तो कहीं छोड़ व्यंग की अभिव्यक्ति हुई है। ~~आप~~

देशकाल एवं वातावरण :-

कथाकार कहानी की भाव प्रवणता मे वृद्धि करने के लिए वातावरण की सृष्टि करता है।

इस कहानी का वातावरण 18 वीं शताब्दी का है। यद्यपि यह काल्पनिक है फिर भी कल्पना बहुत उच्च कोटि की है। लेखक की विशेषता है कि वह अतीत की किसी घटना में कल्पना रंग भरकर उसे वर्तमान से जोड़ देते हैं। के प्रारंभ में लेखक ने वातावरण का निर्माण करते हुए लिखा है। आप

भाषा शैली :-

जयशंकर प्रसाद जी की भाषा परिष्कृत कलात्मक एवं संस्कृत निष्ठ है तथा ललित शैली का माधुर्य, नाद की एकता और काव्य मई भाषा का वर्णनों में प्रयोग उसकी चारुता को और बढ़ा देता है कहानी के उदात्त एवं ऐतिहासिक धरातल के अनुरूप भाव चित्र एवं वातावरण उपस्थित करने में प्रसाद जी की ~~कहानी~~ कहानी पूर्णतया समर्थ है। भाषा शैली का स्वाभाविक कलात्मक एवं सशक्त कविता पूर्ण चित्रण मोहक अलंकार विधान और तत्सम शब्द भाषा के कारण या कहानी प्रसाद की प्रतिनिधि कहानी कही जा सकती है।

गुंडा कहानी का उद्देश्य :-

गुण्डा कहानी इनके उदात्त रूप को सामने लाती है एक ऐसा प्रेम जिसे वासना नहीं केवल भावना है। कहानी का नायक नन्हकू सिंह अपने ~~अ~~ प्रेम को प्राप्त न कर सकने के कारण अपना जीवन उद्देश्य बदल देता है। लेकिन चरित्र को नहीं गिराता है। वह प्रारंभिक प्रेम के ताप को जीवन पर्यंत महसूस करता है और

अविवाहित रहता है वह दुलारी से कहता है कि हृदय को मैं बेकार समझ कर तो उसे मेरे लिए फिर रहा है।

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते कि गुण्डा कहानी भाव प्रधान आदर्शवाद की कहानी है। इस कहानी में प्रेम करुणा और आनंद के पूर्व संयोजन पर सामाजिक मर्यादाओं तथा मान्यताओं के प्रति विवेकपूर्ण दृष्टिकोण को दिखाया गया है।

(2)

पत्नी कहानी की समीक्षा

जैनेन्द्र कुमार एक उपन्यासकार, कहानीकार निबन्धकार तथा प्रसिद्ध विचारक थे। उनका यह रूप उनके निबन्धों में दिखाई देता है। जैनेन्द्र की भाषा व्यावहारिक तत्सम शब्द प्रधान तथा विषयानुकूल है। उसमें यथावश्यक मुहावरों का प्रयोग हुआ है

चिन्तक होने के कारण कहीं-कहीं वाक्यों गंभीरता दिखाई देती है। आपकी शैली विचारात्मक मनोविश्लेषणात्मक तथा व्यंग्यात्मक है। इसी प्रकार पत्नी कहानी में पति-पत्नि की मानसिक स्थिति का चित्र प्रस्तुत किया है। निम्नलिखित रूप में पत्नी कहानी की समीक्षा है।

कथा:-

बीस-बाइस साल की सुनन्दा अपने कालिन्दीचरण के साथ शहर के एक 'तिरस्कृत' मकान के दूसरे तल्ले में रहती थी। पति समाज सेवी है। साथ ही अत्यन्त विनम्र शांति एवं अहिंसा में विश्वास करता है। पर वह अपनी व्यस्तता के कारण सुनन्दा का कुछ भी ध्यान नहीं रखता है। उसके मन में ~~प्रतिक्षण~~ सुनन्दा अपने पति के इस उपेक्षा के कारण भीतर ही भीतर टूटती जा रही है। उसके मन में प्रतिक्षण प्रतिक्रिया उभरती है पर वह अपने विरोधी भावों को शान्त करती रहती है और पति के प्रति सहानुभूति का अनुभव करती है। उसका कार्य केवल पति के लिए भोजन बनाने की तैयारी में और उसके आने की प्रतीक्षा करना

रह गया है। कभी-कभी उसे खीझ भी आती है जबकि कालिन्दीचरण को आने में काफी देर हो जाती है। वह चाहती है कि पति के आने पर ही वह भोजन बनाये पर उसके नहीं आने पर वह मन बोल उठती है - "नहीं अब वह रोटी बना ही देगी" इसी बीच कालिन्दी-चरण अपने सहयोगियों के साथ घर में प्रवेश करता है और सुनन्दा से बिना मुँह के लिए भोजन आदि बनाने की बात कि बिना बहस में उलझ जाता है। कमरे में चल रहे वाद-विवाद की आवाज सुनन्दा के कान में पड़ती है पर वह अपने काम में जुटी रहती है। अनन्त: वह रोटी बनाकर अंगीठी में पतीली डालकर, अन्यमनस्क भाव से बैठ जाती है अज्ञेय ने सुनन्दा की इस अवस्था का बड़ा ही सजीव चित्र अंकित किया है।

स्पष्ट है कि कहानीकार ने अत्यन्त संक्षेप में और कलात्मक तथा सांकेतिक शैली द्वारा पाठकों को इस तथ्य अवगत करा दिया कि सुनन्दा की मानसिक स्थिति कैसी है? किन्तु इतना कुछ होने पर भी उसके मन में पति के महान कार्यों के प्रति गौरव का भाव है। यद्यपि वह कुछ नहीं जानती कि भारत माता या स्वतन्त्रता का क्या अर्थ होता है, पर वह इच्छा रखती है कि उसे यदि उसका पति इन बातों को समझाता है तो वह ले ली परंतु उसे दुख है क्योंकि ऐसा कुछ भी नहीं होता। इस से पता चलता है कि जैनेन्द्र जी ने पति-पत्नि की मानसिक स्थिति का जो चित्र प्रस्तुत किया वह बड़ा ही सजीव है।

पात्र और चरित्र चित्रण :-

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी जैनेन्द्र की अपनी विशेषता है। कहानीकार ने पात्रों के विषय में अपनी ओर से कुछ नहीं कहा है। कहानी की घटनाएं ही पात्रों के विषय में बहुत कुछ जानकारी पाठकों को दे देती है। कहानी के दो ही प्रमुख पात्र है। सुनन्दा और कालिन्दीचरण। कहानीकार ने इन दोनों के चरित्र में अभूत पूर्व संघर्ष दिखाया है जो चरित्र-चित्रण की विशेषता है। सुनन्दा को पति द्वारा अपने प्रति दिखाई गयी उपेक्षा के प्रति सदैव मन में दुख होता है फिर भी वह अपनी भावनाओं को छुपाए रखती है तथा वह अपने पति के प्रति आदर और प्रेम भाव से युक्त आचरण करती है। तथा वह दूसरे पुरुष की कल्पना भी नहीं करती और न घर छोड़कर ही कहीं जाना चाहती है।

संवाद योजना :-

"पत्नी" कहानी के संवाद नाटकीय और कलात्मक है तथा मनोविज्ञान के धरातल पर पुष्ट होने के कारण वे लघुकाय होते हुए अत्यन्त नुकीले तथा प्रभावपूर्ण बन पड़े है। एक उदाहरण दृष्टि में है।

"यह तुम से किस ने कहा था कि खाना वहाँ ले आओ? मैंने क्या कहा था? सुननया कुछ नहीं बोली।

"चलो उठो लाओ थाली। किसी को यहाँ का खाना नहीं खाना है हम होटल में जायेंगे।

वातावरण चित्रण :-

जैनेन्द्र जी ने वातावरण का चित्रण भी सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया है। स्पष्ट में वातावरण की सृष्टि नहीं है। वातावरण संकेतिक है। कारण, वे बाह्य वातावरण के स्थान पर अन्तः वातावरण पर विशेष बल देते हैं। जैनेन्द्र जी ने प्रायः मनोवैज्ञानिक वातावरण को ही प्रस्तुत किया है। यहाँ 'पत्नी' कहानी से वातावरण चित्रण का अच्छा उदाहरण भी प्रस्तुत किया है।

भाषा शैली :-

कहानी की भाषा की सफलता उसकी सरलता, सटीकता और व्यंजकता में निहित होती है। 'पत्नी' कहानी की भाषा में ये सभी गुण विद्यमान है। कहानी की शैली मिश्रित शैली है।

शीर्षक और उद्देश्य :-

जैनेन्द्र जी की कहानी का शीर्षक अत्यन्त सटीक पर व्यंजक है। 'पत्नी' कहानी का शीर्षक भी बहुत अधिक व्याख्या की अपेक्षा रखता है। कहानीकार ने प्रकारान्तर से जैसे व्यंग्य किया है कि चूँकि वह पत्नी है और उसे सब कुछ सहना है।

'पत्नी' कहानी में शीर्षक कहानी के माध्यम से जैनेन्द्र जी का उद्देश्य एक मध्यवर्गीय परिवार में रह रहे पति-पत्नी

के जीवन की विशेष स्थिति का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उद्घाटन करता रहा है। और इसमें उन्हें पूरी सफलता मिली है जो उनकी कहानियों का शिल्पगत वैशिष्ट्य है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षस्वरूप कह सकते हैं कि अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रस्तुत कहानी न केवल जैनेन्द्र-कथा साहित्य में, वरन हिन्दी के मनोवैज्ञानिक कहानी-साहित्य में विशेष को अधिकारी है। कम से कम स्त्री मनोविज्ञान की दृष्टि से तो यह महत्वपूर्ण है ही। निःसन्देह यह एक सशक्त और सगुण कहानी है।

③ # पाजेब कहानी की समीक्षा

पाजेब जैनेन्द्र कुमार जी द्वारा लिखी गयी एक बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है। जैनेन्द्र जी के साहित्य में दर्शन और मनोविज्ञान का समावेश है। इनकी कहानियों में बाहरी और स्थूल कार्यकलापों की अपेक्षा अंतर्मन के उद्घाटन पर विशेष जोर दिया गया है। इसीलिए इनकी कहानियों में व्यक्तित्व की प्रधानता है। बच्चों में देखा देखी की आदत होती है। यही नकल का रूप ले लेती है।

कथानक :-

"पाजेब" कहानी में पाजेब ही कहानी के केन्द्र में है। कहानी का आरम्भ पाजेब उल्लेख के साथ ही होता है। मुन्नी पाजेब पहनना चाहती है और अपने पिता से उसके लिए जिद्द करती है। यह देखकर आशुतोष भी बाइसिकल लेने के लिए जिद्द करता है।

बालहठ से प्रारम्भ होने वाली यह एक मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। कथा का विकास और विस्तार इसका पाजेब खोजाने के बाद दिखाई देता है। मुन्नी की माँ उसके पिता को बताती है कि एक पैर की पाजेब नहीं मिल रही है। उसको संदेह नौकर बंसी पर है किन्तु पिता को उनके आठ वर्ष के पुत्र आशुतोष पर संदेह है कि आशुतोष अपने पतंग का शौक पूरा करने के लिए पाजेब चुरा सकता है। इसके बाद पाजेब की तलाश शुरू होती है। पिता तर्कपूर्ण सवालात पूछकर

बालक आशुतोष को इस चोरी को स्वीकार करने के लिए दबाव डालते है जो उसने की ही नहीं है।

इसके बाद आशुतोष को बलात पतंग वाले के पास भेजने का प्रबंध होता है। परंतु आशुतोष वहाँ जाने से मना कर देता है कि पाजेब पतंग वाले के पास है ही नहीं तो वह कहाँ से देगा घर वालों को लगता है कि पतंग वाले ने शायद किसी को पाजेब बेच दि होगी। इस पर आशुतोष को बिगैर गलती के सज़ा मिलती है। कुछ दिनों बाद बुआ का आगमन होता होता है। और बात-बात में बुआ एक छोटा सा बक्सा खोलकर वही पाजेब निकाल कर आशुतोष के पिता को देती है और कहती है कि ~~अगली~~ पिछली बार जब वह आई थी तब पाजेब गलती से ~~उसने~~ उनके साथ चली गई थी।

इस तरह कहानी विकसित होकर मध्य से चरम सीमा पहुँचती है। कहानी का अंत चरमबिन्दु पर ही होता है। पाजेब का पता चलते ही आशुतोष दोष मुक्त हो जाता है।

पात्र और चरित्र चित्रण :-

'पाजेब' कहानी का प्रमुख पात्र आशुतोष है। वह आठ वर्ष का बालक है। उस पर पाजेब चुराने का शक है। उसकी छोटी बहन मुन्नी चार वर्ष की है। वह पायल पहनना चाहती है। पाजेब के गुम होने पर उसके बारे में पूछ-ताछ करने वाले उसके पिता है। इन सब के अतिरिक्त कहानी में आशुतोष की

माँ, नौकर बंसी आशुतोष का पड़ोसी छन्न, उसकी माँ, लेखक का भाई प्रकाश, लेखक की बहन बुआ, मुन्नी की सहेली ईरा तथा शीला आदि अन्य पात्र है।

कथोपकथन या संवाद :-

कहानी में कथोपकथन या संवाद अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। इनका प्रयोग कहानीकार कथानक के विकास तथा पात्रों की चारित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए करता है। जैनेन्द्र कुमार जी ने संवाद की कहानी पाजेब में संवाद का विशेष स्थान प्राप्त है। उदाहरण :- अच्छा तुमने कहाँ से उड़ाई थी? "पड़ी मिली थी?" "और फिर नीचे जाकर वह तुमने छन्न को दिखाई?" "हाँ।" "फिर उसी ने कहा कि इसे बेचेंगे?" हाँ!" "कहाँ बेचने को कहा?" इत्यादि।

भाषा शैली :-

कहानी की सफलता उसकी भाषा में होती है। जैनेन्द्र जी यहाँ खड़ी बोली का प्रयोग किया है। साथ ही पाजेब कहानी आत्मकथा शैली में लिखी गयी है। यह एक बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है।

पाजेब कहानी का उद्देश्य :-

पाजेब कहानी के माध्यम से जैनेन्द्र कुमार जी ने पाठकों को यह दिखाना चाहते है कि माता पिता या अभिभावक कभी कभी बिना सोचे समझे अपने अनुभव या या आयु के महत्व को

दर्शाने के लिए बच्चों पर ऐसे आरोप थोप देते हैं जो असत्य होते हैं। बच्चे भय के कारण उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। उन्हें स्वयं भी दुःख होता है, लेकिन अपने बड़ों के सामने वे व्यक्त नहीं कर पाते हैं। अतः माता-पिता को बिना सोचे समझे बच्चों पर संदेह नहीं करना चाहिए। इससे बच्चों के मन में माता-पिता के लिए गलत धारणाएं बन जाती हैं। वह माता-पिता को शत्रु भी समझने लगते हैं। इस प्रकार पाजेब बालमनोवैज्ञानिक के चित्रण के साथ-साथ बच्चों पर बिना सोचे समझे शक करने वाले माता पिताओं पर एक व्यंग्य है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि जैनेन्द्र जी ने अपनी कहानी पाजेब के माध्यम से बच्चों की मनोदशा दर्शाया है कि किस प्रकार बिना सोचे समझे माता पिता बच्चों पर शक कि बिना उसे कठहरे में खड़ा कर देते हैं। जब इस बच्चों पर उलटा असर पड़ता है। और वह गलत दिशा कि ओर बढ़ने लगते हैं।

4

आकाशदीप कहानी की समीक्षा

आकाशदीप कहानी छायावादी कवि एवं आधुनिक कहानीकार जयशंकर प्रसाद की सर्वाधिक चर्चित कहानी रही है। इसमें कहानीकार ने बड़ी सजगता के साथ इतिहास और कल्पना का सुन्दर सामंजस्य बिठाया है। प्रेम और कर्तव्य के अन्तर्द्वन्द्व को लेकर लिखी गयी है। यह कहानी कर्तव्य-भावना का समर्थन करती है।

कथानक :-

आकाशदीप कहानी का कथानक निरंतर गतिशील बना रहता है। पाठक के मन में रह-रह कर जिज्ञासा एवं कौतूहल की भावना पनपती रहती है। बन्दी-वार्तालाप के साथ प्रारम्भ हुआ कहानी का कथानक मुक्त होने पर चम्पा और जलदस्यु बुद्धगुप्त के प्रेमालाप में बदल जाता है। पहले तो चम्पा के मन में बुद्धगुप्त प्रति घृणा रहती है क्योंकि वह बुद्धगुप्त को अपने पिता का हत्यारा मानती है। परन्तु बुद्धगुप्त द्वारा माणभद्र का षड्यंत्र विफल किये जाने की बात सुनकर उसके भीतर बुद्धगुप्त के प्रति घृणा के साथ-साथ प्रेम की भावना भी उत्पन्न हो जाती है। यहाँ भी उनका विवेक और चातुर्य दोनों के सम्बन्धों को मधुर बनाने में सहायक होता है।

बुद्धगुप्त चम्पा से परिणय करना चाहता है। वह सतंभु पर दीप जलाती है। समुद्र-जल में चमकती दीपों की रोशनी में वह खो जाती है तो अचानक बुद्धगुप्त आकर चम्पा से

दीपों के प्रति आकर्षण का कारण जानना चाहता है तो वह बताती है कि ये दीपक किसी के आगमन की आशा लिए रहते है। जब मेरे पिता भी समुद्र में जाया करते थे, तो नित्य शाम को मेरी माँ भी दीप जला कर टाँगा करती थी। द्वीप के निवासियों के सम्मुख चम्पा और बुद्धगुप्त का विवाह हो जाता है। बुद्धगुप्त चम्पा से भारत लौटने को कहता है, तो वह कह देती है कि तुम वहाँ जाकर सुख भोगो, मैं तो इन्हीं द्वीपवासियों की सेवा में अपना जीवन लगाना चाहती हूँ। चम्पा कर्तव्य के सामने प्रेम का बलिदान कर देती है। इस तरह आकाशदीप कहानी की कथावस्तु काल्पनिकता का सहारा लिए हुए है फिर भी उसमें जिस प्रकार हृदय-परिवर्तन दिखाया गया है, वह निश्चित ही सफल कहानी की ओर संकेत करता है।

पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण :-

कहानी की सफलता-असफलता की कसौटी पर परखते समय उस के पात्र एवं पात्रों के चरित्र की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। प्रसाद जी की कहानी 'आकाशदीप' में स्पष्ट रूप से दो ही पात्र सामने आते हैं:-

1. जलदस्यु बुद्धगुप्त 2. चम्पा सारा घटनाचक्र इन्हीं दो पात्रों के आसपास घूमती रहती है। इनके अलावा चम्पा-बुद्धगुप्त की बातचीत में मणिभद्र का भी नाम आता है। यद्यपि वह स्वयं उपस्थित नहीं होता, लेकिन दोनों मुख्य पात्रों द्वारा उसके चरित्र का बखान किया जाता है। बड़ी ही सहजता के साथ नाटकीयता दिखाते हुए कहानीकार ने बुद्धगुप्त के हृदय-परिवर्तन को

उसके चरित्र का महान गुण सिद्ध किया है। चम्पा का चरित्र भी प्रेम, साहस एवं त्याग से भरा हुआ है। वह संकल्प की पक्की है। सेवा-भाव और कर्तव्य भाव के सम्मुख बुद्धगुप्त से अपने प्रेम को त्याग देती है। इस प्रकार कथानक को गतिशील एवं विकसित करने में एवं अनेक व्यवहार भूमिका निभाने में पात्रों की अहम भूमिका रही है।

कथोपकथन या संवाद :-

कथोपकथन या संवाद कहानी को गतिशील एवं विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाते है। जयशंकर प्रसाद जी की कहानी 'आकाशदीप' का प्रारम्भ ही चम्पा और बुद्धगुप्त के वार्तालाप से हुआ है। संवाद छोटे-छोटे भी है और बड़े-बड़े भी; परंतु स्वाभाविकता बाधित नहीं हुई है, जैसे-

"बन्दी!"
"क्या है? सोने दो।"
"मुक्त होना चाहते हो?"
"अभी नहीं, निद्रा खुलने पर, चुप रहो।"
फिर अवसर न मिलेगा।

"यह क्या? तुम स्त्री हो?"
"क्या स्त्री होना कोई पाप है?" अपने को अलग करते स्त्री ने कहा।
"शास्त्र कहाँ है। तुम्हारा नाम?"
"चम्पा।"

PAGE No.
DATE / /

देशकाल एवं वातावरण :-

कहानी की सार्थकता एवं सफलता उसकी कथावस्तु में चित्रित देशकाल एवं वातावरण की प्रस्तुति पर निर्भर करता है। इस दृष्टि से विचार किया जाय तो आकाशदीप कहानी में ऐसे वातावरण का सृजन किया गया है, जिससे पाठक को समाज और राष्ट्र के लिए सर्वस्व उद्देश्य की प्रेरणा मिलती है।

भाषा शैली :-

'आकाशदीप' कहानी की भाषा पर प्रसाद जी के कवि हृदय का गहरा प्रभाव है। खड़ी बोली का सहज, सरल और प्रांजल रूप इस साकार हो उठा है। तत्सम शब्दों की प्रचुरता अवश्य है। परन्तु भावों की गति ने उसे अनुभव नहीं होने दिया। कहानी की भाषा को प्रस्तुत करते समय जिज्ञासा, रोचकता, कौतूहल, एवं आकर्षण बनाये रखने में शैली की प्रांजलता सजग रही है।

उद्देश्य :-

आकाशदीप कहानी का उद्देश्य मानव के भीतर विश्वास की भावना जगाना है। चम्पा के आचरण द्वारा बुद्धगुप्त के हृदय में दस्यु वृत्ति का त्याग करवाकर लेखक ने अपने उद्देश्य को दर्शाते हुए कहानी के अन्त में कर्तव्य के सम्मुख प्रेम की बलि चढ़वा दी। इस से पता चलता है कि 'आकाशदीप' कहानी अपने उद्देश्य का पोषण

करने में सक्षम रही है। कर्तव्य की भावना को दरशाना ही इसका प्रमुख उद्देश्य रहा है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि कहानी कार जयशंकर प्रसाद जी ने बड़ी ही सजगता के साथ इतिहास और कल्पना का सुन्दर सामंजस्य दिखाया है। प्रस्तुत कहानी में प्रेम और कर्तव्य कि भावना को देखा जा सकता है। इस कहानी के माध्यम से प्रसाद जी ने मानव के भीतर विश्वास की भावना को जगाया है। और बिना सोचे समझे किसी से घृणा नहीं करनी है चाहिए। गरीब असहाय लोगों की सेवा करने जैसी भावना को देखाया है।

5 # 'कफन' कहानी की समीक्षा

कथा सम्राट प्रेमचन्द की कहानियाँ आदर्शोन्मुखी यथार्थ के धरातल पर खड़ी जीवन को संवेदनशील बनाने में प्रयासरत है। 'कफन' कहानी में प्रेमचंद का यथार्थवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है। चमार जाति के मजदूरों की बस्ती में बुधिया का पति माधव और ससुर घीसू दोनों कामचोर और चटोरे हैं। इनका काहिलेपन इन्हें भूखों रहने को विवश करता है। कफन कहानी में कफन के लिए पैसों का अभाव, कफन के पैसों का दुरपयोग और कफन की निरर्थकता आदि कथागत भावों को इसमें दरशाया गया है।

कथानक :-

कफन कहानी में कथानक की मूल संवेदना यह है कि आधुनिक आर्थिक विषमता, बेरोजगारी और निकम्मे समाज व्यवस्था के कारण सर्वहारा कितना स्वार्थी कामचोर और जड़ हो जाता है कि वह अपनी मृतक पुत्र वधु की और पत्नी के कफन के लिए एकत्र चन्दे के धन को शराब पीने में खर्च कर देते हैं। साथ ही अपने को बचाने के लिए समाज के दुर व्यावहार तथा समाज के रीति रिवाज के ऊपर अपना व्यंग कसता है। "कैसी बुरा रीति रिवाज है कि जिसे जिसे जीते जी तन ढकने को चीथड़ा भी न मिले उसे मरने पर कफन चाहिए। कफन लाश के साथ ही जलकर राख हो जाता है।

"कथानक का आरम्भ घीसू और माधव की दीनहीन एवं कारुणिक समस्या से होता है माधव की पत्नी प्रसव वेदना से छटपटा रही है जब कि झोपड़े के द्वार पर अलाव के सामने घीसू और माधव दोनों बाप बेटे चुपचाप बैठे यह इन्तजार कर रहे है कि कब पत्नी मरे और द्वार में शांति हो। अलाव के भुने आलू मुंह जलने की प्रवाह किये बिना निगलते जा रहे है। जब बुधिया (माधव की पत्नी) मर जाती है तो दोनों छाती पीटकर रोते रहते हैं और लकड़ी तथा कफन के लिए चन्दा इकट्ठा करते हैं। कथानक चरम सीमा पर तब आती है - जब बाप बेटे बाजार में दुकानों का चक्कर लगाते बिना कफन खरीदे एक शराबखाने के सामने जा पहुँचते हैं और कफन के पैसे से तली हुई मछलियाँ आदि खाकर, पेट भरकर शराब पीते है और अन्ततः नशे में बेसुध होकर वहीं गिर जाते हैं।

पात्र एवं चरित्र चित्रण :-

इस कहानी में मुख्यतः दो पात्रों घीसू और उसके पुत्र माधव का वर्णन आया है। दोनों ही निर्धन और श्रमिक वर्ग से आते है। दोनों आराम तलब, कामचोर और बदनाम है कोई इन्हें काम पर नहीं बुलाता। किसी ने बुलाया भी तो एक घंटा काम करेंगे तो एक घंटा चिलम पियेंगे। एक दिन काम किया तो तीन दिन आराम। जब फाँके पड़ने की नौबत आती तो एक पेड़ से लकड़ियाँ काटता तो दूसरा उसे बाजार में बेच कर पेट पूजा का जुगाड़ करता। आर्थिक विपन्नता ने दोनों को निर्दयी हृदयहीन और कठोर

बना दिया है। बुधिया के प्रसव पीड़ा की तड़प सुनकर भी ये जलता हुआ आलू खा रहे हैं। इनकी दारुण दशा विपन्नता एवं अन्तिम परिणति किसी भी संवेदनशील मनुष्य के दिल को दहला देती है।

कथोपकथन :-
प्रेमचन्द ने अपने पात्रों के मनोभावों का चित्रण नाटकीय एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर किया है - इन्हीं विशेषताओं को उद्घाटित करने वाला एक उदाहरण द्रष्टव्य है "घीसू ने कहा - मालुम होता है, बचेगी नहीं। सारा दिन दौड़ते हो गया; जा देख तो आ। माधव चिढ़कर बोला - "मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती। देखकर क्या करूँ" "कै बड़ा बेदर्द है बे, साल भर जिसके साथ सुख चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई" मुझसे तो उसका तड़पना और हाथ पाँव पटकना नहीं देखा जाता।

वातावरण :-
इस कहानी में वातावरण की प्रधानता है। प्रेमचन्द जी वातावरण के सृजन में सिद्धहस्त है। इस कहानी में वातावरण की सृष्टि कथाकार ने इतने मनोयोग से किया है कि कहानी जीवन की सच्ची घटना प्रतीत होती है। कहानी के आरम्भ में ही बिम्बात्मक वातावरण प्रस्तुत किया गया है -
"झोपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए हैं और अन्दर बुधिया प्रसव-वेदना से पछाड़ खा रही थी। ..... जाड़े की रात थी सन्नाटे में डूबी। सारा गाँव अन्धकार में लय हो रहा था।"

भाषा-शैली :-

इस कहानी की भाषा-शैली सरल सशक्त, और सजीव है। इसमें प्रौढ़ता, परिपक्वता एवं सप्राणता पर्याप्त मात्रा में मिलती है। वातावरण के चित्रण में भाषा पूर्णतः वर्णनात्मक हो गई है। इस कहानी में भाषा की बिम्बात्मकता सर्वत्र दिखाई देती है। व्यंगात्मकता का एक उदाहरण प्रस्तुत है- "दुनिया का दस्तूर है, नहीं तो लोग ब्रह्मनों को हजारों रुपये क्यों दे देते हैं, कौन देखता है परलोक में मिलता है या नहीं। बड़े आदमियों के पास धन है; चाहे फूँके। हमारे पास फूकने को क्या है?"

उद्देश्य :-

उद्देश्य की दृष्टि से यह कहानी यथार्थवादी है। आर्थिक विषमता वाले जिस समाज में एक ओर धनवान और बड़े लोग बैठे-बैठे दुनिया के सारे आनन्द लेते हैं तथा गरीबों, मजदूरों और किसानों को रात-दिन कठिन परिश्रम के बावजूद दो वक्त की रोटी का जुगाड़ नहीं कर पाते हैं। आर्थिक शोषण के विरुद्ध समाज में क्रांति की भावना भरना लेखक का मूल उद्देश्य है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद जी ने कफन कहानी के माध्यम से हमारे समाज में फैली गलत रीतियों, रिवाजों के आवाज उठाई है। साथ घीसू और माधव जैसे लोगों की कल्पना को दर्शाया है। के वह लोग कितने निर्दयी बन गए हैं गरीबी के कारण।

6 "उसने कहा था" कहानी की समीक्षा:-

हिंदी साहित्य के विशिष्ट कहानीकार पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने अपने जीवन काल में मात्र तीन कहानियाँ लिखी। इन्हीं तीन कहानियों ने गुलेरी जी को हिंदी जगत में अमर बना दिया। "उसने कहा था," "कहानी अपनी कलात्मकता, चित्रोपत्रयता के कारण अद्वितीय मानी जाती है।

कथोपकथन या कथावस्तु:-

लहना सिंह जमादार है। हजारा सिंह सूबेदार, बोधा हजारा का एक मात्र पुत्र है जो सिख रेजिमेंट में है। हजारा की स्त्री सूबेदारनी जब आठ वर्षीय बालिका थी उसी समय अमृतसर के चौक पर बारह वर्षीय बालक से मिलती है। एक अपने मामा का केश धोने के लिए दही लेने गया था। दूसरी रसोई के लिए बड़ियाँ। इनके बीच एक ग्राहक एक सेर गीले पापड़ की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

तभी दोनों अपस में बात करने लगे।

"तेरे घर कहाँ है?"
"मगरे - में औ तेरे"
माझे में - यहाँ कहाँ रहती है?"
"अतर सिंह की बैठक में - वे मामा है मेरे।"

मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, इनका घर गुरु बाजार में है।" कुछ दूर जाकर लड़के ने

मुस्कराकर पूछा "तेरी कुड़माई हो गई?" इसपर लड़की आँख चढ़ाकर धत् कहकर भाग जाती है। दूसरे - तीसरे दिन आकस्मात् दोनों मिल जाते हैं। महीना भर यही हाल रहा। लड़का कई बार पूछा "तेरे कुड़माई हो गई" एक दिन सम्भावना के विरुद्ध लड़की बोली "हाँ हो गई।" "कब?" "कल" देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा सालू?

उसके बाद 25 वर्ष का समय बीत जाता है। सही बालक न. 77 राइफल्स में जमादार हो जाता है। छुट्टी पर घर आया है। वापसी में हजारा को रास्ते में साथ लेकर नौकरी पर जाने की योजना थी। प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों के पक्ष में युद्ध करने हेतु अकस्मात् बुलावा आता है। पूर्व की योजनानुसार लहना हजारा के यहाँ उसे लेकर चलने के लिए आता है। हजारा कहता है, लहना। सूबेदारनी तुमको जानती है, बुलाती है। जा मिल आ। लहना भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती है? कब से? रेजीमेन्ट के क्वार्टर में कभी सूबेदारनी के घर के लोग रहे नहीं। दरवाजे पर माथा टेकना कहो।

"मुझे पहचाना?"
"नहीं"
तेरी कुड़माई हो गई

"तुम्हें याद है, एक दिन दाँगेवाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। एसे ही इन दोनों को बचाना यह मेरी प्रार्थना है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।"

राम-राम यह भी कोई लड़ाई है। दिन रात खन्दकों में बैठे बैठे हड्डियाँ अकड़ गई। लुधियाने से दस गुना जाड़ा यहाँ और ऊपर से बर्फ। ना न मालूम बेईमान मिट्टी में छिपे हैं। या घास के पत्तों में जो सामने संगीन देखने पर बीहड़ जैसा मुँह खोल देते हैं। और पीठ पीछे मन मन भर गोला फेंकते हैं।

"चार दिन तक पलक नहीं झपकी बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाये। फिर सात जर्मन को अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो।"

बोधा सिंह बीमार हो जाता है

"अच्छा अब बोधा सिंह कैसा है?"

"अच्छा है।"

"जैसे मैं जानता ही न होऊँ रात भर तुम अपने दोनों कम्बल उसे ओढ़ाते हो और सिगड़ी के सहारे गुजर करते हो। निमोनिया से मरने वालों को मुरब्बे नहीं मिलते।" खाई के मुँह से आवाज आई "सूबेदार हजारा सिंह"

"कौन लपटन साहब? हुकुम हुजूर"

"देखो इसी समय धावा करना होगा। मील भर की दूरी पर पूरब के कोने में एक जर्मन खाई है उसमें पचास से ज्यादा जर्मन हैं। तुम यहाँ दस साथी छोड़कर सबको साथ ले धावा करो। जब तक दूसरा हुक्म न मिले। हम यहाँ रहेंगे।

"जो हुक्म।" कैप्टन साहब जेब से सिगरेट निकाल कर सुलगाते हैं कुछ समय बाद लहना की ओर हाथ बढ़ाकर कहते हैं। "लो तुम भी पियो।" पलक झपकते ही लहना सब कुछ समझ गया। फिर जर्मन के सिपाहियों के साथ जंग होती है। तेरह जर्मन मारे जाते हैं और उसी बीच लहना को भी गोली लगती है पसली में। वह एक सांस साफे की मदद से घाव को अच्छी तरह बाँध लेता है। युद्ध कि समाप्ती के बाद हजारा और बोधा को गाड़ी पर बैठाकर कहता है "सुनिये तो सूबेदारनी को चिट्ठी लिखें तो मेरा मत्था टेकना लिख देना और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया।" लहना वीर गति को प्राप्त हो जाता है।

पात्र और चरित्र चित्रण :-

कहानी में सूबेदार हजारा सिंह, सूबेदारनी, बोधा सिंह, बजीरा सिंह आदि उल्लेखनीय पात्र है। लहना सिंह में प्रेम, त्याग, बलिदान, विनोद वृत्ति, बुद्धिमता एवं सतर्कता आदि विविध गुण मिलते है। अगर उसमें बुद्धिमता और सतर्कता न होती तो पूरी सेना को टुकड़ा मार दी जाती और कहानी बनती ही नहीं।

कथोपकथन - संवाद :-

संवादों के माध्यम से कथानक को गतिशीलता मिलती है। इस कहानी में संवाद छोटे-छोटे और पात्रों के अनुकूल है। इस कहानी में अधिकांश विकास संवादों के माध्यम से किया गया है।

PAGE No.
DATE / /

देशकाल और वातावरण :-

विशिष्ट कहानीकार पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने अपने ~~जीवन~~ कहानी उसने कहा था" में पंजाब के इलाके के वर्णन किया है। और प्रथम विश्व युद्ध जो ~~उस~~ अंग्रेजों के पक्ष में था उसका भी सटीक वर्णन किया है।

भाषा-शैली :-

भाषा-शैली की दृष्टि से यह कहानी काफी महत्वपूर्ण है। जिस समय यह कहानी प्रकाश में आई तब तक प्रेमचंद और प्रसाद ने कहानी में इतना विकास नहीं किया था। उस समय इतना परिपक्व गद्य सबके लिए आश्चर्य का कारण था। डा० नगेन्द्र जैसे प्रसिद्ध समीक्षक भी कहानी को अपने समय से 35-36 वर्ष आगे का स्वीकार करते हैं। कहानी मिश्रित भाषा में लिखी गई है।

उद्देश्य :-

इस कहानी का उद्देश्य निःस्वार्थ, त्यागी, वीर, बलिदानी, व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देना है। अपने लिए तो सभी जीते हैं, लेकिन जो दूसरों के लिए मरते हैं ऐसे व्यक्ति शहीद कहलाते हैं। कहानी का लहना सिंह भी ऐसा ही है।

निष्कर्ष :-

हम कह सकते है कि उसने कहा था कहानी कला की दृष्टि से एक बहुत ही सफल कहानी है, जिसमें लहना सिंह के माध्यम से लेखक ने निश्छल प्रेम, प्रण, त्याग और बलिदान का संदेश दिया है। वास्तव में इसकी कहानी के माध्यम से आम लोगों तक यह संदेश पहुंचाया है कि: हमें अपने कर्म करते रहना चाहिए बिना किसी लालच या स्वार्थ के।

PAGE No.
DATE / /

7. बड़े घर की बेटी कहानी की समीक्षा:-

प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। आरंभ में वे उर्दू की पत्रिका 'जमाना' में नवाब राय के नाम से लिखते थे। सेवासदन उनका हिंदी में प्रकाशित होने वाला पहला उपन्यास था। इसकी बेहद लोकप्रियता ने प्रेमचंद को हिंदी का कथाकार बना दिया।

कथोपकथन या कथावस्तु:-

'बड़े घर की बेटी' एक संयुक्त परिवार की कहानी है। ठाकुर बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के ज़मींदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्य से सम्पन्न थे। पर बेनीमाव सिंह अपनी आधी से अधिक सम्पत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। उनकी वर्तमान आय एक हज़ार रुपए वार्षिक से अधिक न थी। ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ सिंह था। वह बहुत परिश्रमी था। उसने बी० ए० की डिग्री प्राप्त की थी, पर पढ़ाई ने शरीर को निर्बल और चेहरे को कांतिहीन बना दिया था। छोटा लड़का लालबिहारी सिंह दोहरे बदन का सजीला जवान था। भैंस का दो सेर ताज़ा दूध वह सवेरे उठकर पी जाता था। पढ़े-लिखे होने के पश्चात भी श्रीकंठ पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के विशेष प्रेमी न थे। वह संयुक्त परिवार के प्रेमी थे बड़े उत्साह से रामलीला में सम्मिलित होते और स्वयं किसी न किसी पात्र का अभिनय करते थे। स्त्रियों को कुटुम्ब में मिल-जुलकर रहने की जो अरुचि होती है, उसे वह देश और जाति दोनों

के लिए हानिकारक समझते थे। यही कारण था कि गाँव की ललनाएँ इनकी निंदक थी। यहाँ तक कि स्वंय इनकी सगी पत्नी का इस विषय में उनसे विरोध था। श्रीकंठ की पत्नी 'आनंदी' भूपसिंह नामक एक रियासत के तालुकेदार की रूपवती, गुणवती व प्रिय कन्या थी। श्रीकंठ भूपसिंह के पास चंदा माँगने गए थे, उन्हें देखकर प्रभावित होकर, भूपसिंह ने अपनी बेटी आनन्दी की शादी उनसे कर दी थी। जिस तरह आराम की जिंदगी आनन्दी को यहाँ थी वह ससुराल में नाम-मात्र को भी न थी। यह एक सीधा-सादा देहाती गृहस्थ का मकान था किंतु आनन्दी ने थोड़े दिनों में ही अपने को नई परिस्थित के अनुकूल बना लिया था। एक दिन, लालबिहारी सिंह दो चिड़ियाँ लेकर भाभी को पकाने के कहता है। आनंदी ने व्यंजन बनाने में पाव भर घी डाल दिया। दाल के लिए बिलकुल भी सब घी नहीं बचा। खाने के लिए जब बैठे तो दाल में घी न देखकर, भाभी से घी माँगा तो आनंदी ने बताया के मैंने सारा घी मांस पकाने में डाल दिया। लालबिहारी गुस्से में आया सुनकर, बोला मैंने तो जैसे घी कि नदियाँ बहती है। आनंद यह सुन कर सह न सकी और कहा यहाँ पर तो इतना घी नौकर ही खा जाते हैं यह सुनकर लालबिहारी और आनंदी में कहा सुनी हुई फिर उस खड़ाऊँ फेंकी किसी तरह आनंदी ने खड़ाऊ को पकड़ लिया लेकिन हाथ में चोट लग गई। आनंदी चुपचाप कोपभवन में जाकर रहने लगी और अपने पति का इन्तेजार करने लगी जैसे ही उसका पती आया तो भाई

और पिता ने पहले ही सब बताया और उसकी शिकायत की, लेकिन आनंदी से बात करने के बाद वह बहुत गुस्सा हो गए सच्चाई सुनकर उन्हें ने फैसला किया कि अब वह रहेगा इस घर में या लालबिहारी। तो बाद में लालबिहारी भाभी से माफी मांगता है। भाभी ठहरी बड़े घर की बेटी। उसके संस्कार एवं थे के न केवल उसने माफ कर दिया बल्कि अपने पति श्रीकंठ को भी माफ करने के लिए मना लिया। टूटता घर जुड़ गया। पिता भी खुश हो गए और कहा उठे बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती है जो बिगड़ा हुआ काम बना देती है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि किस तरह बड़े घर के संस्कारों कि पहचान व्यक्ति के गुणों से होती है न कि उसके धन से।

पात्र एवं चरित्र चित्रण:-

बड़े घर की बेटी कहानी में मुख्य रूप पात्र आनंदी का है उसके साथ ही अन्य पात्र, श्रीकंठ सिंह, लालबिहारी, भूपसिंह तथा बोलीमाधव सिंह इत्यादि हैं। निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं। उदाहरण:-

आनंदी:-

कहानी की नायिका तथा मुख्य पात्र आनंदी एक सुन्दर व समझदार ठाकुर परिवार की रूपवती गुणवती कन्या थी। साथ ही घर में होए मन झगड़े का भी हल करती है साथ ही परिवार को टूटने से बचाती है।

श्रीकंठ सिंह :-
श्रीकंठ बेनीमाधव सिंह का बड़ा पुत्र था बी.ए पास। साथ ही समझदार भी था। पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं को विशेष पसन्द नहीं करता था। साथ ही अपनी पत्नी प्रेम भी करता था और अपने सारे कर्तव्य को पूरा करने वाला व्यक्ति है।

इन सब के अतिरिक्त आनंद के पिता जो जमींदार है। और लालबिहारी सिंह श्रीकंठ का भाई है। उनका भी सटीक वर्णन किया है।

कथोपकथन एंव संवाद :-
कथोपकथन या संवाद कहानी को गतिशील एंव विकसित करने में अहम (प्रमुख) भूमिका निभाते है। प्रेमचंद जी की कहानी में आरंभ में ही आनंदी के चरित्र की विशेषताओं का वर्णन किया है। जिस प्रकार से लेखक ने बताया वह बहुत प्रभावशाली लगता है। वहीं साथ ही आनंदी तथा लालबिहारी सिंह के बीच जो वार्तालाप हुआ है ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह हमारे आस का ही है।
उदाहरण :-
तुम्हारे घर क्या घी की नदियाँ बहती है। यहाँ तो इतना घी कहार ही खा जाते है।

देशकाल और वातावरण :-
प्रस्तुत कहानी प्रेमचंद, प्रेमचंद जी ने गाँव का सटीक वर्णन किया है। साथ ही बड़े घर की बेटी से संबंधित चीजें देशकाल एंव वातावरण को प्रभावित किया है।

आनंदी एक बड़े घर की उच्च कुल के घर कि बेटी थी। ससुराल आने के बाद घर में हुए झगड़े से घर कलेश होता जिसके कारण आस-पास के लोग भी सुन कर चकित हो जाते है। इस प्रकार हम देख सकते है कि पात्रों के कारण भी वातावरण पर प्रभाव पड़ता है।

भाषा शैली :-

कहानी की सफलता उसकी भाषा में होती है। कहानी में प्रेमचंद जी ने भारतीय पारिवारिक जीवन के आदर्श को सीधी-सादी स्वाभाविक भाषा शैली में प्रस्तुत किया है। साथ ही कहानी में संतुलित सुगठित और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है।

उद्देश्य :-

बड़े घर की बेटी, कहानी द्वारा मुंशी प्रेमचंद जी ने हमें गरीबों के दुख दर्द का आभास कराया है। उसके साथ में उन्होंने उच्च वर्ग का सामाजिक परिवेश भी दिखाया है। इसमें उन्होंने आर्थिक, पारिवारिक और संस्कारिक मूल्यों का समावेश स्थापित किया है। जो हमारे देश और समाज को प्रतिबिम्बित करता है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि लेखक लेखक ने कहानी के माध्यम यह स्पष्ट किया है कि किसी भी घर में पारिवारिक शांति और सामंजस्य बनाए रखने में घर की स्त्रियों की अहम भूमिका होती है। घर की स्त्रियाँ अपनी समझदारी से टूटे हुए रिश्ते को जोड़ सकती है। साथ ही लेखक ने संयुक्त परिवारों की उपयोगिता को भी इस कहानी के माध्यम से सिद्ध किया है।

8 दासी कहानी समीक्षा :-

प्रसाद जी की 'दासी' कहानी का शीर्षक उचित है। एक ओर यह जिज्ञासा को प्रबल करता है तो दूसरी तरफ, कथावस्तु की तरफ आकृष्ट करता है। कहानी के माध्यम से तत्कालीन समाज में दासियों की स्थिति का पता तो चलता ही है साथ ही समाज के लोगों की मनोदशा का पता लगता है। अतः इस कहानी का शीर्षक सार्थक है।

कथोपकथन एवं ~~संवाद~~ : कथावस्तु :-

कहानी की दो दासियों फिरोज़ा और इरावती से संबद्ध है। कहानी के प्रारंभ में फिरोजा फिरोज़ा के माध्यम से कहानीकार ने एक निराश और हताश प्रेमी के जीवन में आशा का संचार करवाया। फिरोजा की बातों से बलराज में एक बार आशा जागृत होती है और वहीं राजा तिलक के मन में बसे विचारों को भी पाठकों के समक्ष ला दिया गया है। फिरोज़ा की बातों ने उसकी मनोवृत्तियों में भयानक हलचल मचा दी थी। अंत में तिलक फिरोज़ को भी वापस हिंदुस्तान भेज देते है।

दूसरे अँश में इरावती की चर्चा है जिसका भाई तिलक प्रतिकूल परिस्थितियों के के कारण अपनी बहन को छोड़कर चला जाता है। यह इरावती बलराज से प्रेम करती है, लेकिन बलराज भी धन-काम कमाने के लिए उसे

छोड़ तुर्किस्तान चला आता है। इसके बाद इरा को नारकीय जीवन जीना पड़ता है। कहानीकार ने बलराज के मिलन होने पर स्वयं इरा द्वारा उसके समय के मानव व्यापार को दर्शाया है।

कहानी के अंत में बलराज और अहमद के बीच होने वाले युद्ध दो शक्तियों का संघर्ष था। अहमद की स्वतंत्र सत्ता की इच्छा बलराज द्वारा उसके वध जाने पर समाप्त हो जाती है। लेकिन फिरोजा एक समर्पित प्रेमिका की तरह अहमद की समाधि की सेवा में संपूर्ण जीवन बिता देती है।

पात्र एवं चरित्र-चित्रण:-

कहानी के प्रमुख पात्रों में फिरोजा और इरावती नाम की दो दासियाँ है। गौण पात्रों में राजा तिलक, अहम, एवं बलराज है। अन्य पात्रों में सुलतान महमूद, काशी का महाजन आदि है। फिरोजा और इरावती के चरित्र के माध्यम से ही कथावस्तु का विस्तार होता है और इनका चरित्र सबसे प्रभावी है। राजा तिलक भी फिरोजा की बातें सुनकर अपनी बहन इरावती को याद करते है और उनका कोमल पक्ष उजागर होता है। बलराज पहले अहम हत्या करने जाता है, परंतु फिरोजा की बातों से उसमें आशा की किरन जागती है। और वह हिंदुस्तान इरावती से पुनः मिलने आता है कहानी के अंत में इरा उसे अपनाती भी है।

PAGE No.
DATE / /

संवाद / कथोपकथन :-

कहानी के संवाद सरल भाषा में है। प्रसादजी एक नाटककार भी थे अतः कहीं-कहीं नाटकीय रूप में भी संवाद दिखलाई देते हैं। जैसे →

"बलराज को तुम प्यार करती हो?
— मैं नहीं जानती — आकस्मिक उत्तर मिला।

पात्र के अनुरूप संवाद कथोजना का एक उदाहरण देखिए —

फिरोजा (अहमद से) "मैं बिकी हूँ अहमद। भला तुम मेरे हाथ क्यों बिकने लगे? लेकिन तुमको मालूम है कि तुमने अभी राज्य तिलक को मेरा दाम नहीं चुकाया; इसलिए जाती हूँ।"

भाषा-शैली :-

कहानी की भाषा पात्रानुकूल है। यह मूलतः ~~संस्कृत~~ संस्कृत निष्ठ हिंदी है। किंतु पात्र के अनुकूल उर्दू एवं अरबी के शब्दों जैसे गुलामी; दीनार, मालगुजारी आदि का भी प्रयोग है। कहीं-कहीं काव्यमयी भाषा का भी प्रयोग है। जैसे (अहमद का सोई हुई इरा को देखना)

"अहमद ने करुणा विलसित नेत्रों से देखा; उस रूपमाधुरी को जिसमें स्वभाविकता थी, बनावट नहीं।"

सिर पीटना, छाती फाड़ना, सिर नीचा करना इत्यादि मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है

PAGE No.
DATE / /

देशकाल और वातावरण :-

प्रस्तुत कहानी का वातावरण मध्ययुगीन भारत का है। उस समय संपूर्ण भारत तुर्क व अफगानी शासकों के अधीन था। देशी-राजे रजवाड़े अपने क्षुद्र स्वार्थ को पूरा करने के लिए प्रायः इन्हीं शासकों का साथ देते थे। कहानीकार दिखाया कि किस तरह तिलक (राजा साहब) है जो अपने लोगों को छोड़ तुर्कों का साथ देते हैं। और साथ अपनी जाती तथा अपने लोगों को धोखा देते हैं। परंतु आगे चलकर उन्हें इस बात का पछतावा होता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि कहानीकार आरंभ से लेकर अंतिम तक का वर्ण सटीक एवं स्पष्ट रूप किया है।

उद्देश्य :-

प्रसाद जी ने प्राचीन भारत की दास प्रथा पर प्रकाश डाला गया है। दास प्रथा के कारण महिलाओं का शोषण व उन्हें कुत्सित कार्य करवाया जाता था। लेकिन अनेक प्रकार के अत्याचारों व शोषण करने पर भी स्त्री में एकनिष्ठ, निर्भीकता व पवित्र प्रेम तथा देशभक्ति की भावना विद्यमान रहती है। इस प्रकार लेखक ने सभी चीजों पर प्रकाश डाला है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष में कह सकते हैं कि स्त्री समाज में मात्र देवी या दासी बनी पिसती रही, पर कभी इन बेड़ियों को तोड़ने की हिम्मत न हुई। किन्तु जयशंकर प्रसाद ने मानव जीवन में स्त्री की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए उसके आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत किया है।

PAGE No.
DATE / /

9. बड़े भाई साहब कहानी की समीक्षा:-

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के प्रथम कहानीकार है आपने लगभग 300 कहानियाँ लिखकर हिन्दी कथा साहित्य में का अमूल्य योगदान दिया है। आपकी ये कहानियाँ मानसरोवर और गुप्तधन में संकलित है। आपने हिन्दी कथा साहित्य को कालजयी कहानियाँ प्रदान की है। 'बड़े भाई साहब' अत्यंत चर्चित कहानी है।

कथावस्तु :-

कहानी दो भाई है जो पढ़ाई करते है और बड़ा भाई चौदह वर्ष का नौवी जमात में है और छोटा भाई नौ वर्ष का पाँचवी कक्षा में पढ़ता है। बड़ा भाई मंद बुद्धि का है और छोटा भाई पढ़ने में कुशल और बुद्धिमान है। छोटा भाई खेल में रुची रखता है। बड़ा भाई दिन-रात पढ़ता है फिर भी फेल हो जाता है। छोटे भाई खेलता है परंतु फिर भी प्रथम आता है। बड़ा भाई छोटे भाई को उपदेश देता है कि पढ़ाई करो, यहाँ मत जाओ, ज्यादा खेलो मत इत्यादि फिर भी वह अपने बड़े के उपदेश मानते हुए निरंतर आठवी कक्षा तक प्रथम आता है। और बड़ा भाई उसी कक्षा में रह जाता है। लेकिन लेखक स्वयं स्वीकार करता है - "मगर यह शायद बड़े भाई के उपदेशों का ही असर है कि मैं हर साल पास हो जाता हूँ इतनी अच्छे नम्बरों से" बड़े भाई में किताबी ज्ञान कम, व्यावहारिक ज्ञान अधिक है। वह अपने कर्तव्यबोध समझता है। यदि यदि बड़े भाई

जो कुछ भी उपदेश छोटे भाई को नहीं ~~दिये~~ दिये होते तो शायद वह बेपरवाह हो जाता और कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाता। जिम्मेदारियों के बोझ से बचपन तिरोहित हो जाता है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण:-

कहानी में केवल दो पात्र प्रमुख है, एक है तो खुद लेखक है और दूसरे बड़े भाई साहब। कहानी में जो बड़े भाई साहब है वह हमेशा इस बात का ध्यान रखते है कि छोटे भाई के सामने आदर्शवादी बने रहे, इसलिए लेखक को हमेशा नसीहते देते रहते है। और अधिक से अधिक पढ़ते भी है। खेलकूद की इच्छाओं का दमन भी करते है। बड़े भाई को पुस्तकीय ज्ञान से व्यवहारिक ज्ञान अधिक है।

लेखक छोटे होने के कारण अपने बड़े भाई का सम्मान करते है। खेल कूद में रुचि रखते है। वह पढ़ाई में बुद्धिमान होने के कारण कम मेहनत करके भी अधिक अंक प्राप्त करते है। वस्तुत: लेखक ने कहानी के दोनों पात्रों का चरित्र चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर किया है जो अत्यन्त प्रभावशाली तथा स्वाभाविक दिखाई देता है।

संवाद योजना:-

संवाद कहानी को गति प्रदान करते है। बड़े भाई साहब कहानी के संवाद संक्षिप्त, रोचक सरल तथा पात्रानुकूल है। संवादों में रोचकता को अधिक दर्शाया है।

PAGE No.
DATE / /

"बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं है। आठ-आठ हेनरी हो गुजरे हैं। कौन सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ है याद रखना आसान समझते हो, हेनरी सातवें की जगह हेनरी आठवाँ लिखा और नम्बर गायब। सफाचट सिकर भी न मिलेगा सिकर भी। हो किस ख्याल में।

देशकाल एवं वातावरण :-
लेखक ने इस कहानी में बालकों की खेलकूद के प्रति बच्चों की प्रवृत्ति स्वाभाविक ही होती है। इस तथ्य का उद्घाटन लेखक ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। साथ ही उन्होंने शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य किया है - समय की पाबन्दी पर एक लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। देशकाल एवं वातावरण की दृष्टि से यह कहानी सफल है।

भाषा-शैली :-
भाषा पर प्रेमचन्द जी की जबरदस्त पकड़ है। पात्रानुकूल एवं भावानुकूल हास्यपूर्ण भाषा रोचकता एवं स्वाभाविकता प्रदान की है। अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का सटीक प्रयोग है। भाषा सरल सुबोध तथा शैली ~~भा~~ आत्मकथात्मक है। भाषा शैली की दृष्टि से पूर्ण सफल है।

उद्देश्य :- प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने बालकों की खेलकूद की स्वाभाविकता प्रवृत्ति

बड़ो द्वारा उपदेश देने की प्रवृत्ति, भारत की शिक्षा व्यवस्था तथा बड़प्पन के लिए त्याग करना आदि तथ्यों का उद्घाटन किया है। कहानी अपने उद्देश्य में पूर्ण सफल है।

इस प्रकार कहानी कला के तत्वों की दृष्टि से बड़े भाई साहब कहानी पूर्णतः एक सफल कहानी है।

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद ने बच्चों को मनो वेशा को दर्शाया है साथ ही शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। बच्चे अपना बचपन भूल कर केवल शिक्षा के बोझ तले दबे जा रहे हैं। साथ ही घर के बड़े लगों कि मनोवृत्तियों को दर्शाया है।

PAGE No.
DATE / /

10. ## ईदगाह कहानी की समीक्षा :-

ईदगाह कहानी मुंशी प्रेमचंद की एक प्रसिद्ध कहानी है। बाल मनोविज्ञान पर आधारित यह कहानी साहित्य समीक्षकों तथा सामान्य पाठकों द्वारा समान रूप से सराही गई है।

कथावस्तु या कथानक :-

ईदगाह कहानी मुसलमानों के पवित्र त्यौहार ईद पर आधारित है जो की शीर्षक से स्पष्ट होता है। कहानी में सभी छोटे-बड़े, गरीब-अमीर वर्ग-भावना से ऊपर उठकर धार्मिक प्रेम की गहरी समझ और सहानुभूति के छोटे-बड़े सभी ~~सब~~ सभी ईदगाह की ओर बढ़ रहे हैं। सभी बहुत प्रसन्न है। हामिद तो सब से ज्यादा प्रसन्न है। वह चार पाँच साल का गरीब दुबला पतला लड़का है, जिसका बाप हैजे की वजह से मृत्यु हो गई है और माँ ना जाने पीली होती होती एक दिन वह भी मर गई।। हामिद अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। उसे यह बताया गया है कि उसके पिताजी बाहर रुपये कमाने गए हैं और अम्मी अल्लाह के पास अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई है। इसलिए हामिद की प्रसन्नता की कोई कमी नहीं है।

ईदगाह पहुँच कर हामिद और मित्र नमाज पढ़ने के बाद समान खरीदने और खिलौने तथा मिठाईयाँ खरीदने लगते है। हामिद के मित्रों के पास तो खर्च करने के लिए पैसे-ही-पैसे है परंतु हामिद के पास सिर्फ 6 पैसे हैं। वह पूरे बाजार में घूम-घूम कर चीजों को

देखता है दाम और कुछ का सोचते हुए आगे बढ़ जाता है। आखिर में वह अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है। ताकि रोटी बनाते वक्त उसके हाथ न जले। जब वह चिमटा लेकर घर जाता है तो दादी तो पहले गुस्सा होती है फिर बाद में उसकी बात सुनने के बाद रोने लगती है। और ढेर सारी दुआएँ देती है। इस प्रकार हम हामिद की समझदारी तथा उसकी मासूमियत को देख सकते है।

पात्र या चरित्र-चित्रण:-

'ईदगाह' कहानी का मुख्य पात्र हामिद है। सारी कहानी उसी के इर्द गिर्द घूमती है। वह अपनी बाल सुलभ मासूमियत, इच्छाओं आकांक्षाओं, सपनों जिज्ञासाओं आदि से जहाँ अपने बचपन की झलक प्रदान करता है वहीं अपनी सभी इच्छाओं को दबाकर अपनी बुढ़ी दादी माँ के लिए चिमटा खरीदकर अपनी दादी के प्रति अपने प्रेम तथा परिपक्वता का परिचय देता है।

कहानी का दूसरा मुख्य पात्र बूढ़ी अमीना है जो अपने बेटे तथा बहु की मृत्यु के बाद अपने पोते हामिद का पालन पोषण कर रही है। वही दूसरों के कपड़े सिल कर अपना और अपने पोते का गुजारा कर रही है कहानी के अंत में हामिद और अमीना का भावपूर्ण दृश्य कहानी को नये आयाम प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त कहानी में महमूद, मोहसिन, सम्मी, नूरे आदि गौण पात्र है।

PAGE No.
DATE / /

देशकाल एवं वातावरण :-

देशकाल और वातावरण का संबंध कहानी के स्थान समय और परिवेश से होता है। देशकाल एवं वातावरण की दृष्टि से 'ईदगाह' एक उत्कृष्ट कहानी कही जा सकती है। कहानी पूरी तरह पूरी तरह काल्पित होने पर भी अपने समय के सजीव वातावरण की सृष्टि करती है। कहानी में प्रेमचंद जी ने पिछली सदी के प्रारंभिक समय व ग्रामीण परिवेश को दिखाया है। ईद के त्यौहार का वर्णन, रोजे, ईदगाह के दृश्य व मेले की रौनक का सजीव वर्णन किया है।

संवाद व कथोपकथन :-

कहानी में संवाद व कथोपकथन कथानक के अनुसार रचे गए हैं। ईदगाह जाते समय बच्चों के संवाद कहीं-कहीं किसी बुद्धिजीवी के संवाद लगते हैं। लेकिन अधिकांशतः बच्चों की आयु व मनोदशा के अनुरूप है। संवाद प्रायः संक्षिप्त हैं और पात्रों के चरित्रों को उजागर करते हैं। इन संवादों के माध्यम से तत्कालीन समाज की बुराइयों को भी दर्शाया गया है। संवादों की भाषा सरल एवं भावानुकूल है।

भाषा शैली :-

प्रस्तुत कहानी की भाषा सरल तथा गुणों से परिपूर्ण है। उनकी भाषा में स्वभाविकता एवं व्यवहारिक बराबर बनी रहती है। ईदगाह कहानी की भाषा में ~~तत्~~ तत्सम, तद्भव, उर्दू-फारसी व अंग्रेजी के शब्दों का

प्रयोग किया गया है। उदाहरण उर्दू के शब्द :- रमज़ान, रोज़े, अजीब, अल्लाजान इत्यादि। मुहावरों और लोकोक्तियों का भी सुंदर वर्णन किया है।

शैली की दृष्टि से यह कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है। परंतु साथ ही संवादात्मकता, मनोविश्लेषणात्मकता व चित्रात्मक शैलियों का प्रयोग भी हुआ है।

उद्देश्य :-

प्रत्येक साहित्यिक रचना का कोई उद्देश्य अवश्य होता है। इसी तरह कहानी का मुख्य उद्देश्य इस तथ्य को ~~आकर्षित~~ सामने लाना था कि गरीबी, लाचारी और बेबसी में बच्चे छोटी उम्र में ही परिपक्व हो जाते हैं। जहाँ गरीब लोग अपनी ख्वाहिशों का गला दबा देते हैं। और साथ ही ऐसी जिंदगी जिने पर मजबूर हो जाते हैं जहाँ हर रोज एक ~~ख्व~~ ख्वाब मर जाता है।

कहानीकार ने हामिद द्वारा इस तथ्य को सामने लाया है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि प्रेमचंद ने कहानी के मुख्य पात्र हामिद द्वारा इस बात को दर्शाया है कि आज के समय स्वयं वर्ग निचले वर्ग को दबाता जा रहा। और गरीब दो वक्त की रोटी का भी इंतजाम बड़ी मुश्किल से करता है।

11. राजा निरबंसिया कहानी की समीक्षा:-

राजा निरबंसिया कहानी कमलेश्वर द्वारा रचित है। राजा निरबंसिया कहानी अपने दौर की सर्वश्रेष्ठ कहानी है। इसमें पात्रों के दांपत्य जीवन का सटीक वर्णन किया है। और उनकी आर्थिक का भी वर्णन किया गया है। राजा निरबंसिया कहानी आकार की दृष्टि से लंबी कहानी है।

कथावस्तु:-

कमलेश्वर की प्रसिद्ध कहानी 'राजा निरबंसिया' एक लोक कथा पर आधारित है। मानवीय संवेदना का उद्घोषन इस कहानी में हुआ है। शिल्प की दृष्टि से भी कहानी उत्कृष्ट है। जगपति अपनी पत्नी को अपना नहीं सकता है। जबकि युगों पूर्व चरित्रहीन रानी को राजा निरबंसिया ने लोक मर्यादा की परवाह न करते हुए अपना लिया था। चंदा एक सत्य संपन्न ग्रामीण नारी है। अपने पति जगपति के इलाज के लिए सारे कष्ट सहती है।

जगपति की सारी निर्धनता उसके द्वारा बचन सिंह से आर्थिक सहायता लेना, उनका नपुंसक होकर भी अपनी पत्नी के सौंदर्य पर प्रहार करना, चंदा को बचन सिंह को अनैतिक संबंध स्थापित करने के लिए बाध्य करते हैं।

संभवत चंदा व्यभिचार के कारण बचन सिंह के पुत्र की मां नहीं बनती अपितु जगपति की

की पौरुष हीनता, निर्धनता तथा नारी का मातृत्व उसे पुत्र की मा बनने के लिए प्रेरित करते है। जगपति की पौरुष क्षमता की अंतिम घड़ी आत्महत्या के रूप में होती है।

राजा निरबंसिया कहानी मध्यमवर्गीय जीवन की सादगी की कहानी है। जो संवेदनात्मक स्तर पर यथार्थ का पूर्णता अनुसरण करती हुई चलती है। इसमे कमलेश्वर जी ने व्यक्ति की घुटन, विघटन, तनाव, पीड़ा को मानवीय सहानुभूति के साथ सामाजिक संदर्भों की परिवर्तित चेतना को बड़े ही सटीक तरीके से प्रस्तुत किया है।

पात्र एंव चरित्र चित्रण :-

राजा निरबंसिया कहानी में निम्नलिखित प्रमुख पात्र है - चन्दा - (जगपती की पत्नी), जगपती (चन्दा का पति) देसाराम (रिश्तेदार) बचनसिंह - (कम्पाउण्डर कस्बे का) और राजा निरबंसिया और रानी इत्यादि।

प्रस्तुत कहानी में कमलेश्वर जी ने आधुनिक परिवेश में स्त्री पुरुष बच्चों की मनोदशा का सार्थक चित्रण किया है।

देशकाल एंव वातावरण :-

देशकाल एंव वातावरण की दृष्टि से कहानी उत्तम बन गई है। एक सामान्य ~~मध्यमवर्गी~~ मध्यमवर्गीय व्यक्ति नियमित दिनचर्या और जीवन दर्शन को कहानी में उतारा गया है। देशकाल की परिस्थिति में स्त्री की विशेष

स्थिति अपना प्रभाव डालती हुई कहानी के आरंभ से अंत तक चलती है।

भाषा शैली :-

राजा निरबंसिया कहानी सरल भाषा है। साथ ही इसमें पात्रों के अनुसार भाषा बदलती गई है तथा ढलती गई है। उदाहः- "ये हवाई बन्दूकें इन तेल पिलाई लाठियों का मुकाबला नहीं कर पायेंगी, जवानो।" बोल-चाल के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। साथ ही देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है।

शिल्प के माध्यम से कहानी को क्लासिकी रचना का दर्जा हासिल है। जिसमें दो कहानियाँ एक साथ चलती है और परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करती हुई एक नया अध्याय पैदा करती है।

संवाद एवं कथोपकथन :-

कहानी की शुरुआत ही होती है- "एक राजा निरबंसिया थे." मां कहानी सुनाया करती थीं।

दयाराम के घर जब डाका पड़ा तब जगपती ने हिम्मत बढ़ाते हुए हांक लगाई "ये हवाई बन्दूकें इन तेल-पिलाई लाठियों का मुकाबला नहीं कर पाएंगी, जवानो।"

राजा निरबंसिया कहानी में संवाद योजना का रूप उपरोक्त क्रम में ही निर्धारित

हुआ है। अतः पात्रों का उल्लेख किए बिना कहानी संवादों के माध्यम से आगे बढ़ती गई।

उद्देश्य :-
राजा निरबंसिया कहानी का प्रमुख उद्देश्य मानवीय संवेदना को उजागर करना है। कहानी के माध्यम से लेखक ने सामाजिक जीवन की विसंगतियों एवं व्यवस्था पर प्रकाश डाला है।

निष्कर्ष :-
निष्कर्ष रूप हम कहसकते हैं कि लेखकने समाज में फैली बुराई तथा अच्छाई दोनों को समान रूप से प्रकाश डाला है। और साथ ही आधुनिक समाज के बदलते मूल्यों से भी परिचित कराया है।

12. # दूध का दाम कहानी समीक्षा:-

'दूध का दाम' कहानी मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित एक श्रेष्ठ कहानी है। यह कहानी छुआछात की समस्या पर आधारित है। उन्हों ने इनकी कहानीयों में आम लोगों की पीड़ा तथा उनके संघर्ष की समस्या को चित्रित किया है। प्रस्तुत कहानी में भी दूध के दाम द्वारा स्वर्ण लोगों का अपने से निचे जाती के लोगों पर शोषण करना, तथा अपना काम निकल जाने पर लोगों को धिक्कार की नजर से देखना, इन सब बातों पर प्रकाश डाला गया है।

कथावस्तु:-

कहानी शुरु होती है, किसी गाँव के जमींदार बाबू महेशनाथ से जो चाहते थे कि शहरों की भाँति गाँवों में भी अच्छाखानों में सुधार हो। किन्तु गाँव में जाने के लिए कोई दाई, नर्स या लेडी डॉक्टर तैयार न होती थी। यदि कहने-सुनने पर राजी भी होती तो उनकी फीस चुकाने के लिए शायद अपनी आधी जायदाद बेचनी पड़ती। अतः तीन कन्याओं के बाद जब बाबूजी के घर पुत्र-रत्न उत्पन्न हुआ तो गाँव के ऐसा भंगी बूदेड़ और उसकी पत्नी भूगी का सहारा लेना पड़ा। आदि रात ज्योंही चपरासी भूगी को बुलाने पहुँचा तो भूगी अच्छे इनाम की लालसा में अपने तीन माह के पुत्र को छोड़ उसके साथ चल पड़ी।

भंगी जी जान से महेशनाथ के नवजात शिशु की देख-रेख में व्यस्त रहने लगी। उसे

जमींदार के घर में अच्छा सम्मान और खाना-पिना मिलने लगा। उसके दूध को महेशनाथ का भाग्यवान पुत्र, सुरेश पीता था। जबकि उसका पुत्र मंगल ऊपर के दूध पर पल रहा था। इसी कारण महेश नाथ जी के घर पर उसका रुतबा भी बढ़ गया। ये एक वर्ष से ज्यादा नहीं चला क्योंकि मोहराम शास्त्री ने भागीन के दूध पिलाने पर आपत्ति की कि वह नीची जाति की है, अब दूध छुड़ा दिया गया। अब उसका बालक मंगल, दुर्बल और सदा रोगी रहने वाला, बड़ा होने लगा। उस वर्ष गुड़ड प्लेग की चपेट में आ गया। उसके जाने के बाद भूंगी अपने बेटे के साथ अकेली रहती थी। एक दिन जमींदार के घर के नाले की सफाई करते हुए उसे भी सांप काट लेता है और उसकी मौत हो जाती है।

मंगल बिल्कुल अकेला था। अछूत होने के कारण उसके साथ कोई नहीं खेलता था। ऐसे में उसका साथी टॉमी (एक कुत्ता) बना। मंगल को पेट भरने के लिए जूठन महेशनाथजी के घर से मिल जाती थी। वह टॉमी के साथ उनके घर से कुछ ही दूरी पर एक पेड़ के नीचे रहा करता। कभी-कभी अपने घर आता जाता, जहाँ उसकी पुरानी यादें जुड़ी हुई थी। एक दिन महेशनाथ जी का बेटा सुरेश, मंगल को खेलने बुलाता है। डरते हुए ना-नुकुर के बाद मंगल हामी भरता है। उसे घोड़ा बनने के लिए कहता है, तो मंगल मना करता है फिर इसे जबरदस्ती घोड़ा बनाने पर उस पर सवार हो जाता है जिस पर ~~मंगल~~ मंगल उचक

जाता है। और सुरेश घिर जाता है। इसके बाद मंगल को मालकिन के क्रोध का सामना करना पड़ता है। फिर वह घर को चला जाता है। शाम को खाने के समय उसे जोर से भूख लगती है तो उसे कोई बुलाने आएगा लेकिन कोई नहीं आता। भूख को बर्दाश्त नहीं कर पाता है और स्वयं उनके घर आकर एक अँधेरे कोने में खड़े होकर महेश नाथ जी और सुरेश को भोजन खत्म करते हुए देखता है। जैसे नौकर मालिक की जूठन पत्तल में डालकर जैसे ही फेंकने आता है, मंगल भूख के मारे थोड़ा सरककर आगे आकर हाथ फैला देता है। जूठन हाथ में लेकर मंगल, टॉमी को खाना देकर खुद भी खाने लगता है और टॉमी से कहता है, मेरी माँ ने इनके लड़के को दूध पिलाया, दुनिया कहती है कि दूध का मोल कोई नहीं चुका सकता और मुझे दूध का यह दाम मिल रहा है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण :-

दूध का दाम कहानी में निम्ननिलिखित पात्र हैं। बाबू महेशनाथ, मालकिन, भुगी, कुदड़ सुरेश तथा मंगल है।

कहानी का प्रमुख पात्र मंगल है पूरी कहानी उसी के इर्दगिर्द घूमती है। लेखक ने यहाँ लोगों के मनोदशा तथा खोकले आदर्शों का चित्रण है। कि किस प्रकार स्वर्ण वर्ण के लोग अपने से कम लोगों से फायदा हासिल करने के लिए कितने पैंतरे तलाश करते हैं।

देशकाल एवं वातावरण :-

प्रेमचंद ने इस कहानी में बच्चों की मनोदशा का चित्रण का वर्णन किया है। साथ ही बच्चों के खेल कूद के वातावरण का वर्णन भी किया है साथ ही झूंगी तथा मालकिन के बात-चीत के समय जो दृश्य जनक वातावरण का संचार हुआ था उस का भी सटीक वर्णन है।

संवाद व कथोपकथन :-

कहानी के संवाद सरल भाषा में है। संवाद पात्रों के अनुकूल है। संवादों का कहानी पर बहुत गहरा प्रभाव दिखाई देता है। कहानी में संवाद नाटकिय रूप में प्रस्तुत है। और साथ संवाद कथानक को गतिशीलता प्रदान करते है।
उदाहरण स्वरूप झूंगी और मालकिन के बीच हुए संवाद को देख सकते है।

"झूंगी कहती, 'बहूजी, मुंडन में चूड़े लूँगी कहे देती हूँ।
"बहूजी उत्तर देती: 'हाँ हाँ, चूड़े पहून लेना भाई, धमकाती क्यों है? चाँदी के लेगी या सोने के।

भाषा शैली :-

कहानी कि भाषा सरल भाषा है। आम बोल-चाल में बोली जाने वाली हिंदी भाषा है। इसमें वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इसमें गाँव की बोली जाने वाली भाषा का अधिक प्रयोग किया है।

उद्देश्य :-

प्रस्तुत पाठ में प्रेमचंद ने जात-पात, ऊँच-नीच, छुआछूत जैसे समस्याओं का वर्णन किया है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार गरीब लोग अमीरों द्वारा सताए जाते हैं। दूध का दाम कहानी दलितों के प्रति समाज के रवैये को प्रदर्शित करता है। जिसमें बताया गया है कि कैसे गरीबों को अपनी सेवा का फल तिरस्कार के रूप में मिलता है और उसे दुनिया भर की ठोकर ~~खड़~~ खानी पड़ती है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी में मंगल द्वेवार हमारे समाज पर व्यंग्य किया है। और दलितों पर होने वाले अत्याचारों का ~~र~~ विरुद्ध किया है। साथ इसमें छुआ-छूत की समस्या को भी दर्शाया है।

PAGE No.
DATE / /

·13

राही कहानी समीक्षा :-

राही कहानी सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने कारागार के अनुभवों के ऊपर लिखी है। सुभद्रा कुमारी चौहान जी एक राष्ट्रीय चेतना की रचनाकार रही है। इसी करण उन्होंने कई दफा कारागार में भी समय बिताया है। उसी समय के अनुभवों को इस कहानी के माध्यम से सुभद्रा जी ने पेश किया है।

कथावस्तु :-

कहानी की शुरुआत प्रश्नावली के रूप में होती है। जहाँ अनिता राही से जेल किस जुर्म में आने का और उससे जुड़ी सारी तमाम बातें पूछती है।

राही ने अपने भूखे बच्चों के पेट भरने के लिए पाँच सेर अनाज की गठरी चुराई और उसी के जुर्म में कारावास में थी। राही के पीछे उसके बच्चे की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। उसका पति पुलिस की बेवजह मार से मारा गया था। गठरी चुराने के जुर्म के लिए उसे एक वर्ष तक कारावास में सज़ा काटनी थी। राही माँगरोरी जाति की थी।

कहानी में राही की स्थिति जानकर अनिता को इस वर्ग संघर्ष से परेशानी होती है। जहाँ किसी को पेट भर खाने तक के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

कहानी में दूसरी महिला अनिता थी। जिसके कारागार में आने का कारण था स्वाधीनता

आंदोलन। धनी परिवार से होने के कारण अनिता को कारागार के बी श्रेणी में रखा गया था फिर उसके बाद ए श्रेणी में रखा गया। ए श्रेणी जेल में सारी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध थी कोई जेल वाली परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता था। जीवन की सारी सुख-सुविधाएं उपलब्ध थी।

कहानी में अनिता के अनुसार माँगरोरी जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया गया है। अनिता के अनुसार इन महिलाओं को लघु उद्योग के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। लेखिका के अनुसार देश का कल्याण जनता को आत्मनिर्भर बना कर किया जा सकता है। गरीबी और भुखमरी का अंत हो तथा सभी को भोजन और वस्त्र की मूलभूत जरूरतें प्राप्त हो।

पात्र एवं चरित्र चित्रण :- कहानी के केवल दो ही केंद्रीय पात्र हैं। एक राधी दूसरी अनिता। राधी एक गरीब औरत है जो अपने बच्चों की भूख मिटाने के लिए चावल की गठरी चोरी करती है जिसके जुर्म में वह कारागार में कैद है। दूसरी अनिता है जो एक अमीर घर की महिला है जो स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकार गतिविधियों के कारण जेल गयी थी

देशकाल एवं वातावरण :- कहानी की शुरुआत ही जेल में होती है। वहाँ पर ही दोनों में बात-चीत होती है। अंत तक कहानी कारागार के

वातावरण में दर्शायी गई है। साथ ही स्वतंत्र। स्वतंत्रता संग्राम का वर्णन भी किया है।

संवाद एवं कथोपकथन :-

प्रस्तुत कहानी की भाषा सरल हिंदी है जो हम आम बोल-चाल में बोलते है। कहानी की शुरुआत ही संवादों के माध्यम से ही शुरू होती है। कहानी में राही अपनी जीवन के कुछ पहलू को लेखिका के सामने प्रस्तुत करती है। तथा ~~सब~~ प्रश्न और उत्तर के आधार पर कहानी आरंभ होती है। और अंत तक वैसे ही चलता है।

भाषा शैली :-

जैसे के मैंने ऊपर स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि कहानी में आम-बोलचाल का प्रयोग ~~हो~~ हुआ है। साथ ही प्रश्नावली प्रवृत्ति का प्रयोग किया है। कहानी बड़े ही आत्मीय ढंग से आगे बढ़ती है। शैली के अनुकूल वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इसमें अंग्रेजी तथा उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य :-

राही कहानी में सुभद्राजी का उद्देश्य गरीबों की पीड़ा को सामने लाना था। कहानी में राही के माध्यम से उन्होंने इस बात ~~को~~ पर प्रकाश डाला है कि किस प्रकार भूख के कारण गरीब लोग चोरी करने पर उतर आते हैं। साथ ही देश की समस्याओं को भी उजागर

किया है। साथ ही सत्ता में बैठे लालची लोगों पर व्यंग्य किया है जो सिर्फ अपना भला सोचते हैं।

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने गरीबों के दुख दर्द को कहानी के माध्यम से व्यक्त किया है। और उनकी पीड़ा का वर्णन भी सटीक ढंग से किया है। सुभद्रा कुमारी के अनुसार देश तभी सफल बनेगा जब हम गरीबों की समस्याओं को दूर करके उन्हें आत्म-निर्भर बनाएंगे

14. अपना अपना भाग्य कहानी समीक्षा :-

प्रसतुत कहानी जैनेंद्र द्वारा लिखि गई है। "अपना-अपना भाग्य" के द्वारा लेखक जैनेंद्र कुमार ने सामाजिक विषमता का यथार्थ चित्रण किया है। समाज में गरीब और लाचार बालकों का शोषण को दिखाया गया है। दस वर्षीय दो बालक भूख और गरीबी के शिकार होकर अपने घर से भागते हैं और अंत में समाज के शोषण के कारण मारे जाते हैं। लेखक ने इस कहानी में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि जिसकी अपनी सामाजिक पहचान न होगी, वह यूँ ही शोषित होकर अपनी पहचान के अभाव में कहीं ~~क~~ना कहीं मारा जाएगा।

कथावस्तु :-

लेखक अपने एक मित्र के साथ नैनीताल घूमने गए। वे होटल 'डी-पव' में ठहरे थे। शाम को जब घूमने निकले तब कुछ देर घूमने के बाद एक बेंच पर बैठ गए। समय बीतता गया और अंधकार बढ़ता गया। हवा में नमी बढ़ती जा रही थी लेखक उठना चाहते थे पर उनके मित्र ने हाथ पकड़ कर बैठा लिया। इतने में अंधेरे कोहरे में कुछ चलता हुआ सा दिखाई दिया। वह 10-11 साल का एक लड़का था। नंगे सिर, नंगे पैर, केवल एक कमीज पहने चला जा रहा था। वह अपना सिर खुजला रहा था उसका रंग गोरा था पर मैल से काला पड़ गया था। वह केवल एक कमीज़ पहने चला जा रहा था। और अपने वर्तमान को देख रहा था दुनिया से बेखबर चला जा रहा था।

लेखक के मित्र ने उसे आवाज लगाई। उसने पूछा कि वह कहां जा रहा है। वह कोई उत्तर नहीं दे सका क्योंकि उसका कोई गंतव्य नहीं था। वह किसी दुकान पर नौकर था। मालिक उसे रुखा और जूठा खाना देता था। उसे मालिक के सभी काम करने पड़ते थे। घर से गरीबी के कारण भाग आया था। वह दुकान पर सोता था। आज दुकान के मालिक ने उसे नौकरी से हटा दिया था। इसी कारण उसके पास ना तो सोने के लिए कोई स्थान था और न ही खाने के लिए भोजन।

उसका गाँव वहां से 15 कोस दूर था। उसके कई भाई बहन थे। माँ बाप उसे रहते। ना वहाँ काम था, ना खाने के लिए कुछ था उसी गाँव के अपने एक साथी के साथ भाग आया था। उसके साथी को उसके मालिक ने इतना मारा कि वह मर गया। लेखक तथा उनके मित्र को बालक की स्थिति पर दया आती है और उसे वह अपने एक मित्र के पास ले जाते हैं जो वकील है। परंतु वह मना कर देता है और कहता है उस पहाड़ी लड़का पर भरोसा नहीं है। इस बात पर लेखक अपने मित्र को रखने के लिए कहता है परंतु परिस्थिति के अनुसार वह भी नहीं रख पाते हैं। फिर वह उस लड़का को इसी जगह होटल के पास मिलने को कहते हैं और अपने-अपने कमरों के तरफ जाने के लिए होटल चले जाते हैं।

दूसरे दिन वह लोग फिर उसी जगह जाते हैं और लड़के का इंतजार करते हैं परंतु

लड़का नहीं आता है। तब उसे गाड़ी लेकर दौड़ने निकलते है इसी समय रेडियो में यह स्वर सुनाई देता है ठंड की वजह से एक बालक की मौत हो गई है। वह समझ गए वह बालक जो पिछली रात को उन्हें मिला था वह सड़क के किनारे पेड़ के नीचे ठिठुरकर मर गया। रात में सड़क के किनारे पेड़ के नीचे मुर्दों पर बर्फ की चादर बिछ गई थी जैसे प्रकृति द्वारा उसे सफेद ठंडा कफन सिया गया हो। लेखक और उनका मित्र एक दूसरे को दोष नहीं दे सके। उन्हें लगा कि यह अपने-अपने भाग्य की बात है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण:-

कहानी का प्रमुख पात्र बालक है। 10 वर्षीय बालक जो कि बाहर, काम के तलाश में आया है। इसी बालक के जीवन की त्रासदी को यह कहानी बयां करती है। लेखक दूसरा पात्र है, जो एक बुद्धिजीवी व्यक्ति है साथ ही लोगों के प्रति दया भाव रखने वाला व्यक्ति है। और लेखक के मित्र जो उन्हीं के समान है।

देशकाल एवं वातावरण:-

कहानी में नैनीताल का उल्लेख किया है। वहाँ के सर्दी के मौसम तथा वहां का वातावरण का बहुत ही सटीक तरीके से वर्णन किया है। साथ ही प्रस्तुत कहानी में गरीब लोगों की मनोदशा का वर्णन बहुत ही अत्यंत ~~मार्म~~ ~~मार्म~~ मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

PAGE No
DATE / /

संवाद एवं कथोपकथन :-

कहानी में संवादों के माध्यम से कहानीकार अपनी बात रखी है। संवाद एवं कथोपकथन के माध्यम से ही कहानी में गतिशीलता आती है। साथ ही इन्हीं चीजों को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण देख सकते हैं। लेखक ने जब लड़के से पूछा के वह कहाँ रहता है तो उसने बहुत ही मासूमियत से उत्तर दिया के वह एक गरीब परिवार से ~~लाल~~ है और उसके और भी भाई बहन है और कई बार उन्हें भूखा रहना पड़ता है।

भाषा - शैली :-

प्रस्तुत कहानी खड़ी बोली में लिखी गई है। इसमें उर्दू तथा अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। उदाहरण :- आँख, गाड़ी, कदम, अचानक इत्यादि। यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है। प्रस्तुत कहानी में ~~मन~~ बालमन की चेतना को प्रस्तुत किया है।

उद्देश्य :-

अपना-अपना भाग्य कहानी द्वारा लेखक ने अपने-अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर नैतिकता, परोपकार और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश दिया है।

प्रस्तुत कहानी का बालक केवल इसलिए मृत्यु को प्राप्त हो जाता है क्योंकि कोई उसकी मदद नहीं करता। यदि समय पर उस बालक की सहायता होती तो न केवल वह जीवित रहता अपितु समाज का एक जिम्मेदार नागरिक भी बन सकता था।

लेखक इस कहानी द्वारा यह भी संदेश दे रहे हैं कि समाज के निचले तबके की और सभी की सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी बनती है और उसका निर्वाह भी किया जाना चाहिए। अपना-अपना भाग्य कहकर जिम्मेदारी से मुक्त होने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि हमें कोई भी काम -अपने-भाग्य पर नहीं छोड़ना चाहिए। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने लोगों की कल्पना तथा उनके विचारों को स्पष्ट किया है लोग हमदर्दी तो दिखाते हैं परंतु उनकी मदद नहीं करते। इसी प्रकार जब वह मदद करना चाहते हैं तब तक देर हो जाती है और वह भाग्य का लिखा है सोच कर अपने को मुक्त करते हैं।

DATE / / /

'दो कलाकार' कहानी की समीक्षा

'दो कलाकार' मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध कहानी है। प्रस्तुत कहानी में कथानक शुरू से लेकर अंत तक दो कलाकार सहेलियों के आस पास घूमता रहता है। एक चित्रकार है, तो दूसरी समाज सेविका। एक कला के प्रति समर्पित है और जीवन के रंगों को कैनवास पर उतारना चाहती है, जबकि दूसरी जीवन का सार सेवा-भाव में खोजती है। इस तरह दोनों की रुचियों को, उनके लक्ष्य को कहानी में स्पष्ट किया गया है। कहानी के अंत में दोनों सहेलियों की मुलाकात ~~अब~~ तब होती है, जब चित्रा एक चित्रकार के रूप में प्रसिद्धि पा चुकी होती है। जिस भिखारिन के बच्चों वाली चित्र ने चित्रा को प्रसिद्धि के उच्च शिखर पर पहुँचा दिया था, उन्हीं बच्चों का पालन-पोषण अरुणा करती है। अतः यह प्रश्न उभरकर सामने आता है कि कौन कलाकार है? वह जिसने चित्र बनाया है या वह जिसने पालन-पोषण किया है? अतः दोनों कलाकार मिलकर कहानी के शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध करते हैं।

कथावस्तु :-

दो कलाकार, मन्नू भंडारी जी द्वारा लिखी गयी प्रसिद्ध कहानी है। जिसमें उन्होंने दो लड़कियों का चित्रण किया है और एक सच्चे कलाकार की पहचान पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत कहानी में दो प्रमुख पात्र हैं — अरुणा और चित्रा दोनों ही बहुत घनिष्ठ मित्र हैं। ~~प्रस्तुत कहानी में मुख्य पात्र हैं — अरुणा और चित्रा~~

दोनों पढ़ने के लिए अपने-अपने घर से दूर एक होस्टल में रहती हैं. वे एक ही कमरे में रहती है. दोनों में बहुत ही मित्रता थी. अरुणा की रुचि समाज सेवा में है. वह निर्धन तथा बेसहारा बच्चों को खुले मैदान में बैठाकर पढ़ाती है. चित्रा एक चित्रकार है वह एक अमीर बाप की एकलौती बेटी है तथा उनकी अनुमति से आगे बढ़ने के लिए विदेश जा रही है. एक बार बहुत तेजी से बारिश के कारण बाढ़ की हालत पैदा हो जाती है. लगातार तीन दिनों तक वर्षा होती रही बाढ़ पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी। अरुणा बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए गयी. जब वह पंद्रह दिन बाद लौटी तो वह बहुत बहुत कमजोर हो गयी थी. इधर चित्रा होस्टल छोड़ कर विदेश जाने की तैयारी कर रही थी. होस्टल में जब चित्रा से जब देर से आने का कारण पूछा, तो बताया की किस प्रकार एक भिखारिन तथा उसके दो मृत बच्चों का स्केच बनाने के कारण उसे देर हो गयी. होस्टल से उसे शानदार बिदाई दी गयी. बाद में इसी चित्र के कारण चित्रा को देश विदेश में ख्याति, नाम और पैसा मिला. एक बार जब दिल्ली में चित्रा से अरुणा की मुलाकात हुई. अरुणा के साथ दो बच्चे की ओर इशारा करते हुए बताया की ये वही दोनों बच्चे है जिसे अरुणा ने गोद लिया है. चित्रा की आँखें विस्मय से फैली रह गयी।

पात्र-एवं-चरित्र चित्रण :-

अरुणा कहानी की प्रमुख पात्रा है और चित्रा की घनिष्ठ मित्र है वह हास्टल में रहकर पढ़ाई करती है, किन्तु उसका मन समाज

समाज सेवा में ज्यादा लगता है। वह हर समय समाज-सेवा में व्यस्त रहती है। वह गरीब बच्चों को पढ़ाना अपना कर्तव्य समझती है। वह भावुक संवेदनशील, दयालु, दूसरों के दुख को अपना दुख समझने वाली लड़की है।

चित्रा कहानी का दूसरा प्रमुख पात्र है। चित्रा अरुणा की घनिष्ठ मित्र है वह बघनी पिता की एकमात्र संतान है। वह होस्टल में रहकर पढ़ाई करती है, किन्तु उसका मन चित्रकला में ज्यादा लगता है। वही उसका संसार है। वह महत्वाकांक्षी तथा कलाजगत में यश प्राप्त करने की इच्छुक है। समाज कल्याण के कार्यों में उसकी रुची नहीं है। समाज से न जुड़ पाने के कारण ही चित्रा का चरित्र अरुणा के सामने बौना लगता है।

देशकाल एवं वातावरण :-

प्रस्तुत कहानी में वातावरण के वर्णन नहीं किया गया है। केवल परिस्थितियों के आधार पर कहानी का चित्रण किया। कहानी में सैलाब की परिस्थितियों का वातावरण के संक्षेप में वर्णन है।

भाषा-शैली :-

कहानी की भाषा सरल है। इसमें खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। कहानी आत्मकथा शैली में लिखी गई है।

उद्देश्य :-

'दो कलाकार' कहानी के माध्यम से लेखिका मन्नू भण्डारी ने स्पष्ट किया है कि मानव में कला और संस्कृति का बहुत महत्व है। कला

और संस्कृति का बहुत महत्व है। कला के विभिन्न रूपों के माध्यम से मानव-जीवन में आदर्श और यथार्थ का मिलन संभव होता है। एक तरफ चित्रा ने कला के माध्यम से उसकी अभिव्यक्ति कि, दूसरी ओर अरुणा ने उन्हीं बातों को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया और समाज का कल्याण किया। दोनों बच्चों को गोद ले लिया इस तरह अरुणा चित्रा के सामने गरीब होकर भी उससे बुलंद थी। और यही लेखिका का देखने का उद्देश्य था।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि लेखिका ने दोनों कलाकारों की तुलना उनके काम के माध्यम से किया है। और दोनों ही अपने-अपने काम के अनुसार कार्य करते है। एक चित्रकला के माध्यम से उन परिस्थितियों का वर्णन करता है। और उसकी चर्चा हर जगह होती है, वहीं दूसरी ओर अरुणा दत्तात्रेय बच्चों को गोद लेकर उन्हें नयी पहचान देती है और उनका साहस बनाते हैं तरह से समाज का कल्याण करती है।

PAGE No.
DATE / /

* निष्कर्ष :-

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि इन 15 कहानियों में हर लेखक ने कुछ न कुछ संदेश दिया है। और हर कहानि अपने-आप में पूरी है। और इन कहानी से निष्कर्ष निकलता है वह निम्नलिखित रूप में है। उदाहरण स्वरूप

→ मुण्डा - इस कहानी में आदर्शवाद तथा प्रेम, करुणा और आनंद, सयोजन मन्यताओं को विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से दिखा है।

→ पत्नी :- इस कहानी में एक पत्नी के भावों तथा मनोदशाओं को चित्रित किया है जो अपने पति के तरफ से मायूस है।

→ पाजेब : इस कहानी में एक बालक एक बालक जो पाजेब चोरी नहीं करने के बावजूद भी सजा को भुगत रहा है। इसी बालमनो दशा को इस कहानी में दरशाया है।

इन सबके अतिरिक्त और भी कहानियाँ है जैसे, आकाशदीप, जिसमें मानव को जागरूक करने का संदेश है। कफन - इस कहानी में समाज की हीनता तथा मनुष्य मरे हुए हृदय का वर्णन है। 'उसने कहा था' इस कहानी में अपने किए हुए वादे को पूरे करने के लिए लहना सिंह अपनी जान की परवाह नहीं करता है। 'बड़े घर की बेटी' इसमें आदर्श तथा परिवार को जोड़ने के में अच्छे संस्कारों का उल्लेख किया है। इन सब के अतिरिक्त, बड़े भाई साहब, ईदगाह, राजा निरबंसिया, दूध का दाम, राही, अपना-अपना भाग्य, दो कलाकार, इत्यादि कहानियों में कुछ ना कुछ मानव कल्याण के लिए संदेश है।

श्रीमती मणिबेन एम. पी. शाह विमेंस
कॉलेज ऑफ आर्टस एंड
कॉमर्स

एम. ए. हिंदी (चतुर्थ सत्र)

इंटर्नशिप प्रोजेक्ट - जून २०२१.

साक्षी झारापकर

०७.

समकालीन महिला लेखिकाएँ

और उनकी कहानियाँ ।

Sundaram®

FOR EDUCATIONAL USE

अनुक्रमणिका

१) प्रस्तावना
२) मन्नू भंडारी
३) सयानी बुआ
४) अकेली
५) रजनी.
६) त्रिशंकु.
७) सुभद्रा कुमारी चौहान.
८) ग्रामीणा
९) गौरी
१०) किस्मत.
११) दो सखियाँ
१२) अनुरोध
१३) नारी हृदय
१४) होली
१५) हींगवाला
१६) शिवानी
१७) लाटी
१८) कृष्णा सोबती
१९) सिक्का बदल गया।
२०) दादी अम्मा।
२१) निष्कर्ष।

Sundaram®

FOR EDUCATIONAL USE

प्रस्तावना

साहित्य और समाज का संबंध बहुत पुराना है। उनका संबंध अनादिकाल से चला आ रहा है और दोनों का संबंध मनुष्य से है। मनुष्य समाज में रहने के साथ-साथ समाज को भी प्रभावित करता है और खुद भी प्रभावित होता है। साहित्यकार समाज का अंग है और समाज की परिस्थिती का प्रभाव उस पर पड़ता है। साहित्यकार समाज को साहित्य में बांधता है और साहित्य से समाज का मार्गदर्शन होता है। साहित्यकार समाज की समस्यायों को देखता, सुनता और समझता है और उसी तरह साहित्य की सृष्टि करता है।

इक्कीसवीं सदी के साहित्यिक परिदृश्य में स्त्री को केंद्र में रखकर होनेवाले चिंतन ने अब एक निर्णायक स्थिति अख्तियार कर ली है। सदियों से हाशिए पर खड़े हुए ये वर्ग अब चर्चा में है और अपना महत्व सुनिश्चित सुनिश्चित कर चुके हैं। समकालीन स्त्री लेखन में स्त्री की अस्मिता की पहचान की कोशिश है। साथ ही वह परंपरा और रूढ़ी के विरुद्ध सर्वकता से संघर्ष और प्रतिरोध कर रहा है। आज की इस भूमंडलीकृत समाज में स्त्री के प्रति व्यावसायिक और भोगवादी नजरिया तेजी से पनपा है। समकालीन महिला रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस स्थिति से उबरने की सृजनात्मक कोशिश की है। उनकी रचनाओं में समाज की इस व्यवस्था में नारी की स्थिति को बड़ी ईमानदारी के साथ व्यक्त किया गया है।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

स्त्री लेखन और उसके जीवन अनुभूत के बीच का फासला बहुत कम है। शायद यही वजह है कि स्त्री लेखन अपनी प्रारंभ से ही समाज और परिवार द्वारा बनाए दायरों को अतिक्रमण करने की कोशिश करता रहा है। वो दायरे जो उसके अपने ने कभी सुरक्षा, कभी मर्यादा के नाम पर उसके लिए रचे हैं। इन दायरों की पहचान और समझ "कि समाज के विधानों की जंजीरों से जकड़ी हुई नारी जब तक अपने बंधन आप नहीं काटती - कोई शक्ति उसका सर्वनाश होने से नहीं बचा सकती"। वास्तव में स्त्री का प्रतिरोध या चेतना की जागृति एक ही घटना नहीं है। इसमें सदियों से चली आ रही संघर्ष, की गाथा प्रस्तुत है। इसमें सांस्कृतिक नवोत्थान, शैक्षिक संस्थाएं एवं नारीवादी आंदोलनों का प्रमुख हिस्सा है।

समकालीन लेखिकाओं ने आज के जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी - जीवन के परिवर्तित मूल्यों को अत्यंत मार्मिकता के साथ अपने उपन्यासों, कहानी संग्रहों में चित्रित किया है। नीत नई होती टेक्नोलोजी, भूमंडलीकरण और बाजारवाद के इस दौर में, जबकि स्त्री की दबी- ढुबकी दुनिया में एक जबर्दस्त परिवर्तन आया है, बेशक वह कितना ही सतही क्यों न हो, कहानी के भीतर भी यह बदलाव भिन्न - भिन्न रूपों में प्रतिध्वनित हो रहा है। आज एक बड़ी संख्या में स्त्री कथाकार सामने आ रही हैं और तमाम नारी आंदोलनों और स्त्री विमर्शों को बरबस खुलकर लिख रही

हैं। उन्होंने यह मिथ्या भी तोड़ी है कि स्त्री सिर्फ घर-परिवार की ही बात कर सकती है। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, उषा प्रियंवदा से लेकर चित्रा मुद्गल मुद्गल, अलका सरावगी, चन्द्रकान्ता, ~~मैत्रीय~~ ~~मैत्र~~ मैत्रेयी पुष्पा, राजी सेठ, अर्चना वर्मा, मधु कांकरिया, आलपना ~~मिश्र~~ मिश्र, मनीषा कुलश्रेष्ठ, जया जादवानी, उर्मिला शिरीष, गीतांजली श्री, सुषमा मुनीन्द्र, रोहिणी अग्रवाल, रजनी गुप्ता, कविता, नीलिमा सुधा अरोड़ा, इंदिरा दांगी आदि की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने हिंदी कथा साहित्य को अपनी लेखन से सींचा है।

लॉकडाउन होने के कारण इस वर्ष मैं इ के लिए 19 कहानियों की समीक्षा करनी थी जो अपने आप में अलग अनुभव रहा। मैंने अपनी 19 कहानियाँ महिला लेखिकाओं द्वारा लिखी गई कहानियाँ चुनी हैं।

मन्नू भंडारी

स्वतंत्रता के बाद जिन कहानीकारों ने अपनी विशिष्ट एवं अलग पहचान बनाकर हिन्दी कहानी को एक नयी दिशा दी थी, उनमें मन्नू भंडारी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। मन्नू भंडारी ने सामाजिक मान्यताओं और रूढ़ियों के प्रति स्वस्थ दृष्टि का विकास हुआ। इनकी कहानीकला चुनौतियों से जूझती हुई बेबाक भाषा में सामाजिक सरोकार की कहानियाँ हैं। अर्धसामन्ती व अर्धपूंजीवादी समाज में नारी का संघर्ष जागरूकता इनका विषय है।

मन्नू भंडारी ने अपनी रचनाओं में मानव-मन का अत्यन्त ~~मनो~~ मनोवैज्ञानिक रूप से चित्रण किया है। मन्नू भंडारी ने नारी मनोविज्ञान का अत्यंत बारीकी के साथ चित्रण किया है। भारतीय नारी के तथाकथित आदर्शों, घटाटोप में छटपटाती नारी की आशाओं, आकांक्षाओं और लालसाओं को निर्भीक वाणी दी है, जिसमें नारी अपनी पारम्परिक छवि से बाहर निकलकर मानवी नारी के रूप में सामने आती है।

मन्नू भंडारी हिंदी साहित्य की उन महिला लेखिकाओं में स्थान रखती हैं, जिन्होंने कहानी के स्वरूप को नयी जमीन दी। इनकी कहानियाँ हों, चाहे फिर उपन्यास प्रत्येक पात्र, प्रत्येक घटना बड़ी सजीवता के साथ पाठकों के सक्षम आ खड़ी होती है। इनके पति एवं कहानीकार राजेन्द्र यादव का लेखन दूसरी महिला कथाकारों से स्वतंत्र एवं विशिष्ट मौलिकता लिये हुए है।

FOR EDUCATIONAL USE

सयानी बुआ

प्रस्तावना - इस कहानी में एक कठोर अनुशासन का पालन करनेवाली तथा अपने परिवार के सदस्यों के साथ कठोरता बरतने वाली स्त्री के दोहरे रूप का वर्णन किया है। बुआ नारियल समान है, ऊपर से कठोर ; परंतु वास्तव में कोमल हृदयी।

कथा-वस्तु - सयानी बुआ एक चरित्र प्रधान कहानी है। कहानी के कथ्य का केन्द्रबिंदु सयानी बुआ का चरित्र है। यह कहानी समय की पाबंद और अति व्यवस्था से बँधी सयानी बुआ की है। मन्नू भंडारी द्वारा लिखी यह कहानी अत्यंत प्रसिद्ध रही। बुआ बचपन से ही समय की पाबंद रही। वे अपनी चीजें इस प्रकार से संभाल कर रखती थी की कहानी में उदाहरण स्पष्ट करती हुए लिखा है कि बुआ जो पेंसिल खरीदती ; वह ~~तब तक~~ तब तक उसका इस्तमाल करती जब तक वह हाथ में न पकड़ आए या रब्बर भी इस तरह उपयोग करती थी कि जो रब्बर उन्होंने चौथी कक्षा में खरीदी किया था वह नौवीं कक्षा में आकर समाप्त किया। इसी से उनका समान को संभालकर रखना और व्यवस्थित रखना यह प्रदर्शित होता है।

सयानी बुआ को सयानी नाम पड़ा तो वह उनके व्यवहार के कारण। लेखिका को लगता है कि जिसने नाम रखा वह नामकरण विद्या का अवश्य पारखी रहेगा।

Sundaram®

FOR EDUCATIONAL USE

ससुराल आने के बाद भी उनकी ये आदतें कुछ बदली नहीं। उनके नियमानुसार घर के सारे काम होते थे एवं घर के सभी लोग उनके दिनचर्या के हिसाब से चलते थे। सुबह सभी लोग पाँच बजे उठते, फिर मैदान में टहलते, फिर चाय दूध होता थौर और फिर उनकी पाँच वर्ष की बेटी अन्नू व पढ़ने बैठ जाती। पति अखबार पढ़ते या फाइल देखते और फिर सभी अपने-अपने काम पर लगते। लेखिका जब छोटी थी तब उनके पिता ने उन्हें बुआ के पास आगे की पढ़ाई करने भेजा था। लेखिका को बुआ का बड़ा डर लगता था क्योंकि लेखिका ने अपने पिता से बुआ के किस्से सुने थे। लेखिका बुआ के घर रहने आयी और मानों लेखिका भी मुरझा सी गई। लेखिका यह यंत्रचलित घर में बड़ी मुश्किल से फीट करने का प्रयास करती है। सबसे ज्यादा तरस अन्नू पर आता था। वे नन्हीं सी उम्र में प्रौढ़ हो गई थी। यू तो बुआ ने संसार को ५५ वर्ष हो चुके थे; परंतु उनके घर की चीजों को देख ऐसा लगता मानो सब कुछ कल ही लिया हो। एक बार नौकर से सुरही छूट गई तो बुआ ने उसे खूब पीटा था।

एक बार बुआ जी की अन्नू की खानपान पर अत्याधिक सतर्कता होने के बावजूद भी अन्नू की तबियत खराब हो गई। एक महिने तक तरह-तरह के उपचार किया; परंतु असर कुछ नहीं हुआ। वह दिन-भर-दिन

पीली और सुखती जा रही थी। कई तरह से परिक्षणों के बाद डॉक्टर ने सलाह दी कि अन्नू को वहीं पहाड़ी जगह पर ले गया जा। क्योंकि पति को मालूम था कि यदि बुआ भी उनके साथ आती तो अन्नू वापस सहमी सी रहती। यह सब बात पति ने डॉक्टर को बताई तो डॉक्टर ने कहा था की बुआजी के बिना अन्नू को लेके जाए। बुआ को वो बात बिल्कुल ना भावी ; परंतु डॉक्टर की बात बुआ टालना न चाहती थी। जब अन्नू का ~~जाने~~ पति के साथ जाना तैय हुआ तो बुआ जी ने बड़ी सी लीस्ट बनाई जिसमें अन्नू का पूरा दिनचार्य लिखा हुआ था। इस प्रकार बुआ वहाँ न होते हुए भी वहीं थी। उनकी हिदायतों में अन्नू का फ्रॉक, गिलास, कप आदि सब कुछ सँभालकर रहना रखना भी मौजूद था। अन्नू और पति जाने के बाद बुआ दुःखी सी रहती थी। अन्नू की सेहत की खबर पति पत्र द्वारा भेजते। यह सब पत्र व्यवहार एक महिने तक चलता रहा। फिर अचानक तीन दिनों तक कोई पत्र नहीं आया तो बुआ भी बहुत डर गई और साथ ही ~~लि~~ लेखिका को बहुत ही चिंता हुई। चौथे दिन जब पत्र आता है तो पत्र का प्रारंभ पढ़कर बुआ रो पड़ती है क्योंकि बुआ समझती है कि अन्नू अब इस दुनिया में नहीं रही। बुआ सिमटकर जोर-जोर से रो पड़ी। लेखिका भी धक सी रह गई। लेखिका ने फिर वह पत्र लिया और डर-डर कर पढ़ने लगी। अंत में यह बात सामने आई की बुआ के पचास रुपए के गिलास के का सेट गिर कर टूट गया। यह बात जब लेखिका ने बुआ को बताई तो बुआ

रोते-रोते हँस पड़ी। जो बुआ नौकर को सिरदी टूटने पर मारी थी वह आज अपने अमूल्य गिलास टूटने पर भी हँस रही थी।

भाषा- इस कहानी की भाषा शैली सरल, सहज व स्वाभाविक है। इस रचना में बोलचाल की हिंदी भाषा का प्रयोग हुआ है। संवाद छोटे-छोटे किंतु चुस्त है। इसमें कई विदेशी शब्द जैसे पेंसिल, रबर, गिलास, टाईम-टेबल का प्रयोग हुआ है। तद्भव शब्द आँसू और तत्सम शब्द आदेश का प्रयोग भी हुआ है।

उद्देश्य- स्त्री का वह रूप जो अपने परिवार के लिए या परिवार की सुरक्षा के लिए सब कुछ माफ कर सकती है इसका सटीकता से मन्नू भंडारी जी ने वर्णन किया है। दुनिया के लिए कितनी ही कठोर क्यों न हो पर अपनी बच्ची के लिए वह ममता से भरी होती है। इस प्रकार से स्त्री के दोहरे रूप का चित्रण इस कहानी के अंतर्गत हम देख सकते हैं।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

अकेली

प्रस्तावना- मन्नू जी के 'अकेली' कहानी का जैसे शीर्षक है वैसी ही इसकी कथा भी है। यह एक चरित्र-प्रधान कहानी है। सोमा बुआ बूढ़ी परित्यक्ता तथा अकेली स्त्री है। इस कहानी में मन्नू जी ने सोमा बुआ का चरित्र-चित्रण बहुत ही संवेदनापूर्ण ढंग से चित्रित किया है। बुआ अपना मन बहलाने के लिए गली के सभी लोगों के साथ मिल-जुलकर रहती है। उनके सारे काम अपने काम समझकर करती है। लेखिका कहानी द्वारा एक स्त्री के अकेलेपन तथा उसके जीवन जीने की आशा पर प्रकाश डालती है। उस अकेले स्त्री के मन में उठने वाले मनभावों को कहानी में पेश किया है।

कथा-वस्तु- सोमा बुआ पिछले बीस वर्षों से अकेली रहती है। उनका अकेला बेटा हरखु बहुत कम उम्र में चल बसा था। उनके पति पुत्र वियोग सहन न कर सके और घर छोड़कर तीर्थवासी हो गए। वे हर साल एक महिने के लिए बुआ के साथ रहने आते। पड़ोसियों के सहारे बुआ अपना जीवन काटती। दूसरों के घर यदि कोई कार्यक्रम हो, तो बुआ ऐसा काम करती मानो अपने ही घर का कार्यक्रम हो। जब बुआ के पति घर पर होते हैं तब बुआ का अन्य घरों में सक्रिय बना रहना बंद हो जाता है। तब ही उनकी जीभ सक्रिय हो उठती है। पड़ोस में राधा रहती थी जो बुआ की खास पड़ोसन थी। बुआ अपनी मन की सारी बातें राधा के संग बयान करती। राधा ने जब पूछा कि सन्यासी

महाराज क्यों बिगड़ पड़े तो बुआ बोली कि उनका औरों के घर आना-जाना उनके पति को नहीं सुहाता। पति का स्नेहहीन व्यवहार तथा बुआ के पास पड़ोस से बिन-बुलाये निभाए जाने वाले व्यवहारों पर पति द्वारा लगाया जाने वाला अंकुश उन्हें कष्ट देता है। वो हमेशा राधा से रोती हुई हुई कहती है कि ये तो हरिद्वार चले जाएँगे, सबसे निभाना तो मुझे है। वह ~~वे~~ राधा से यह भी कहती कि यदि उनका बेटा हरखू होता तो क्या वह कोई बुलावे का इंतजार करती? मेरे लिए जैसे हरखू वैसा किशोरी-लाल जहाँ वे काम करने गई थी। असल बात तो यह थी कि बुआ अकेली होने के कारण अपना मन बहलाने के लिए सभी से घुल-मिल ~~रह~~ कर रहती। यदि वो किसी को गली में घुसती हुए देखती तो उनका चेहरा चमक उठता।

जब पति आए थे तभी बुआ के दूर के रिश्ते में किसी का ब्याह पड़ ~~+~~ जाता है। था। पति ने बुआ को निर्देश दिया था कि जब तक न्योता न आए तब तक जाने की जरूरत नहीं है। उनकी विधवा बुआ ने जान-बूझकर झूठ बोला था कि निमंत्रण की लिस्ट में बुआ का नाम भी है। यह बात सुनकर बुआ ने तय कर दिया था ~~+~~ कि वे शादी में जायेंगी। शादी में भेंट भेंट क्या दे इस प्रश्न से बुआ को चिंता हो जा रही थी। बुआ ने सोचा की रिश्ते में होने के कारण कुछ अच्छा भेंट देना जरूरी है। उनके पास पैसे कम थे तो अपने बेटे की आखिरी निशानी अँगूठी बेच कर जो पैसे आए उस वह उसे

राधा को देखकर दे कर तौफा लाने को कहा। राधा ने चाँदी की सिंदूरदानी और साड़ी - ब्लाऊज का इंतजाम किया। बुआ ने शादी में पहनने के लिए लाल - हरी चुड़ियाँ भी खरीद ली। अपने साड़ी को रंग देकर और गोट लगाकर बुआ पूरी तरह से तैयार बैठती है। जब राधा पूछती है कि बुआ न अब तक गई नहीं, तो उसपर बुआ उत्तर देती है हुई कहती है कि बड़े लोग हैं आमंत्रण शायद थोड़े देर से आएगा। मुहूर्त तो पाँच बजे का था ; परंतु सात बजे तक किसी का पता भी नहीं। बुआ को बुरा तो बहुत ज्यादा ही लगा। इतनी तैयारियों के बाद साथ, पल-पल निमंत्रण के इंतजार के बाद बुआ को विश्वास ही नहीं होता कि रात कैसे बज सकते हैं जबकि मुहूर्त पाँच बजे का था। सोमा बुआ को शादी का बुलावा नहीं आया था। ऐसे ही उन्हें किसी के घर से बुलावा नहीं आता फिर भी बुआ बिन बुलाये ही चली जाती।

भाषा- भाषा शैली अत्यंत स्वाभाविक है। सरल शब्दों में कहानी को पिरोया गया है। इसमें तत्सम शब्द जैसे आम, उच्च, कोटि का प्रयोग किया है।

उद्देश्य- इस कहानी में ऐसा एक चरित्र है जो सामाजिक संबंधों, को निरंतर बनाए रखने के लिए स्वयं प्रयत्नशील है। आज भी उनके मन में परंपरागत अधिकार को बनाए रखने का मोह है। जिसके लिए वे अपनों को गाँववालों से जोड़े रखती है। कहानी में मन्नूजी ने आधुनिक परिवेश में व्यक्तिवादिता और उपयोगतावादिता को प्रस्तुत किया है। आज पारस्परिक संबंधों में जैसे दरार सी पड़ गई है। विशेषतः दीन और दुखी लोगों के साथ कोई अपना रिश्ता बनाए नहीं चाहता। व्यक्ति का एकाकीपन आधुनिक समाज का शाप है।

Sundaram FOR EDUCATIONAL USE

रजनी

प्रस्तावना- रजनी कहानी मन्नू भंडारी द्वारा लिखीत सुप्रसिद्ध कहानी है। य कहानी अत्यंत प्रासंगिक है। प्रस्तुत अंश में व्यवसाय बनती शिक्षा की समस्या की ओर हमारा ध्यान खिंचता है।

कथावस्तु- कहानी की शुरुआत लीला के घर से होती है, रजनी जो लीला की पड़ोसन है लीला को साथ में बाजार चलने को कहती है। लेकिन लीला उसे कहती है कि आज उसके बेटे का रिजल्ट आने वाला है, जिससे सुनकर रजनी खुश होती है और रूप जाती है। दोनों को विश्वास था की अमित के अच्छे अच्छे अंक आएँगे। लिला ने तो केसर रसमलाई भी मँगवा रखी थी अमित के लिए। लीला रजनी को अमित का हीरो कहकर संबोधित करती है। जब अमित घर आता है तो उसके आँखों में आँसू देखकर दोनों परेशान हुए। अमित के साथ हाथमें रिपोर्ट था। अमित कहता है यह लो मेरा रिपोर्ट कार्ड - मैंने पहले ही कहा था मेरा मैथ्स का ट्यूशन लगवा दो। लीला ने कहा कि तुमने तो सारे जब जवाब सही दिए। रजनी ने रिपोर्ट देखा तो सारे विषयों में अच्छे संक थे, सिर्फ मैथ्स में थोड़े कम अंक थे। अंकित अंग्रेजी की ट्यूशन लेता था; परंतु लीला दो विषयों की ट्यूशन लगाने में असमर्थ थी। रजनी ने जब अमित से पूछा तो अमित ने कहा की सर के पास ट्यूशन ने लेने के कारण मेरे कम अंक आए है। रजनी अगले दिन स्कूल जाने की बात कहती है और पेपर देखना चाहती है & जिससे पता चले सब सचा

अगले दिन रजनी स्कूल पहुँच जाती है डेडमास्टर के पास। वह डेडमास्टर से अनुरोध करती है कि उसे अमित का पेपर देखने को दो। हेडमास्टर साफ-साफ मना कर देते है। रजनी कहती है उन्हें कि अमित को हर विषय में अच्छे अंक है, सिर्फ मैथ्स में नहीं क्योंकि वह ट्यूशन नहीं जाता क्या यह वजह है। डेडमास्टर कहते कह जाते कि यह बात- छात्र-शिक्षक के बीच की है। तू-तू मैं-मैं के बाद हेडमास्टर ने रजनी को कमरे से निकालने की का आदेश दिया सिपाही को। रजनी हेडमास्टर को यहाँ तक बोली कि अगर किसी को जाने की जरूरत है तो वह आप है जो ये कुर्सी पर बैठकर भी समस्याओं का निर्वाण निवारण नहीं कर पा रहे है।

दूसरे दिन फिर रजनी डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन के ऑफिस उनसे मुलाकात करने पहुँचती है और बाहर बैठकर अंदर बुलाने का इंतजार करती है। एक व्यक्ति के स्लिप के साथ रुपए 5 देने पर चपरासी उसे अंदर कमरे में भेज देता है। यह सब देखकर रजनी गुस्से से अंदर जाती है और डायरेक्टर को सारे बातें बता देती है। डायरेक्टर कहते है कि आप पहली व्यक्ति और शायद आखिरी व्यक्ति हो जिसने यह समस्या हमारे सामने लाई। रजनी यह सब सुनकर निश्चय करती है कि वह औरों के माँ-पिता से भी आगे आने की दरख्वास करेगे।

रजनी अखबार संपादक के दफ्तर जा पहुँचती है। मीडिया द्वारा यह मुद्दा उठाती है। पेरेंट्स मीटिंग रखती है जिसमें वह मांग करती है कि कोई भी टीचर अपने स्कूल

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

अपने ही स्कूल के छात्र को ट्यूशन ना दें जिससे कि किसी के मार्क्स कटने की समस्या उत्पन्न ना हो। अगले दिन रजनी का पति रजनी के बारे में अखबार में छपे लेख पढ़ता और उसे सुनाता है। रजनी कहती है कि अगर डटकर मुकाबला किया जाए तो कौन सा ऐसा अत्याचार है, जिसकी धज्जियाँ ना उड़ाई जा सके।

भाषा- कहानी को सरल सटीकता से लिखा गया है। यह कहानी 2 दृश्यों में बाँटी गई है। इसमें विदेशी शब्दों का प्रयोग हुआ है। हैडमास्टर, टीचर्स, स्टूडेंट्स, स्लिप, आई ज्म प्राउड ऑफ यू, रियली, वैरी प्राउड का प्रयोग हुआ है।

उद्देश्य - इससे यह उद्देश्य मिलता है कि कैसे हमें अपने अन्यायों के प्रति आवाज उठानी चाहिए। हम यह भूल जाते हैं, अन्याय करने वाला जितना मुजरिम गुनाहगार उतना होता है, उतना ही अन्याय सहन करने वाला होता है। इस पाठ में यह दिखाया गया है कि कैसे रजनी के आवाज उठाने से ट्यूशन के नाम पर चल रही धांधलियों के विरुद्ध एक आंदोलन छिड़ गया और अंत में वह इस आंदोलन को जीतने में सफल भी हुई इससे शिक्षा मिलती है कि हमारे साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ हमें कदम उठाने चाहिए।

त्रिशंकु

प्रस्तावना- घर की चहारदीवारी आमदी को सुरक्षा देती है, पर साथ ही उसे सीमा में बाँधती भी है। स्कूल-कॉलेज जहाँ व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास करते हैं, वहीं नियम-कायदे और अनुशासन के नाम पर उसके व्यक्तित्व को कुंठित भी करते हैं। यह बात मन्नू भंडारी जी की 'त्रिशंकु' कहानी में बताई गई है।

कथा-वस्तु- त्रिशंकु का अर्थ है 'निराधार लटकते रहना' और यह इस कहानी पर सटीक बैठता है। कहानी आजकल के समय के ऐसे परिवारों की है जिसमें व्यक्ति अपने को आधुनिक समझते हैं; लेकिन जब उनके बच्चें उनका अनुकरण करते हैं तो वे घूम-फिरकर अपने सोच उन पर थोपने लगते हैं। तनु और उसके घर के लोग बेहद आधुनिक दिखाई गए हैं। तनु की मम्मी ने प्रेम विवाह किया था जब की उनके पिता (नाना) उसके विरोध में थे। यह उस उनके हिसाब से एक उदाहरण हुआ मॉडर्न होने का। लेकिन जब तनु प्रेम कर बैठती है तो मम्मी अपने पिता जैसा रवैया रखती है। कठोरता से मन तनु के साथ व्यवहार करती हैं।

इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं। वे तीन मुख्य पात्र है तनु, उसकी माँ और शेखर (प्रेमी)। तनु के घर में बहुत आधुनिकता के चर्चे होते रहते हैं। पूरे दिन उसके घर में मिटिंग जमी रहती है। उसको बाहर जाने का मौका ही नहीं मिलता था। पूरा दिन कहाँ चला जाता था इसका उसे पता ही नहीं चलता था

बचपन से ही वह चार दिवारों में सिमट कर रह गई। जब बड़ी हुई तो उसे यह बात पता चला कि उसके ऐसे कोई विशेष दोस्त नहीं। ~~सम~~ सामने वाले घर में दो लड़के रहने को आए थे। वे लड़कों के मित्र भी वहाँ आया करते थे। वे सब छत पर खूब-मजाक-मस्ती करते जिसे तनु देखती रहती। गली के सब लोग उनके खिलाफ थे। जब तनु ने यह बात अपनी मम्मी से कही तो मम्मी ने उन्हें चाय का बुलाने का आमंत्रण दिया। कहीं-न-कहीं तनु भी ~~उन~~ उनसे दोस्ती करना चाहती थी। वे जब आए तो खूब दोस्ती हुई सब की। और फिर वे रोज आते-जाते रहते।

वे तनु के घर में आकर, उसके कमरे में आकर उसे बात-चीत करते। यह सिलसिला कुछ दिनों तक चला। पड़ोसी हमेशा कुछ-न-कुछ बोला करते। फिर कुछ दिनों बाद ~~के~~ वे लड़के अपनी-अपनी आगे की पढ़ाई करने के लिए दूसरे शहरों में गए। उसमें से एक लड़का ~~शेखर~~ शेखर नहीं रुका। देखते-ही-देखते तनु और शेखर की दोस्ती प्यार में बदल गई। वे दोनों चिट्ठियों से बातें करते। एक दिन ~~चिट्ठिं~~ चिट्ठियाँ माँ के हाथ लग गई और माँ के गुस्से का ठिकाना न रहा। उसने तनु को खूब खरी-खोटी सुनाई। तनु को लगा कि ये शब्द मानो मम्मी के नहीं नाना के हैं। वे कभी ~~मम~~ मम्मी की तरफ प्यार करती तो कभी नाना की तरफ ~~पल~~ फटका देती।
कुछ दिनों तक तनु और शेखर नहीं मिले। कुछ दिनों बाद तनु को ~~शेखा~~ शेखर छत पर दिखा। दूसरे ही दिन मम्मी ने ~~शेखा~~ शेखर को घर बुलाया चाय के लिए। ~~कु~~ तनु को यह देखकर ~~आश्चर्य~~ आश्चर्य हुआ कि मम्मी शेखर

को प्यार से सहला रही थी।

माँ तनु को समझाती है कि अभी तुम्हारी उम्र नहीं है प्यार की तो तनु उत्तर देती है। कुछ दिनों बाद जब परिक्षा थी, तो तनु ने खूब मन लगाकर पढ़ाई की और अच्छे अंक से उत्तीर्ण हुई। जब तनु ने माँ से पूछा कि क्या मैं, शेखर और दीपक पिक्चर देखने जाऊँ तो माँ ने साफ-साफ मना तो नहीं किया; परंतु उनके साथ जाने का आग्रह किया। कुछ दिनों बाद जब मम्मी को च पता चला कि तनु शेखर के कमरे में जाती थी तो मम्मी चिढ़ चिढ़ बैठी तनु पर। तनु को अब तक नहीं समझा कि जो मम्मी खुद अपने पिता से मोर्चा कर बैठी थी आज खुद की बेटी से क्यों लड़ रही है।

भाषा- कहानी की भाषा अत्यंत सटीक है। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। विदेशी शब्द जैसे की, मिटिंग, पिक्चर का प्रयोग किया है।

उद्देश्य लेखिका ने कहानी के माध्यम से ~~ऽ~~ दोहरे लोगों ~~के~~ का पर्दा फाश किया है। एक तरफ तो आधुनिक होने की बातें करते है और + दूसरी तरफ यह दकियानुसी बातें। इंसान को विचारों से आधुनिक होना चाहिए। मनुष्य को दूसरों के मत और इच्छाओं का आदर और सम्मान करना भी आना चाहिए।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी' कविता की चार पंक्तियों से पूरा देश आजादी की लड़ाई के लिए उद्वेलित हो गया था उनकी कविता 'झाँसी की रानी' लोगों के कंठ का हार बन गई है। सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म नागपंचमी के दिन 16 अगस्त १९०४ को इलाहबाद के पास निहालपुर गाँव में हुआ था।

सुभद्रा जी ने कहानी लिखना आरंभ कर दिया था क्योंकि उस समय कोई भी संपादक कविताओं पर पारिश्रमिक नहीं देता था। उनसे संपादकगण गद्य रचना चाहते थे और उनके लिए पारिश्रमिक भी देते थे। समाज की अनीतियों से उत्पन्न जिस पीड़ा को वे व्यक्त करना चाहती थीं उसकी अभिव्यक्ति का उचित माध्यम गद्य ही हो सकता ~~था~~ था; अतः सुभद्रा जी ने कहानियाँ लिखीं। उनकी कहानियों में देश प्रेम के साथ-साथ समाज को, अपने व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्षरत नारी की पीड़ा और विद्रोह का स्वर मिलता है। साल भर में उन्होंने एक कहानी संग्रह 'बिखरे मोती' ही लिख दिया 'बिखरे मोती' छपवाने के लिए वह इलाहबाद गईं। 'बिखरे मोती' के लिए उन्हें सेकसरिया पुरस्कार मिला। उनकी अधिकांश कहानियाँ सत्य घटना पर आधारित हैं। देश-प्रेम के साथ-साथ उनमें गरीबों के प्रति सच्ची सहानुभूति मिलती है।

ग्रामीणा

प्रस्तावना- ग्रामीणा एक ऐसे स्त्री की कहानी है जो सिंदादिली थी; परंतु शादी के बाद पती के हिदायतों के कारण एकदम मुरझा सी गई। सुभद्रा कुमारी चौहान जी द्वारा रचित ग्रामीणा कहानी में सोना गाँव की जन्मी और शहर में ब्याही लड़की की कहानी है। किस प्रकार से सोना पर परिवार वालों का बोझ पड़ने से उसका लड़कपन खो जाता है और उसे आत्महत्या करने को बेबस किया जाता है इसका सटिकता से चित्रण हुआ है।

कथा-वस्तु कहानी की शुरुआत पंडित रामधन तिवारी को बड़ी मिन्नतों के बाद बेटी होने से होती है। बहुत सुंदर वर्णन सोना अर्थात बेटी की का किया गया है। बेटी होने की खुशी में पंडित रामधन गाँव में मिठाईयाँ बाँटते हैं। खुले हाथों से खर्च किया। घर में बहुत दिनों तक ढोलक बजे। आखिर निःसंतान होने का कलंक धुल गया ही रामधन तिवारी के सिर से। यहाँ ऐसी मानसिकता दर्शायी है कि संतान की खुशी तो है; उसी के साथ निःसंतान का जो कलंक है वो मिट जाने की खुशी भी है। सोना का लालन-पालन अत्यंत प्यास से किया गया।

सात वर्ष की जब सोना हुई तो पिता ने घर में मास्टर लगवा दिए और सोना भी खूब मन लगा कर पढ़ती। रामायण और महाभारत भी वह सिख गई। परंतु सोना से कोई नौकरी नहीं करवानी थी तो पिताजी ने पढ़ाई बंद करावी दी। सोना अब नौ वर्ष की

हो गई थी। सोना का सौंदर्य उम्र के साथ इतना बढ़ता गया की गाँव के लोग तिवारी जी को हमेशा कहते थे कि सोना के लिए रिश्ता शहर से ले आओ।

अपनी नंद नंद का शहरी अंदाज देखकर सोना की माँ नंदों ने निश्चय किया की सोना के लिए शहरी लड़का की खोजा जाए। परंतु सोना इन सब से बिल्कुल अलग थी। उसे देहाती जीवन बड़ा पसंद था, वह दिन-भर खेलती-खुदती रहती। सुंदर चीजें इकट्ठी करती। बिल्कुल स्वच्छंदप्रिय स्वभाव था उसका। यह बात नंदो को बिल्कुल न भाता। कहते-कहते सोना प्रौढ़ होती गई और उसका ब्याह तय होता गया। वर बाइस साल का था। पचहत्तर रूपए माहवार तनख्वाह पाते थे वो। विश्वमोहन ना नाम था उसका उनका जो बिहार से थे और प्रेस में काम करते थे। स्वभाव से कड़क विश्वमोहन, बड़ा-सा घर और घर के सारे खिड़की-दरवाजों पूरे पर्दे। पिता को रिश्ता बहुत पसंद आया और कहते-कहते ब्याह हो गया।

सोना ससुराल आयी तो और गाँव के खुले-खुले वातावरण से सीधा एक कठोरी में बंद हो गई। बाहर की साफ हवा दुर्लभ हो गई। चार-छः दिनों में ही वह मुरझा गई। एक बार पति बाहर जाने पर सोना खिड़की से बाहर देख रही थी। पड़ोसी ने सोना को देखकर साँस से चुगली की तो सोना को खूब डाँट पड़ी। इसी बीच सोना को लेने तिवारी जी आ गए। सोना मायके गई; परंतु विश्वमोहन थोड़े

ही दिन में उसे लेने आ गए। जब वे आए तो उन्होंने देखा की सोना झाड़ पर चढ़ी बैठी है। उन्हें यह बिल्कुल नहीं पसंद आया और सोना को तुरंत ही ससुराल वापस ले आए। ससुराल में वापस सोना चार दिवारों में बंद हो गई। अपना यह जीवन ~~अ~~ उसे कैदखाने जैसा लगने लगा। इसी बीच किसी काम से विश्वमोहन को बाहर गाँव जाना पड़ रहा था। वह स्टेशन पर पहुंचे तो उन्हें पता चला की ट्रेन लेट है तो उन्होंने सोचा कुछ देर बाद आता हूं। विश्वमोहन घर वापस लौटे तो उन्होंने देखा की पड़ोस का बच्चा फैजू सोना से बातें कर रहा था। विश्वमोहन को ये बिल्कुल नहीं पसंद आया। उन्होंने सोना को खूब सुनाया। ~~ये~~ पति जाने के बाद सोना को मायके की बहुत याद आई और वह बहुत उदास हो गई उस दिन। उसे लगने लगा की उसने बहुत बड़ा ~~अपह~~ अपराध किया।

पति जब तीन दिन ~~बा~~ बाद घर आए तो सोना से एक बात न करके सीधा माँ के पास गए और फिर कमरे में। सोना को ऐसा जीना मुश्किल हो रहा था और फिर उसने एक दिन उसने आँगन में के धतूरे के पेड़ के दो-तीन फल पीसकर पी डाले और उसकी मृत्यु हो गई। सोना के पिता आए थे और वो तो रो पड़े। अंतिम संस्कार ~~कर के~~ करके जब विश्वमोहन घर आए तो द्वार में सोना का उन्हें पत्र मिला। पत्र में सोना ने आत्महत्या का कारण लिखा था कि मैं एकदम से दूसरे वातावरण में घुल-मिल नहीं पायी और इसी कारण मैं अब और नहीं जीना चाहती। पत्र के नीचे लेखा था 'अभागिनी सोना' जो सोना का अंतिम

इस कहानी से कटु सत्य सामने आता है कि पति के ऐसे व्यवहार से सोना किस प्रकार विवश हो जाती है आत्महत्या करने को। कहानी में अनमेल विवाह की समस्या को उठाई गई है। कहानी का अंत त्रासद त्रासदी पूर्ण है। सोना के जीवन की दुःखद अंत हमें विचलित कर देता है।

भाषा- कहानी की भाषा सरल है। विदेशी शब्दों का प्रयोग हुआ है। ट्रेन और स्टेशन शब्द। यहाँ दो वातावरणों का चित्रण है जो कि शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन। लेखिका ने अत्यंत सटीकता से यह कटु बात पाठकों के सामने रखी है।

उद्देश्य- कहानी का उद्देश्य बड़ा सरल है कि सब एक जैसे नहीं होते। एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की इच्छाओं का आदर करना चाहिए क्योंकि हर व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है। एक दूसरे के इच्छाओं का आदर करना ही अच्छे दांपत्य जीवन का लक्षण है।

Sundaram®
FOR EDUCATIONAL USE

गौरी

प्रस्तावना- गौरी कहानी सुभद्रा कुमारी चौहान की सुप्रसिद्ध कहानी है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को अभिव्यक्त करने वाली एक भावनात्मक कहानी है जिसमें एक युवती के माध्यम से आदर्श भारतीय स्त्री के गौरवशाली विशेषताओं का उल्लेख किया गया है।

कथा-वस्तु- कहानी की मुख्य पात्र गौरी है जो आम लड़की होते हुए भी आम नहीं है। सत्याग्रह आंदोलन की लहर सारे देश-भर में बड़ी तीव्रता से फैल रही थी। देश में धारा १४४ लागू कर दी गई थी और जनता के सभी मौलिक अधिकारों का दमन किया जा रहा था। गाँधी जी के नेतृत्व में देश व्यापी आंदोलन तेजी से बढ़ रहा था जिसमें देशवासी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे थे। गौरी एक बहादुर स्त्री है जो अपने प्रेम और त्याग से भारतीय ~~मा~~ स्त्री के गौरव को चित्रित करती है।

बाबू राधाकृष्ण की बेटी गौरी जो उन्नीस वर्ष की सुंदर स्त्री थी। राधाकृष्ण और उनकी पत्नी कुंती को गौरी की शादी की चिंता हमेशा सताती रहती। अपनी इकलौती बेटी का विवाह योग्य घर में होना चाहिए ऐसे हमेशा उनको लगता। परंतु गौरी स्वभाव से दृढ़ निश्चयी और निर्भिक थी। वह चाहती थी कि अपने पिता से जाकर कह दे कि वह विवाह को अधिक महत्व नहीं देती है और पिता के लिए उसका विवाह इतना महत्वपूर्ण है तो किसी से भी करवा दे।

राधाकृष्ण गौरी के लिए सीताराम जी को देखने गए थे; किन्तु उन्हें निराशा हाथ लगी। निराशा क्योंकि सीताराम जी लड़का नहीं बल्कि ३५-३६ वर्ष का आदमी है जिसकी पत्नी का देहांत हो चुका था। साथ ही उनके दो बच्चें थे। परंतु पिता को सीताराम जी का ईमानदार स्वभाव बड़ा भा उठा। इसलिए उन्होंने सीताराम जी को घर बुला लिया। बुला तो लिया था; परंतु पिता गौरी के लिए नया वर जो २४-२५ वर्ष का हो उसकी तलाश में थे। कुंती और गौरी को सीताराम जी का स्वभाव अच्छा लगा था। गौरी सीताराम जी की देशभक्ति व सादगी के विषय में जानकर मन-ही-मन उन्हें अपना पति मान लेती है। सीताराम जी जब गौरी के घर आए थे तो उनके दो बच्चें गौरी के साथ इतना खुल-मिल गए मानो गौरी को अपनी माँ समझ बैठे। गौरी का देशभक्ति से प्रभावित होना उसके अन्तर्मन में छिपे देशभक्ति के भावों को उजागर करता है। सीताराम जी जाते समय गौरी और कुंती दोनों को बहुत बुरा लगा। सीताराम जी सीताराम जी को याद करते ही गौरा का माथा श्रद्धा और से झुक जाता है।

गौरी कर्तव्यनिष्ठ थी। अपना कर्तव्य निश्चित करने में उसे जरा भी समय नहीं लगता था। सीताराम जी जेल जाते ही गौरा का मन उदास हो बैठा। वह अपनी माँ से साहस करके आज्ञा लेते हुए बच्चों के पास चली गई। बच्चों को माँ की ममतादी

सीताराम जी के दो छोटे- छोटे प्यारे बच्चों ने गौरी के अंदर ममता का भाव जगा दिया। सीताराम जी के जेल जाने पर कौन उनके बच्चों का ध्यान रखेगा? यह चिंता इतनी बलवती थी कि उसने गौरी को अपना ~~कर्त्तव्य~~ कर्तव्य निश्चित करने का अपूर्व साहस दिया। इस तरह से वह जिद्द करके नौकर के साथ बच्चों की देखभाल करने कानपुर चली गई। हर महिने बच्चों की कुशलता का समाचार कारावास में पहुँच जाता है सीताराम जी के पास। सजा पूरी होने पर सीताराम जी जब घर पहुँचते है तो बच्चों को गौरी के साथ देखकर अचंभित हो जाते हैं। गौरी झुककर उनकी पग-धुलि अपने माथे से लगाकर उन्हें अपना पति स्वीकार करती है।

भाषा- कहानी की भाषा प्रभावपूर्ण है। पढ़ते वक्त पाठक को भावात्मक करने की क्षमता इस कहानी में है। ऐतिहासिक परिवेश का चित्रण इस कहानी में हुआ है। विदेशी शब्द जेल का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य - गौरी त्याग की मूर्त मूरत है मूर्ती है। अंत में यह हम कह सकते हैं कि गौरी एक कर्तव्यनिष्ठ, हठी, साहसी, त्यागी, दृढ़निश्चयी, विवेकी, एवं ममत्वपूर्ण नारी थी। वह अपने चारित्रिक गुणों से सभी को के मन को मोह लेती है, साथ ही पाठकों में देशप्रेम का भाव भी जगाती है। अपने से पहले देश को प्राधान्य देना यह मंत्र इस कहानी से प्रकट होता है।

किस्मत

प्रस्तावना- सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी किस्मत कहानी अत्यंत प्रसिद्ध कहानी है। कहानी छोटी है; परंतु मार्मिक है। यह कहानी तीन हिस्सों में बाँटी गई है। छोटी मुन्नी को 'किस्मत' शब्द का अर्थ मानो दुःख ही लगता है जब वो अपनी भौजी और पिता को देखती है। एक तरफ एक विधवा का दुःख और दूसरी तरफ एक ससुर के अपने बहु के प्रति लगाव को कलंक का रूप दिया गया, इसका चित्रण बखूबी इस कहानी में किया गया है।

कथा-वस्तु- कहानी का मुख्य पात्र किशोरी है जो कि पती के जाने के बाद अपने सास-ससुर के साथ रहती है। एक दिन किशोरी काम कर रही थी तो मुन्नी जो उसकी ननंद है जो उसे आकर पूँछती है कि भौजी, "किस्मत क्या है?"। किशोरी की आँखें डबडबाती है जब वह उत्तर देना का प्रयास करती है। मुन्नी ने यह भी प्रश्न किशोरी से पूछा कि तुम हमेशा सफेद धोती क्यों पहनती हैं? हो? यहाँ यह दिखाया गया है कि कैसे विधवा को रंगीन कपड़े तक पहनना मना है। भौजी बेचारी क्या उत्तर देती नन्हीं मुन्नी से।

इस बीच मुन्नी की माँ आ जाती है और बहु को गाली देकर खरी-खोटी सुनाती है। जब की बच्चों को स्कूल में जाने को और आधा 3 घंटा था तब भी सास ने उसे खूब सुनाया। यहाँ तक की उसे कुलच्छनी

कुलच्छनी भी बोला। यह सब सुनकर किशोरी की आँखों में तुरंत पानी आ जाता है। इतना ही नहीं सास ने घिसटे से किशोरी को मारा भी। एक साँस में मुन्नी की माँ इतनी बातें कह गई और पटा बिछाकर चौके में बैठ गई। यह सब होने के बाद बच्चे स्कूल चले गए। यह सब बातें हररोज अम्माँ के घर होती थी। किशोरी के लिए यह कोई नहीं नई बात नहीं थी।

इस बीच ससुर रामकिशोर घर आते है और घर में कोई आवाज नहीं आते अम्माँ को पूछते हैं कि बच्चे कहाँ गए क्योंकि उस दिन बच्चे जल्दी स्कूल गए थे। साँस रामकिशोर पर भी भड़क गई। रामकिशोर को भी पत्नी की आदत थी। ससुर को बहु दुलारी थी। ससुर की पहली पत्नी के बेटे की पत्नी थी किशोरी। उन्होंने दफ्तर जाते-जाते कहा भी बहु खाना खा लो। साँस को ये बात बिल्कुल नहीं अच्छी लगी। जान-बूझकर साँस का खाना हो जाने के बाद साँस ने बचा हुआ सभी खाना कहारिन को दे दिया। किशोरी जब खाना खाने गई तो सब बरतन खाली पड़े थे। बेचारी किशोरी पानी पिकर अपनी कोठरी में चली आई।

आज रामकिशोर कचहरी से जल्दी आए और पत्नी के न होने के कारण बहु से मिलने चले गए। किशोरी को फटी-धोती देखकर रामकिशोर को बहुत बुरा लगा। उन्होंने सोचा की यदि बेटा चंदन होता जीवित होता तो किशोरी का यह हाल न होता।

उन्हें बातों-बातों में यह भी पता चला कि बहु भूखी है। यह सब देखकर ससुर ने किशोरी को दस रूपए दे दिए। सास ने ये सब देखा तो रामकिशोर पर लांछन लगाए कि घर में अकेले थे तो बहु के पास चले गए। यह बात रामकिशोर को सहन न हुआ और वे रो पड़े। जब मुन्नी स्कूल से वापस आई तो पिता को रोते देख उसने पिता से पूछा कि क्यों रो रहे हो? पिता ने कहा की अपनी किस्मत पर बेटा। नहीं मुन्नी पूछती कि किस्मत कौन है, अम्मा कि रिश्तेदार? उस पर राम किशोर बोले, "हाँ, अम्मा की बहन"। इस पर मुन्नी ने विश्वास का भाव प्रकट करते हुए कहा, "तभी वह तुम्हें भी और भौजी को भी रुलाया करती है।"

भाषा- कहानी में भाषा शैली में संवादों का प्रयोग किया है। विदेशी शब्द स्कूल का प्रयोग हुआ है। कहानी में अपशब्द के भी प्रयोग हुए है। इसमें संवादात्मक शैली का बखूबी प्रयोग किया है।

उद्देश्य- अंत में यह कह सकते है किस्मत किशोरी और ससुर दोनों के लिए मानो बुरा शब्द ही बन गया। इसमें एक विधवा स्त्री का कटु सत्य भी चित्रित किया है। कैसे पति के जाने के बाद किशोरी का जीवन कठिन हो जाता है। विधवा स्त्री के दयनीय स्थिति पर भी कहानी में भाष्य हुआ है।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

दो सखियाँ

प्रस्तावना- यह कहानी सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई 'दोस्ती' पर आधारित है। इस कहानी में दो सखियों की गहरी दोस्ती दिखाई गई है। दो सखियाँ, एक अमीर, तो एक गरीब; परंतु एक के कारण दूसरी पढ़ी और फिर पढ़ लिख कर अमीर घर की बहु बनी। कहानी की भाषा अत्यंत सरल है।

कथा-वस्तु- इस कहानी में दो मुख्य पात्र है- मालकिन की बेटी मुन्नी और मालिन की बेटी रमिया। एक दिन मालिन पेड़ो पर पानी डाल रही थी तभी रामू, मालिन को बुलाने आया। बाई साहब ने बुलाया था मालिन को। मालिन डर गई, भला मुझे क्यों बुलाया। मालिन जब ऊपर गई तो रमिया भी माँ के साथ गई। बाई साहब ने मालिन को कहा की हमारी मुन्नी रोज-रोज स्कूल में जाकर थक जाती है, और रमिया बगीचे में पड़ी रखली रहती है, अब रमिया भी स्कूल जाएगी। मालिन ने डर कर कहा ~~भी मे~~ कि मेरी बेटी का जो निर्णय लेना है वह आप लिजिए। मुन्नी ने भी कहा यदि रमेया स्कूल जाएगी तो ही मैं भी स्कूल जाऊँगी। वरना मैं भी बगीचे में खेलूँगी। मालिन ने कहा की मुन्नी के पास पढ़ी और पुस्तक नहीं है जिस पर रमिया बोली कि चिंता मत करो, मैं मेरा दूँगी। मुन्नी का एक पुराना फ्रॉक पहनकर रमिया भी स्कूल जाने लगी और उनकी दोस्ती की शुरुआत हो गई।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

देखते- देखते लकड़ियाँ बड़ी हो गई, दोनों जिस दिन से साथ- साथ पढ़ने लगीं, उनमें सद्भावों के साथ-साथ गाढ़ी मैत्री भी हो गई। मुन्नी कभी नहीं जताती थी कि रमिया मालिन की बेटी है। दोनों हमेशा एक साथ ही होते। मुन्नी के पिता मुन्नी की शादी की तैयारी करने लगे। पर रमिया के माँ के ~~पास~~ सामने एक ~~समस्या~~ समस्या आ पड़ी कि इतनी पढ़ी-लिखी बेटी से शादी कौन करेगा? फिर दूसरा विचार यह भी आता है कि मेरी बेटी पढ़- लिखकर मास्टर बनेगी और मुझे भी मालिन का काम छोड़ आराम करने कहेगी।

यहाँ रमिया को अब अम्मा के साथ बगीचे में काम करने में लज्जा आती थी। और दूसरी तरफ यह भी सहन नहीं होता था की माँ पूरे दिन अकेली ~~स~~ काम करे। उसने नौकरी करने का निश्चय किया। वहाँ मुन्नी को रमिया की ब्याह की चिंता थी। वह सोचती थी कि अगर हर काम हमने साथ में किया तो शादी ~~अ~~ अकेले क्यों? अब अपने पिता से रमिया की शादी की बात करने गई तो पिता ने उसे ~~शायद~~ शब्द दिया कि वे रमिया के लिए भी योग्य वर ढूंढेंगे।

दूसरी ओर मुन्नी का ~~ब~~ भाई पाँच वर्ष बाद विदेश से आ रहे ~~थे~~ थे। जगत सिंह नाम था उनका। दोनों मुन्नी और रमिया जगत सिंह का कमरा बनाने में जुड़ गई थी। कमरा सजाते समय मुन्नी ने रमिया की शादी की बात रमिया से छेड़ दी। रमिया कहती जा

रही थी कि मैं तो विवाह करूँगी ही नहीं। मुन्नी रमिया को बोली की तुम मुझसे ज्यादा सुंदर हो, मेरे पति के सामने न आना और दोनों चले गए। दोनों की बीच बहस सी हो गई की कौन ज्यादा सुंदर हैं क्योंकि मुन्नी को रमिया लगती और रमिया को मुन्नी। आखिर मुन्नी ने कहा की भैया को आने दो, वो ही बताएँगें कौन ज्यादा सुंदर है। भैया आए और थोड़ा आराम कर रहे थे तभी मुन्नी को रमिया के साथ अपनी भैया के पास लाई और भैया से पूछा कि ज्यादा सुंदर है कौन? भैया हस पड़ा और करवट बदलकर सो गया।

किसे पता था जगत सिंह को हमेशा से रमिया पसंद थी। आज उसे पाँच वर्ष के बाद देखकर वे उसे देखते ही रह गए। कुछ दिनों बाद रमिया को जगत सिंह ने रमिया को शादी के लिए पूछा और रमिया ने "हाँ" कर दिया। मुन्नी की माँ को पहले पसंद नहीं था, क्योंकि रमिया ठहरी मालिन की बेटी; परंतु घरवालों के सामने माँ की एक न चली और दोनों की शादी हो गई।

भाषा - कहानी अत्यंत सरल शब्दों में पिरोई गई है। कहानी बहुत सीधी-सरल भाषा में लिखी गई है। पाठक को तक बड़ी सहजता से संदेश पहुँचाया गया है। विदेशी शब्द फ्रॉक और स्कूल का प्रयोग हुआ है।

उद्देश्य - इस प्रकार से कहानी अत्यंत सरल है। अमीर और गरीबी की दोस्ती का प्रतीक है यह कहानी। सच्ची दोस्ती अमिरी और गरिबी में फर्क नहीं करती। इतना ही नहीं बाद में जाति को भूलकर गरिबे रमिया को अपनी घर की बहू बनाकर परिवार वालों ने बड़ा दिल दिखाया।

Sundaram®
FOR EDUCATIONAL USE

अनुरोध

प्रस्तावना- सुभद्रा कुमारी चौहान की 'बिखरे मोती' कहानी संग्रह में से यह कहानी है। यह कहानी नारी विमर्श केंद्रित है। यह कहानी दो भागों में बाँटी गई है।

कथा-वस्तु- इस कहानी के दो मुख्य पात्र है वीणा और निरंजन। अनुरोध यानी आग्रह करना। वीणा का अनुरोध अंत में किस प्रकार बदल जाता है इसका चित्रण किया गया है। निरंजन वीणा से कहने आया कि कल रात को मैं जा रहा हूँ। वीणा ने अनुरोध कि आप रुक जाएँ। निरंजन ने वीणा को पत्र दिया और कहा यदि ये पत्र पढ़ने के बाद भी तुम्हारा उत्तर वही रहा तो मैं रुक जाऊँगा। वीणा को लगा की पत्र लिखनेवाला उसका दुश्मन ही होगा तभी तो निरंजन को उससे दूर होने को कह रही है।

ना करते - करते वीणा ने पत्र पढ़ ही लिया। पत्र लिखा था निरंजन की पत्नी ने। पत्नी ने पत्र में निरंजन का इंतजार कर रही हूँ ऐसा संदेश था। अंत में पत्र में यह भी लिखा था की तुम वापस जल्दी आओ, तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ मैं, तुम्हारी। पत्र की शुरुआत भी 'मेरे प्राण' से हुआ था। पत्र पढ़कर वीणा के चेहरे का रंग बदल गया। कुछ देर बाद वीणा का पति कुंजबिहारी ऑफिस से लौटे। वीणा का मुख देखकर उन्होंने उसे कम काम करने का आदेश दिया जिसमें निरंजन ने हामी भरी। आज वीणा से अनुवाद का हो नहीं रहा था। निरंजन ने उसे कहा की आज आराम करो। कल से

काम करना। निरंजन ने उसके लिए ग्रामोफोन में गाना चलाया। वीणा बार-बार 'सजन तुम हे काहे को नेहा लगाए' गाना सुनती गई। कुछ देर बाद वह अपने कमरे में चली गई।

रात भर जागकर वीणा ने सारा अनुवाद का काम कर डाला। वह सोचने लगी कि क्या मेरी गलती हो रही है। वहाँ उसकी पत्नी उसका इंतजार कर रही है और मैं? वीणा अपने आप को बहुत हीन लगने लगी। निरंजन की पत्नी की नम्रता एवं उसके शील और विश्वास के सामने वीणा अपनी दृष्टि में स्वयं ही बहुत हीन जँचने लगी। निरंजन बहुत नम्र प्रकृति के पुरुष थे; और विशेष कर स्त्रियों के साथ वे और भी नम्रता से पेश आते। यही कारण था कि वे वीणा का आग्रह न टाल सके। कई बार जाने का निश्चय करके भी वे न जा सके; किंतु आज वीणा ने सोचा कि अब मैं उन्हें नहीं रोकूँगी, जाने ही दूँगी। वीणा जानती थी की निरंजन के जाने से वे बहुत टूट जाएगी पर उसे वह मान्य था।

दूसरे दिन जब निरंजन आए तो वीणा ने कहा कि अब आप जा सकते हैं। निरंजन ने पूछा था कि क्या आप मुझसे नाराज हो गई हो जिसपर हृदय पर पत्थर रखते हुई वीणा ने कहा कि क्या भला मैं आपसे नाराज हो सकती हूँ। वीणा ने इस बार अनुरोध किया की निरंजन अपनी पत्नी के पास चला जाए।

भाषा- कहानी को लेखिका ने बड़ी सहजता से लिखा है।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

जो पाठक जब पढ़ता है तो उसके मन में भी विविध भाव उड़ पड़ते है। भाषा बोलचाल हिंदी की है।

उद्देश्य- इस कहानी में एक स्त्री ने दूसरी स स्त्री के भावों को समझा। उसकी जगह पर अपने आप को देखा। अपनी गलती तक महसूस की और जब गलती सुधारने का मौका मिला तो गलती सुधार भी ली। जो स्त्री पहले रुकने को अनुरोध कर रही थी, वही आज जाने का अनुरोध कर रही है। कहानी काफी सरल शब्दों में लिखित हुई है। वीणा के मन में उठे अंतर्द्वंद को इस कहानी के माध्यम से सुभद्रा कुमारी चौहान ने बखूबी दर्शाया है।

FOR EDUCATIONAL USE

Sundaram®

नारी हृदय

प्रस्तावना- 'नारी हृदय' कहानी सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई कहानी है। कहानी अत्यंत सरल है; परंतु बहुत मार्मिक है। एक नारी की पीड़ा इसमें दर्शाया गई है। नारी चुप रह कर सब कुछ सहन कर लेती है और एक शब्द से भी किसी को ~~का~~ मन नहीं दुःखाती। इसका सटीकता से इसमें चित्रण किया गया है।

कथा-वस्तु- प्रस्तुत कहानी में प्रमिला, पति और सुशीला ऐसे तीन मुख्य पात्र है। कहानी की विशेषता यह है कि यह कहानी में तीन पत्र मौजूद है। यह पत्र प्रमिला नामक स्त्री से अपने पति को लिखे गए थे। कहानी की शुरुआत में पूरे शहर में प्लेग फैला हुआ था। पति को परेशानी है कि जाए तो जाए कहाँ? पति वकील होने के कारण छोटी जगह में रहना प्रतिष्ठा ~~न~~ के विरुद्ध था। सुशीला के बँगले में रहने को तैयार थी। सुशीला हमेशा डरती थी कि यदि उसे और उसके बेटे को कहीं प्लेग ना हो जाए।

पति काम के बहाने ऑफिस में गया था। ऑफिस की साफ-सफाई कर रहा था तभी उसे कुछ लिफाफे मिलें जिसमें कुछ पत्र थे। काम के बीच उन्हें पत्र पढ़ने की याद नहीं रही। घर लौटने के बाद उन्हें जब ~~अ~~ याद आया तो वे पत्र पढ़ने के लिए बैठ गए। लिफाफे में कुल तीन पत्र थे। ~~जिन~~ तीनों पत्र प्रमिला द्वारा अपने प्रेमी को लिखे हुये। पति एक-एक कर पत्र पढ़ते जा रहा था। पहला पत्र 01-09-1931 को

लिखा हुआ था। इस पत्र में प्रमिला को लगा उसका पति उससे नाराज है। पत्र में कुछ गुढ़ था जो किसी को पता न था। वह अपने प्रेमी ~~का~~ के पत्र का ही इंतजार कर रही थी। दूसरा पत्र ~~10~~ 10-09-1931 को भेजा था। जिसमें प्रमिला व्याकुल हो चुकी थी कि अब तक उसके पति का उत्तर ~~कैसा~~ कैसे नहीं आया। इस पत्र में ~~म~~ भी ~~प्र~~ प्रमिला अपने आप को अकृतज्ञ, मूर्ख मानती रही। वह खुद को अपराधी मानने लगी। पत्र में लिखा था कि जिसे आपको छूने तक का अधिकार नहीं, जो केवल आपकी कृपादृष्टि की भिखारिन है।

तीसरा पत्र 30-09-1931 को लिखा गया था जो अंतिम पत्र था। इस ~~+~~ पत्र में बात सामने आई कि दोनों की शादी नहीं हुई थी; परंतु प्रेमी ने उसे स्वीकारा था। पत्र में लिखा था, "समाज के सामने अग्नि की साक्षी देकर हम विवाह-सूत्र में अवश्य नहीं बँधे; किंतु शिवजी की मूर्ति के सामने भगवान को शंकर को साक्षी बनाकर क्या आपने मुझे नहीं अपनाया था? आखिर में पत्र के अंत में यह भी लिख डाला की अभी उत्तर मत दो क्योंकि शायद मैं उत्तर पढ़ने के लिए इस दुनिया में नहीं रहूँगी।

पत्र पढ़ते ही पति के आँखें नम हो गई थी और पीछे देखा तो सुशीला खड़ी थी। सुशीला को लगा की प्रमिला उसके पति की प्रेमिका थी और उसके पति ने उसे धोका दिया है। वह पति से रूठकर बोली,

"क्यों बेचारी को आँख दिखाई, जब तुम पूरी नहीं कर सकते"। इस पर पति ने उसे उसकी गलत-फैमी दूर की और उसे बताया कि यह पत्र उसे ऑफिस में मिले। सुशीला झट से बोल बैठी की सारे पुरुष कठोर हृदयी होते हैं।

भाषा- कहानी की भाषा बहुत स्वाभाविक है। पत्र शैली का प्रयोग इसमें हुआ है। कहानी इस प्रकार से लिखी गई है कि पाठकों को अंत तक पढ़ने के लिए मजबूर करती है।

उद्देश्य- परमात्मा ने स्त्री-जाति के हृदय में इतना विश्वास, इतनी कोमलता और इतना प्रेम शायद इसीलिए भर दिया है कि वह पग-पग पर ठुकराई जावे। जिस देवता के चरणों पर स्त्री अपना सर्वस्व चढ़ाकर, केवल उसकी कृपा-दृष्टि की भिखारिन बनती है, वह उसकी तरफ आँखें उठाकर देखने में अपना अपमान समझता है। तीनों पत्रों में जो वाक्य सबसे कठोर था वह, यह था, "समाज के सामने अग्नि की साक्षी देकर हम विवाह-सूत्र में अवश्य नहीं बँधे, किंतु शिवजी की मूर्ति मूर्ती के सामने भगवान् शंकर को साक्षी बनाकर क्या मुझे नहीं अपनाया था? एक ठुकराई गई प्रेमिका की हृदय की विकलता, उसका दर्द आदि को मार्मिकता से इस कहानी में दर्शाया गया है। प्रस्तुत कहानी में सुभद्रा कुमारी चौहान के पत्र द्वारा ऐसी नारी हृदय की झाँकी प्रस्तुत की है जो अपने प्राण न्यौछावर करने को तैयार है, अपने प्रेमी के लिए।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

होली

प्रस्तावना - 'होली' सुभद्रा कुमारी चौहान की हिंदी कहानी है। यह कहानी उनके 'बिखरे मोती' कहानी संग्रह में संकलित है। यह भले ही छोटी कहानी है; परंतु बहुत ही मार्मिक कहानी है। एक पत्नी की पीड़ा को सुभद्रा कुमारी चौहान जी ने बड़ी सटिकता से पेश किया है। कहानी तीन भागों में बाँट गई है।

कथा-वस्तु - कहानी में तीन मुख्य पात्र है करुणा, नरेश और ज्ञान प्रसाद। बाबू भगवती प्रसाद नामक व्यक्ति का एक गौण पात्र है। कहानी का आरंभ नरेश और करुणा के मध्य होली के बारे में हो रही बातचीत से होता है। नरेश करुणा से होली खेलने को कहते कहता है। करुणा के हिसाब से त्योहार सिर्फ सुखी लोग ही मनाते है। इसलिए उसने नरेश से कहा कि ये होली त्योहार उसके लिए नहीं है। गरिबी से परेशान थी करुणा। करुणा गरिबी में भी स्वाभिमान के साथ जीने वाली स्त्री थी

अगले दृश्य में जब करुणा घर आई तो उसे पता चला की पति दो दिन बाद आए थे। पति से शराब की बदबू आ रही थी और आँखें लाल हो गई थी। पति आते ही करुणा को पुकारने लगे। पति ज्ञानप्रसाद ने उसे कुछ रुपए दिए जो वह जुए में जीता था। पत्नी स्वाभिमानी थी; तो उसने पति से कहा कि तुम खुद ही रख लो। पति को करुणा का ऐसा व्यवहार एक आँख ना भाया। उसने करुणा को खूब खरी-खोटी सुनाई। यह तक भी कहा की मेरे दो दिन न रहने के

बावजूद म तुम्हारी अकल ठिकाने नहीं आई। ऐसा कहते-कहते जगतप्रसाद वापस घर से बाहर जाने लगता है। करुणा ने जगतप्रसाद के पैर पकड़े और उनसे विनती की कि वे ना जाए। करुणा इतनी विवश हो गई कि वह पैसे रखने को भी तैयार हो गई। गई; । परंतु जगतप्रसाद नहीं रोका और जाते-जाते करुणा को धक्के ~~से~~ मारते मारता हुआ गया। करुणा पत्थर पर जा गिरी और उसका सिर फूट गया। ~~सारी~~ सारा सिर खून से भरा हुआ था।

दूसरी ओर जगतप्रसाद वो पैसे लेकर घर से निकल गया था। जगत प्रसाद गानेवाली नर्तकी पर आसक्त होकर उसपर अपना सारा धन लुटा देता है। घर पर पत्नी पति द्वारा ठेले जाने पर लहूलुहान रोती रहती है।

~~क~~ दूसरे दिन जब नरेश आया करुणा के साथ होली खेलने को तो करुणा की अवस्था देखकर धक् सा रह गया। ~~जाता।~~ ~~है~~ उसने जब ~~ब~~ पूछा कि भाभी यह सब क्या है तो करुणा ने उस पर कहा कि यह मेरी होली है।

भाषा- कहानी की भाषा अत्यंत सरल है। ~~स~~ भाषा सरल है ~~ब~~ होने के बावजूद भी पाठकों के हृदय पर अपनी छाप छोड़ जाती है।

उद्देश्य - अंतः में यह कह सकते हैं कि इस कहानी में भारतीय स्त्री की पीड़ा को दर्शाया गया है। नारी को कितने दुख

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

सहन करने पड़ते है। यह वह स्वाभिमान से जीने का की कोशिश भी करती है तो उसकी पति द्वारा उसका उस पर अत्याचार होता है। मारपीट भी की जाती है। नारी पीड़ा सहन करती जाती और पुरुष पीड़ा देता जाता है। करुणा के लिए खून ही होली का रंग बन गया था।

Sundaram®

FOR EDUCATIONAL USE

हींगवाला

प्रस्तावना - यह कहानी सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी प्रसिद्ध कहानी है। कहानी अत्यंत मार्मिक है। इस कहानी द्वारा लेखिका ने हींग बेचने वाले खान के चरित्र का उदारता को दर्शाया है।

कथावस्तु - हिंदू हींगवाला उस साल का हमेशा आँगन में आकर हींग बेचता था। सावित्री ने एक दिन पहले ही हींग लिया था इसलिए उसे नहीं चाहिए था; परंतु हींगवाला विनती करता रहा कि मैं गाँव जा रहा हूँ; थोड़ा सा हींग ले लो। बच्चों ने हींगवाले से साथ कठोर व्यवहार किया और कहा कि हमें हींग नहीं चाहिए। हींगवाले ने फिर सावित्री को बुलाया और निवेदन किया कि हींग ले लो। सावित्री ने हींग ले लिया। बच्चों को बिल्कुल नहीं पसंद आया कि माँ ने फिर से हींग लिया। बच्चें भी उसे पैसे माँगने लगे। तीनों बच्चें मानो माँ से झगड़ने लगे कि हमें भी समान हिस्सों में पैसें दो। माँ ने बात टाल दी।

कई महीने बीत गए। सावित्री का सब हींग खत्म हो गया। वह सोचने लगी की अब तक हींगवाला क्यों नहीं आया। तभी शहर में होली के त्यौहार पर दंगल हो रही थी। सावित्री कभी-कभी सोचती हींगवाला कहीं मर तो नहीं गया दंगल में। तभी उसे पती पति का आवाज आता है हींगवाले से संवाद करते हुए। सावित्री ज्मदस से पूछ बैठी कि इतनी दिन कहाँ थे और फिर उसे

हैं हींग भी खरीद लिया। तभी सावित्री ने उससे पूछा कि तुम्हें हमारे घर आने में डर नहीं लगा जिस उसने उत्तर दिया की ऐसी बात मत करो अम्मा। बेटे को भी क्या मां से डर हुआ है, जो मुझे होता?

कुछ दिनों बाद दशहरा दूने उत्साह के साथ मनाने की तैयारी में थे। चार बजे शाम को मां काली का जुलूस निकलने वाला था। बच्चों ने जिद्द की कि उन्हें भी चार बजे शाम को मां काली का जुलूस दिखने को जाना है। नौकर रामू भी देखने को तैयार था। पिता शहर के बाहर काम से गए थे। मां को कमजोर इतना मुश्किल काम नहीं था। नौकर रामू बच्चों को लेकर चला गया जुलूस देखने को। बहुत समय बीत गया पर कोई नहीं आए। सावित्री डर गई। फिर उसे पता दंगा हो गया है, बहुत बड़ा दंगा। सावित्री के हाथ-पैर ठंडे पड़ गए। सावित्री आने-जाने लोगों से अपने बच्चों के बारे में पूछ रही थी।

रात बीत गई। सावित्री हताश हो बैठी। तभी उसे हींगवाले की आवाज आई। हींगवाला तीनों बच्चों को लेकर आया। खान ने सावित्री से कहा, "वक्त अच्छा नहीं है अम्मा। बच्चों को ऐसी भीड़-भाड़ में बाहर न भेजा करो"। बच्चे दौड़कर मां से लिपट गए।

भाषा- कहानी की भाषा कुछ अलग है। इस कहानी की विशेषता यह है कि इसमें दो भाषों का मिश्रण है। सरल समझने के कहानी सीधी है। भाषा के कारण पाठकों में पढ़ने की रुची बढ़ जाती है।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

उद्देश्य- इस प्रकार से खान के चरित्र की विश्वसनीयता, धार्मिक सद्भावना एवं आत्मीयता का वर्णन करते हुए यह प्रेरणा दी है कि धर्म तथा जाति के नाम पर भेदभाव या दंगे करना उचित नहीं है। आपसी सद्भाव से ही जीवन का सही अर्थ बया होता है। महात्मा गाँधी ने कहा है कि साहस और धैर्य ऐसे गुण हैं जिनकी कठिन परिस्थितियों में बड़ी आवश्यता होती है।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

शिवानी

"भारतीय हिंदी साहित्य के इतिहास का एक सुनहरा युग थीं मशहूर लेखिका शिवानी, इस आम भारतीय स्त्री की कलम से लिखी गई कहानी हर एक को अपनी सी लगती है"।

शिवानी सत्तर और अस्सी दशक की सशक्त महिला साहित्यकार थी, जो इस समाज में बहुत बड़ी बात है, तब हर क्षेत्र में केवल पुरुषों का ही राज चलता था। शिक्षा और लेखन में एक स्त्री का वर्चस्व और ऐसा मुकाम हासिल करना अपने आप में ही गौरव की बात है।

उन्होंने स्त्री के लगभग सभी पहलुओं का वर्णन अपनी कहानी में किया है। एक स्त्री के जीवन में कई क्षण आते हैं, जिसमें वह कई मनोभावों से होकर गुजरती है, शिवानी जी ने उनके अंतर्मन में उठती हर लहर को बहुत ही खूबसूरती से अपने पन्नों पर उकेरा है।

इनकी रचनाएँ और कहानियाँ हमारी धरोहर हैं, जिन्हें आज की नयी पीढ़ी अवश्य पढ़ना चाहेगी।

FOR EDUCATIONAL USE

लाटी

प्रस्तावना — हिंदी साहित्य की सुप्रसिद्ध महिला कथाकार शिवानी द्वारा रचित 'लाटी' कहानी मौलिक व संवेदनशील पृष्ठभूमि पर लिखी गई कहानी है, जिसने आधुनिक कथा-साहित्य को नवीन दिशा देने का कार्य किया है। यह एक घटना प्रधान कहानी है, जिसकी तात्विक समीक्षा इस प्रकार है।

कथा-वस्तु — 'लाटी' कहानी की कथावस्तु मध्यवर्गीय पहाड़ी परिवार से संबंधित है, जो विस्तृत न होकर संकुचित परिवेश में ही अपनी व्यापकता को गंभीर बनाने में सक्षम है। कहानी बानो (लाटी) पर केंद्रित है। बानो का विवाह कप्तान जोशी से हुआ। परिवार में बहुत सारे जन थे। शादी के तीन दिन बाद ही कप्तान को बानो को छोड़कर जाना पड़ा युद्ध के लिए। इस बीच बानो पर घर की इतनी जिम्मेदारीयाँ पड़ी कि वह बीमार पड़ती गई। ऊपर से उसे ऐसी खबरें मिलती की उसका पती वापस कभी नहीं आयेगा। यह सब सुन-सुनकर बानो जो इतनी सुंदर थी - पीली पड़ती गई। कप्तान के जाने के पश्चात उसे ससुराल वालों की कठोर व कटु प्रताड़नाएँ झेलनी पड़ती हैं, जिसके दुःख में घुलते-घुलते उसे क्षय रोग हो जाता है। दो वर्षों बाद कप्तान घर लौटता है, तो उसे पता चलता है कि घरवालों द्वारा बानो को टी-बी- सैनेटोरियम भेजा दिया गया है। कप्तान जोशी बानो को देखने के लिए गोठिया जाता है, वहाँ के एक प्राइवेट

वार्ड के बरामदे में लेटी बानो को देखकर उसका कलेजा मुँह को आ जाता है। इस रोग के कारण बानो सूखकर और भी बच्ची बन गई थी। कप्तान जोशी तीन नंबर के बंगले का दोगुना किराया देकर स्वयं अपनी रोगिणी पत्नी बानो के साथ रहता है। उन्होंने बानो की इतनी सेवा की की बानो भावुक हो जाती। डॉक्टर हमेशा कहते की थोड़ी दूरी बनाए रखें; परंतु कप्तान बानो को अपने से अलग न होने देते।

बानो का रोग इतना बढ़ता गया कि उसकी उसकी बचने की कोई उम्मीद न रही। बानो को अपने मृत्यु का निकट आने का आभास होने पर वह नदी में कूद जाती है। कप्तान को धक्का लगता है। बहुत दिनों के खोजने के बावजूद न मिलने पर कप्तान निराश हो जाते हैं। एक वर्ष बाद घरवालों के कहने पर कप्तान ने दूसरी शादी की। प्रभा नाम था उसका। प्रभा बड़े घर की बेटी थी और पढ़ी-लिखी थी तो वह घर में अपना वर्चस्व बनाए रखी थी। उनको तीन बच्चे भी हुए। प्रभा और कप्तान सोलह वर्षों बाद नैनीताल घूमने जाते हैं, तो एक चाय की दुकान पर अचानक बानो, लाटी के रूप में जीवित मिलती है, परंतु कप्तान द्वारा उसे पुनः अपनाने की असमर्थता लाटी की त्रासदी को कप्तान की त्रासदी में परिवर्तित कर देती है। बानो नदी में पड़ी मिलती है बैरागियों के गुरु को। उसकी जीभ कट गई थी। गुरु ने उपचार किया और वह ठीक हो गई और

उपनाम नाम लाटी रखा।

लाटी कहानी में पात्र व चरित्र-चित्रण कथावस्तु के विकास में सहायक हैं। कहानी के मुख्य पात्र कल्याण जोशी और बानो (लाटी) है तथा बानो के सास-ससुर, चचिया सास, भीन भतीजे, डॉक्टर, प्रभा, नेपाली शाभी, डेड वैष्णवी, गुरु महाराज आदि गौण पात्र है।

भाषा- लेखिका ने अपनी सरल व स्वाभाविक भाषा में पहाड़ी वातावरण के अनुकूल यहाँ पहाड़ी शब्दावली का प्रयोग यथास्थान किया है। वर्णात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। विदेशी शब्द जैसे सैनेटोरियम, आई गिव हर टू टु-थ्री डेज का प्रयोग किया है।

उद्देश्य- कहानी का उद्देश्य मध्यम वर्गीय समाज में पति के बिना अकेली रहने वाली पत्नी के जीवन की त्रासदी को दिखाना है। महिला ही महिला का शोषण करती है। उन्हें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना चाहिए तथा इसमें यह भी बताया गया है कि क्षय रोग असाध्य नहीं है। परिजनों के सहयोग और प्रेम से रोगी को बचाया जा सकता है।

Sundaram FOR EDUCATIONAL USE

कृष्णा सोबती

भारतीय साहित्य के परिदृश्य पर कृष्णा सोबती अपने संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए मशहूर है। कविता ~~के~~ में गद्य के क्षेत्र में पदार्पण करने वाली हिंदी की प्रख्यात कथाकार कृष्णा सोबती का लेखन आज भी काव्य की कोमलता एवं माधुर्य से ओतप्रोत है। हिंदी कथा साहित्य को नए रचनात्मक आयाम देती भाषा शैली उनके पास है। नारी के अंतर्मन को ~~पहचाने~~ पहचानने की कला में निपुण हैं। उनकी कहानियाँ कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से उनके रचनात्मक वैविध्य को रेखांकित करती हैं। आज के बदलते परिवेश में भी इनकी कहानियों की प्रासंगिकता बनी हुई है।

देश विभाजन से संबंधित कृष्णा सोबती की कहानियों में सबसे चर्चित एवं प्रसिद्ध कहानी है - "सिक्का बदल गया" है। इसका प्रकाशन 'प्रतीक' में 1948 में हुआ था। अज्ञेय जी इस पत्रिका के संपादक थे। इसमें विभाजन से ~~उत्प~~ उत्पन्न दारुण परिस्थितियों के मार्मिक चित्रण के साथ मानवीय संबंधों और मूल्यों में आए विघटन का भी काफी वर्णन हुआ है।

Sundaram®
FOR EDUCATIONAL USE

सिक्का बदल गया

प्रस्तावना- 'सिक्का बदल गया' कृष्णा सोबती की एक चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने शाहनी पर होने वाले अत्याचार पर प्रकाश डाला है। चाहकर भी शाहनी अपने घर से में न रह पायी। शाहनी की उम्र हो जाने पर उसे मारने की भी बात लोग सोचने लगते हैं ताकि उसकी सारी जमीन जायदाद हड़पी जा सके।

कथा-वस्तु- कहानी की मुख्य पात्र शाहनी है। कहानी एक विधवा स्त्री है जो पति के गुजरने के बाद अकेली रहती है। प्रस्तुत कहानी देश विभाजन की पृष्ठभूमि में लिखी गई कहानी है। शाहजी अर्थात् शाहनी के पति जिसका देहांत हो गया है। शाहनी रोज- सुबह- सुबह चनाब में नहाने जाया करती थी। एक दिन उसे लगा मानो उसे कोई देख रहा है। कुँआ, मीलों फैले हुए खेत सब पर उसकी दृष्टि पड़ती है। मन को शांत करने के लिए वह शेरा के पास जाती है जो शाहजी का सेवक हुआ करता था। शेरा की माँ के मृत्यु के बाद शाहनी ने उसे माँ की ममता दी। शेरा शाहनी की ऊँची हवेली की अँधेरी कोठरी में रखी सोने - चाँदी की चोरी करने का सोच रहा था। शाहनी को इस बात का पता न चले इसलिए वह शाहनी से प्यार से बात से बात कर रहा था। शाहनी उसके सम्मुख यह शंका रखती है कि पिछली रात कुल्लूवाल के लोग यहाँ क्यों आए थे और यह भी सोचती है कि यह यदि

शाहजी होते तो ऐसा न होता। तब शेरा के मन में यह विचार आता है कि आज शाहजी नहीं है अतः कोई कुछ नहीं कर ~~सर~~ सकता। पहले गाँव के पीड़ित असामियों से सूद वसूल करके शाहजी ने सोने की बोरियाँ भरी थी। आज वो लोग ही इनका बदला ले रहे है। शाहनी को छोड़ने के लिए शेरा उसके साथ गया।

बाहर पूरा गाँव खड़ा था शाहनी का घर ~~ला~~ लूटने के लिए। शाहनी सब कुछ जानती थी। उसने उनकी बातें सुनी थी। सब कुछ जानते हुए भी वह अंजान बन रही थी। रसूली के सूचित करने पर ट्रकें आ गई है और अब उसे उनकी योजनानुसार इस हवेली को छोड़कर चले जाना है। शाहनी ने किसी को बुरा-भला न बोला। किसी को ~~उसे~~ उसने दोष नहीं दिया अथवा हवेली चुप-चाप छोड़ दी। थानेदार दाऊद खां ने शाहनी से पूछा यदि तुम्हें घर से कुछ लेना है तो ले लो। शाहनी ने मना ~~कि~~ कर दिया। जो गाँव शाहनी के इशारे पर नाचता था आज उसी गाँव में शाहनी अकेली पड़ी गई। जब शेरा आता है ~~व~~ शाहनी को बुलाने तो शाहनी एकदम अपने विचारों से बाहर आ जाती है। जो शाहनी घर की मालकिन हुआ करती थी आज उसका यह हाल। आज उसे अपने ही घर में देर हो रही थी। शाहनी बिल्कुल अंदर से भीखर चुकी थी। फिर भी उसने ~~आप~~ अपने आप को सँभाला और चल पड़ी।

Sundaram®
FOR EDUCATIONAL USE

भीगी पलकों से भवन को विदा करते शाहनी ट्रक में बैठ जाती है। जाते समय उसने सभी लोगों को आशीर्वाद दिया और उनसे विदा लिया। ट्रक में बैठने पर शेरा ने शाहनी के पाँव छूते हुए कहा कि अब वह कुछ नहीं कर सकता है, क्योंकि राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है। रात को कैंप में पहुँचकर भी उसके मन में यह प्रश्न उठता रहा कि सिक्का क्या बदलेगा? वह खुद सब कुछ छोड़कर आयी है।

भाषा - कहानी की भाषा में थोड़ी कठिन है। परंतु कहानी एक दिशा में आगे बढ़ती गई है। शाहनी का चरित्र काफी अस सशक्त दिखाई गया है। शेरा के चरित्र के दो पहलू है :- 1) एक तरफ शाहनी को प्रेम करनेवाला तो दूसरी तरफ उसी के घर में चोरी करनेवाला।

उद्देश्य - इस कहानी का उद्देश्य यह है कि पीड़ित वर्ग के साथ साथ असहाय, बूढ़ी धनाढ्य नारी की दयनीय स्थिति का वर्णन करना है। प्रस्तुत कहानी में शोषक और शोषित वर्ग के बीच के संघर्ष का चित्रण किया है। शाहों के घर में नौकरी करनी वाली असामी आज शोषक वर्ग के विरुद्ध इकट्ठा हो गए हैं। इस प्रकार से कृष्णा सोबती जी ने विभाजन के कटु सत्य को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

दादी अम्मा।

प्रस्तावना - दादी अम्मा कृष्णा सोबती जी द्वारा लिखी कहानी है। कहानी की सबसे प्रमुख विशेषता यह है ~~कि~~ कि यह कहानी अत्यंत प्रासंगिक कहानी है। जो चित्र इस कहानी में उभारा गया है वह चित्र आज हमें ~~म~~ कई घरों में दिखाई देता है। "दादी अम्मा" कहानी वृद्ध अवस्था की उपेक्षित जीवन पर आधारित है। घर में बेटे-बहु, पोते-पोतियों से भरे परिवार के अंदर भी एक वृद्धा किस प्रकार से एक फालतू सामान के जैसे अकेली हो जाती है। उसके दर्द को बयां करने की कोशिश यह कहानी करती है।

कथा-वस्तु दादी अम्मा कहानी में दादी-अम्मा इस कहानी की मुख्य पात्र हैं। दादी अम्मा किसी समय पूरे घर की मालकिन हुआ करती थी। लेकिन आज वे केवल दादी-अम्मा बनकर रह गई है। कोई भी उनका सुध-बुध नहीं लेता। दादी की बहु मेहरां को छः साल तक कोई संतान न थी। छः साल बाद जब मेहरां को संतान सुख प्राप्त हुआ तो उसका घर बच्चों से भर गया। आज मेहरां घर की मालकिन बन गई और दादी अम्मा केवल दादी अम्मा बनकर रह गई। आज घर में तीन बेटे, उनकी बहुएँ, दो बेटियाँ है। पर दादी से बात करने के लिए कोई नहीं। आज इतने वर्षों बाद मेहरां अपनी सास की तरह पूरा घर संभालने लगी थी। दादी को कुछ पूछना, मशुरा करना, मानो बंद ही कर दिया था। कुछ वर्षों पूर्व पहले घर के पिछले वाले कमरे में दादी की विधवा ननंद रहती थी। फिर

जब मेहरुं पेट से थी तब तो दादी ने मेहरुं को अपना कमरा दिया और खुद अपने पति के साथ पिछे वाले कमरे में रहने को गई। जैसे-जैसे पोते पोतियाँ बड़े होते गए दादी का घर में योगदान कम होता गया। दादी को ध्यान मिले इसलिए कभी-कभी वह झगड़ा कर लेती अपनी बहु से। मेहरुं दादी को चुप कर देती और फिर मेहरुं अपने काम पर लग जाती और दादी निराश हो जाती। यहाँ तक की उनके पोते-पोतियाँ भी उनका मजाक उड़ाते। जब सबसे छोटे बेटे की शादी तय हुई तो सारे कैसरे, रीति-रसमें मेहरुं ने किया। दादी नाममात्र में मेहमान बन गई अपने ही घर में। जब छोटी पोते-बहु घर में आई तो मेहरुं ने बहु को अम्मा के आशीर्वाद लेने लाने के लिए भेजा फिर बहु को उसके कमरे में छोड़ने को गई तो दादी को अपना भूतकाल याद आया। फिर कुछ ही दिन बीत गए। दादी धीरे-धीरे बिमार पड़ती गई।

घर में किसी के पास दादी के लिए समय नहीं थी था। सब अपने-अपने कामों में व्यस्त रहते थे। कुछ दिन ऐसा चलता रहा। मेहरुं जब एक दिन दादी से मिलने तो दादी गद्दी पर बिल्कुल शांत रूप से पड़ी हुई थी। मेहरुं डर गई। उसने सभी घरवालों को बुलाया। अपने बहु के लिए दादी से आशीर्वाद माँगे। रात्रि पुरी बीती न थी कि दादी का देहांत हो गया। घर मानो अचानक से शांत हो गया। दादा और मेहरुं का पति दोनों दुःख में डूब गए थे। खाने-पीने की किसी की इच्छा न थी। मेहरुं दुःखी अवस्था

में सोचने लगी कि उन्होंने मुझे बेटी माना और मैं कुछ भी नहीं कर सकी। दादा आँगन में पीपल के पेड़ के पास खड़े थे। उन्होंने पीपल के पेड़ को हाथ लगाते हुए कहा कि आज ये पेड़ की जड़ कट गई। घर तब भरा-पूरा रहता है जब सब मिल-जुलकर रहते है, सम्मान देते है, एक दूसरे को मानते है, लेकिन जब पेड़ को जड़ से काट दो तब पेड़ ज्यादा वक्त तक खड़ा नहीं रह सकता। वह पेड़ कभी-न-कभी गिर ही जाएगा।

भाषा- कहानी की भाषा सरल, स्पष्ट और विषय-अनुरूप है। प्रभावी ढंग से कहानी लिखी गई है। इसमें भावों की अभिव्यक्ति उचित रूप से हुई है। इसमें तत्सम शब्द जैसे कृपा, प्रकट का प्रयोग किया है और साथ की तद्भव शब्द पूल, पतोहू का भी प्रयोग हुआ है।

उद्देश्य - इस प्रकार इस कहानी से हमें यह सिखने को मिलता है कि बड़ो की इज्जत करो, सम्मान दो। जब दादी को जरूरत थी तो पूछने वाला कोई नहीं था आखिरी क्षण में जब सब मिलने आए तो उसका कोई औचित्य नहीं था। घर के बड़े-बुजुर्ग घर के आधार स्तंभ होते है। जब वे जीवन भर हमारी सहायता करते है तो हमारा भी कर्तव्य होता है हम उनकी काठी बने। वृद्धा जीवन की त्रासदी को कृष्णा सोबती जी ने मार्मिक शब्दों में प्रकट किया है।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

निष्कर्ष

यह सुविदित है कि हिंदी में महिला-लेखन उत्तरोत्तर समृद्ध होता चला जा रहा है। कथा साहित्य नारी-लेखन का साहित्य रह गया, यहाँ आज लेखकों से अधिक लेखिकाओं का वर्चस्व बढ़कर है। अस्सी-उत्तर विशिष्ट उपन्यासों में अधिकांश लेखिकाओं द्वारा रचित हैं। इन्होंने नारी चेतना को नए मुकाम पर खड़ा कर दिया। नारी जागरण का नारी उद्बोधन का इन्होंने सार्थक प्रयत्न किया। कहानी के क्षेत्र में नारी-लेखन का यह वसंत-काल है। मात्र नारी जीवन पर केंद्रित नहीं, बल्कि नाना विषयों पर केंद्रित अनेक कहानियाँ महिलाओं द्वारा लिखी चली जा रही हैं। हिंदी महिला लेखन, अन्य भारतीय भाषाओं के लिए, आदर्श महिला लेखन है।

Sundaram
FOR EDUCATIONAL USE

THAKKAR & CO.

Tax Consultant

(Prop: Mr. Pradip Thakkar)

Mob. : 9322286262

Add : B/29/6,
Deonar Municipal Colony,
Near Sai baba Mandir,
Govandi, Mumbai-400043

Email Id : omsai1974@yahoo.com

Date: 01/04/2017

Ms. Sarita Anand Malveli
Add: Bldg no. 28/C Room no. 502,
Mahada colony,
Govandi Mumbai -400043

Dear,
Ms. Sarita Anand Malaveli

We are in receipt of your application for the post of Accountant. We are pleased to inform you that our organization has found you eligible for the profile described.

You are requested to report at our office address given above at 11:00 AM on 06-04-2017 as approval to your appointment.

For
Thakkar & Co.
Thakkar

(Mr. Pradip K. Thakkar)

Scanned with CamScanner

DHANRAJ OVERSEAS

311/312, Ganga Premises A, 3rd Floor Truck Terminal, Near RTO, Wadala.Mumbai-37, Tele: 24061700

To,

DT: 01.02.2020

Ms. Sayli Santosh Kerkar

SUB: OFFER LETTER

This is with reference to your subsequent interview conducted; Management is pleased to offer you to join us as a "Accounts - Assistant" W.E.F. 01.02.2020.Salary offered to you is monthly Rs.12,000/-.

Kindly return the duplicate copy of this letter, duly signed, as a token of acceptance of this offer.

Thanking you,

For

DHANRAJ OVERSEAS MUMBAI

Authorised Signatory

Scanned by TapScanner

MANGESH P.GAD

Advocate High Court

Office No.31, 3rd Floor, Islam Building, 46 Veer Nariman Road, Fort, Mumbai 400 001.
Mob: 9702355034 | Email: gadmangesh123@gmail.com

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

Date: 19th July 2021

This is to inform that Ms. Pooja Jaya Suvarna, D/o. Jaya A. Suvarna, residing at A9, Vaishnavi CHS, Balram Nagar, Kolshet Varcha Gav, Kolshet Thane 400607, is being working in our office as Admin Assistant since December 2020.

In light of the COVID-19 pandemic and to contain the spread of the coronavirus, the Central Government and State Governments in India had declared lockdowns and issued travel restrictions across the country, so we gave break for the month of April, May and June.

We hereby confirm that she has been resumed to work from 1st July 2021.

Your's Sincerely

Mangesh P.Gad
Advocate

CA. Mukesh Mehta
B. Com. F.C.A.
CA. Shantila Jain
B. Com. F.C.A.
CA. Prince Kothari
B. Com. F.C.A

N. G. JAIN &CO.

CHARTEREDACCOUNTANT

320, Hammersmith lnd Premises, Narayan Pathare Marg, Off. Sitladevi Temple Road, Mahim (West), Mumbai - 400 016. Office Phone: + 022 24339381 / + 919594226326 / 8928545006

29 JULY 2021

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify that **Ms.ROSHANI PREMLAL KANOJIA** is in employment with us from **01/05/2018 to till date.** She is working asan **ACCOUNT'S** such as **GST Department which** is based in mahim.

During her employment with us we have found her to be sincere and hardworking with high integrity. She is amiable in nature. We have no objection to allow her in any better position and have no liabilities in our company.

Her basic pay **is Rs.12,000/-pm only**.

Thanking you

N G JAIN AND CO.

PRINCE UTTAM KOTHARI
PARTNER

N. G. JAIN & CO. Chartered Accountants MUMBAI

E-mail : info@ngjain83.com

KE

KISHORE ENTERPRISES

PHARMA DISTRIBUTORS

Tel. : 24092376
24022552
24022532
24075793

Priyadarshani Co-op. Hsg. Society, 'C' Wing, CSN 181, 1st Floor, Mukund Nagar, Dharavi, Mumbai-400 017.

Ref. No. *Date :*

2nd April 2017

To,

Miss.ShwetaAvdesh Gupta
R/No.503, 5th Floor, B-Wing
Chitrakut CHS, 90 feet road,
Dharavi, Mumbai - 17

Dear Shweta Avdesh Gupta

We are pleased to inform you that you passed your interview and we are hereby offering you employment for the position of an Office Assistant in our Company. The terms and conditions of your employment are as follows:

1. Day of Commencement

You are expected to report to your duties as from 3rd April 2017 .

2. Reporting

You will report to your immediate supervisor on the said date. You are required to comply with the company's rules and regulations at all given times and should always act in a manner that protects the company's interest.

3. Allocated Place of Work

You will be based at the company's Head Office in Dharavi.

4. Roles and Responsibilities

Your roles and responsibilities are outlined in the job description

5. Monthly Salary

You are entitled to a monthly compensation amounting to Rs.12000 /- which will be subject to all statutory and company deductions with regards to the law.

6. Working Hours

Your working hours shall be from 10 a.m to 6 p.m (Monday-Saturday). However, you may also be required to avail yourself outside these stipulated hours if the need arises.

We congratulate on your appointment and assure you to get our full support for your professional growth and development

Sincerely

KISHOR ENTERPRISES

PARTNER

APPOINTMENT LETTER

DATE : 1st May, 2021

Miss Bhumika Jayantilal Chudasama
26,Lakda Wala Chawl,
Room no -02 Nariyal wadi,
RB Marg Mazgaon
Mumbai:- 400010

Subject :- Appointment letter for accountant post

Dear Bhumika Jayantilal Chudasama, Thank you for accepting and signing the job offer letter. I am pleased to inform you that your employment with Riddhi Gems Export LLP has been confirmed in the capacity of Accountant. As agreed, your starting date will be 03/05/2021 and your work timings from 10:00am, to 8:00pm, Monday to Saturday.

Your's Sincerely

Riddhi Gems Export LLP

NAME : PRACHI R GAIKWAD

ROLL NO : 5

TOPIC : REPORT ON COURSE

TYBAMM (ADVERTISING)

COURCES NAME :

ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA AND DIGITAL MARKETING COURSE

SOCIAL MEDIA MARKETING AGENCY: DIGITAL MARKETING + BUSINESS.

udemy

udemy

CERTIFICATE OF COMPLETION

ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA, & DIGITAL MARKETING COURSE 2021

Instructors Ing. Tomas Moravek | SEO, Facebook Ads & Facebook Marketing Expert, SEO, Facebook Ads & Digital Marketing Academy, Beck Robertson, Hazel Owens, Frantisek Stehlik, Thomas Talavera Karslake

Prachi Ravindra Gaikwad

Date Aug. 11, 2021
Length 91.5 total hours

This certificate above verifies that Prachi Ravindra Gaikwad successfully completed the course ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA, & DIGITAL MARKETING COURSE 2021 on 08/11/2021 as taught by Ing. Tomas Moravek | SEO, Facebook Ads & Facebook Marketing Expert, SEO, Facebook Ads & Digital Marketing Academy, Beck Robertson, Hazel Owens, Frantisek Stehlik, Thomas Talavera Karslake on Udemy. The certificate indicates the entire course was completed as validated by the student. The course duration represents the total video hours of the course at time of most recent completion.

udemy

udemy

CERTIFICATE OF COMPLETION

Social Media Marketing Agency : Digital Marketing + Business

Instructors Pouya Eti • Digital Marketing Expert

Prachi Ravindra Gaikwad

Date Aug. 11, 2021
Length 52 total hours

This certificate above verifies that Prachi Ravindra Gaikwad successfully completed the course Social Media Marketing Agency : Digital Marketing + Business on 08/11/2021 as taught by Pouya Eti • Digital Marketing Expert on Udemy. The certificate indicates the entire course was completed as validated by the student. The course duration represents the total video hours of the course at time of most recent completion.

Certificate Recipient:

PG

Prachi Ravindra Gaikwad

LOG SHEET / ATTENDANCE SHEET

Name of the student:- PRACHI R GAIKWAD

Name of the Organization:- UDEMY

Name of the center:- MATUNGA

Name of the college supervisor:- Mrs. SHAGUFTA MEMON

Month:- June 9 to Aug 11

Part Time / Full time:- Part Time

Week And Dates	No. of Hrs completed	Work Done	Remarks	Centre Supervisor's Sign	College Supervisors Sign
June 9th to July 12th	91 hrs	Attended	Completed		
June 15thto August 11th	52hrs	Attended	Completed		
Total	143hrs				

Smt. M.M.P Shah Women's College of Arts & Commerce

Smt. K.G Shah Department of Mass Media

FEEDBACK FORM FROM WORK PLACE

- Name -
- If assigned any task, does students complete it on time –
- Remark about the student's work at the workplace?
- Remark about the communication skills of the student at the workplace?
- Suggestions for the student from the Organization?
- Signature -

PARTICIPATION

Certificate

OF INTERNSHIP

THIS IS TO CERTIFY THAT

Prajakta Harkulkar

FROM PUNE WAS ASSOCIATED
WITH AASHMAN FOUNDATION IN THE CAPACITY OF AN INTERN
FROM AUGUST 2021 TO NOVEMBER 2021 WITH OUR
SOCIAL MEDIA MARKETING GROUP.

HE/SHE HAS COMPLETED HIS/HER INTERNSHIP
WITH A ONE STAR PERFORMANCE

NOVEMBER 21

aashman FOUNDATION

Munishpundir

FOUNDER / DIRECTOR

LOG SHEET / ATTENDANCE SHEET

Name of the student:-Mrunali Prakash More.

Name of the Organization:- Udemy

Name of the center:- intershala.com

Name of the college supervisor:-
Mrs. Shagufta Memon

Month:- 10June 2021 to 10th August 2021

Part Time / Full time:- Part Time.

Week And Dates	No. of Hrs completed	Work Done	Remarks	Centre Supervisor's Sign	College Supervisors Sign
20th August 2020 to 20th September in 2020	84 hrs	Digital Marketing & Graphic design	Good		
21th September 2020 to 20th October 2020	84 hrs	Digital Marketing & Graphic design	Good		
Total	168 hrs				

Josline D'souza
Near Shivaji Maidan 7, Sathe Chawl,
Kajupada Pipe line, Kurla West,
Sakinaka. Mumbai - 400072

Re: Internship offer

Dear Josline,

On behalf of Ziqitza Healthcare Ltd (ZHL), I am pleased to extend this offer of internship to you, which is being provided as an opportunity to learn the functioning of Marketing at ZHL. Please find below details of your position:

Position title:	Intern
Effective Start Date:	19th April, 2021
Period of internship:	2 months
Working Hours:	As applicable at your place of posting.
& Holidays:	As an intern you will not be eligible for any paid leave.
Stipend:	Fixed amount of Rs. 5000/- p.m.
Function:	Marketing Department
Location:	Mumbai HO
Reporting to:	Priyanka Bose
Responsibilities:	As determined by your Reporting Manager

While your internship is expected to end on 19th June, 2021 the same can be terminated by either you or the Company, at any time, with or without cause and with or without notice.

During your internship, you may have access to confidential business and people related information belonging to the Company. By accepting this offer of internship, you acknowledge that you will keep all this information strictly confidential and refrain from using it for your own purposes or from disclosing it to anyone outside the Company. In addition, upon conclusion of your internship, you will immediately return to the Company all of its property, equipment and documents, including electronically stored information.

Please indicate your acceptance of the internship by signing this letter and returning it to the HR Representative in your location.

Best Wishes

Ziqitza Healthcare Ltd.
Authorised Signatory

I accept the above internship offer described in this letter.

(Signature) Date

This file is digitally signed using DEMO Version of SENSYS DSIGN.

DIGITALOFTY

201 & 203, Mudra Building, Chandavarkar Road
Borivali West, Mumbai - 400068.
Contact: +91 771 0835 771
Email: info@digitalofty.com

Date: 2nd August 2021

To whomsoever it may concern

Miss. Utkarsha Panchal was working with us as a **"SEO Intern"** from **20th May 2021** till **20th July 2021**. I am fully satisfied with the work she has done.

Utkarsha Panchal is highly motivated. Her prime qualities, which assure success in any field of choice are determination, loyalty and discipline. She is a valued team worker as observed during her job period.

I am fully satisfied with the work she has put into it. I admire her enthusiasm and involvement in the work and wish her all the best.

With that said, **Digitalofty** claims no responsibility for any misrepresentation, falsification, omission, or error that was made outside of our knowledge. By signing and dating this letter, **Digitalofty** is providing adequate evidence that the professional experience claimed by Miss. Utkarsha Panchal is factual.

Sincerely,
For Digitalofty Services LLP

For Digitalofty Services LLP

Designated Partners/ Authorised Signatory

Managing Partner

SEO Manager

INTERNSHALA TRAININGS

Certificate of Training

Chaitali Nimbalkar

has successfully completed a eight weeks online training on **Digital Marketing**. The training consisted of Building Web Presence, Search Engine Optimisation, Digital Advertising with Google Ads, Google Ads Search Certification, Social Media Marketing, Email Marketing, Inbound Marketing, Revisiting Google Analytics, Newer Trends in Digital Marketing and The Final Project modules.

In the final assessment, Chaitali scored 33% marks.

We wish Chaitali all the best for the future endeavours.

Sarvesh Agarwal

FOUNDER & CEO, INTERNSHALA

Date of certification: 2021-07-24 Certificate no. : B798A884-2A1B-C6B8-C386-43B18C6EC063

For certificate authentication, please visit https://trainings.internshala.com/verify_certificate

BELLAVISTA
arte de la cerámica

3rd July 2021

TO WHOM IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss **Akshata Lokam** student of bachelor of mass media (Advertising) SNDT University has successfully completed Internship in the field of **Graphic Design** from **1st April, 2021** to **1st July, 2021**.

During the period of Internship, she demonstrated good design skills with a Self-motivation to learn new skills. She was able to complete all the work given to her on time and fulfill all the expectation of the firm.

We wish her every success in her life and career.

BELLEVISTA.

BELLAVISTA MUMBAI

3/7/21

(Authorized signature)

BELLAVISTA
F-215, PARMAR CHSL;
PARANJPE B SCHEME,
ROAD NO. 2, VILE PARLE (EAST),
MUMBAI - 400 057.

Scanned By Scanner Go

बृहन्मुंबई महानगरपालिका

सार्वजनिक आरोग्य खाते, जी/उत्तर विभाग

क्र.स.आ.जी/उत्तर/७९/वै.आ.अ.एस.आर/दि.२२.०४.२०२१

कार्यालयीन आदेश :

सार्वजनिक आरोग्य खात्याअंतर्गत मा. महानगरपालिका आयुक्त यांच्या मंजूरी क्र. MGC/A/2982/Dt. 12.04.2020 नुसार श्री/ श्रीमती रोहनाज इराणी यांची दि.२२.०४.२०२१ पासून कंत्राटी केंद्र संघटक या पदावर वैद्यकीय आरोग्य अधिकारी, जी/उत्तर विभाग यांच्या आस्थापनेवर दि. २२.०४.२०२१ ते दि. ०५.०६.२०२१ पर्यंत ४५ दिवसांच्या कलावधीसाठी अथवा Covid-१९ या आजारचा प्रादुर्भाव कमी होई पर्यन्त दरमहा निश्चित रु. २००००/- च्या वेतनावर खालील अटी व शर्तींवर नियुक्ती करण्यात येत आहे.

अटी व शर्ती :

१.उपरोक्त कालावधी नमूद केल्यानुसार कंत्राटी केंद्र संघटक पदाची सेवा पूर्व सूचना न देता संपुष्टात येईल.

२.त्यांना दरमहा एकूण रु.२००००/-(रुपये) एवढे वेतन निश्चित केलेले आहे.अन्य कोणताही भत्ता दिला जाणार नाही.

३.त्यांचा कर्तव्य कालावधी एकूण ८ तास असेल तसे त्यांना तिनही पाळ्यापैकी एका पाळीमध्ये कामकाज करावे लागेल.

४.त्यांची नेमणूक कंत्राटी तत्वावर निव्वळ तात्पुरत्या स्वरुपात असून दि.०५.०६.२०२१ पर्यंतच राहील.

५.कंत्राटी कलावधीत त्यांचे काम समाधानकारक न आढळल्यास त्यांना पूर्व सूचना न देता त्यांची सेवा समाप्त केली जाईल.

६.त्यांची नेमणूक करार पद्धतीची असल्याने त्यांना कोणत्याही न्यायालयात जाता येणार नाही.

सहाय्यक आयुक्त,जी/उत्तर विभाग

क्र.स.आ.जी/उत्तर/७९/वै.आ.अ.एस.आर/दि.२२.०४.२०२१

प्रत रवाना :

१.वैद्यकीय आरोग्य अधिकारी, जी/उत्तर विभाग,

२.प्रशासकीय अधिकारी, जी/उत्तर विभाग

३. श्री/श्रीमती रोहनाज इराणी
यांच्या महितीकरिता व पुढील कार्यवाहिकरिता.

सहाय्यक आयुक्त,जी/उत्तर विभाग

LOG SHEET / ATTENDANCE SHEET

Name of the student:- Shehnaz Irani

Name of the Organization:- Mumbai Mahanagar Palika Dadar G-North.

Name of the center:- Social welfare matunga western railway colony baal-mandir 400019

Name of the college supervisor:- Shagufta Menon

Month:- 22/04/2021 To 05/06/2021

Part Time / Full time:- Part time.

Week And Dates	No. of Hrs completed	Work Done	Remarks	Centre Supervisor's Sign	College Supervisors Sign
22-30April	24	Co-ordinator	Good	A. Khan	
01-31May	84	Co-ordinator	Good	A. Khan	
01-05June	16	Co-ordinator	Good	A. Khan.	

SMT.M.M.P SHAH WOMEN'S COLLEGE OF ARTS AND COMMERCE

S.M.T K.G SHAH DEPARTMENT OF MASS MEDIA

FEEDBACK FORM FROM WORK PLACE

- **NAME:** Shehnaz Irani

- **If assigned any task, does students complete it on time-** Yes

- **Remark about the student's work at the work place?**
  Hard working and passionate about the work

- **Remark about the communication skills of the student at the work place?**
  Polite with benificiaries and other staff

- **Suggestions for the student from the organization?**
  Should not panic at situations

Signature: A. Khan (AMO at SWC Matunga)

Contact number: 9373525244

REPORT

ON

INTERNSHIP

SMT.M.M.P SHAH WOMENS COLLEGE OF ARTS & COMMERCE
SMT.LG.SHAH DEPARTMENT OF MASS MEDIA

NAME – KOMAL GUPTA
ROLL NO - 06
TOPIC - REPORT ON INTERNSHIP
CLASS - TYBAMM ADVERTISING

INTERNSHIP

Working as a assistant creative head

ABOUT THE FIRM

Arvind Babbal is the director and producer of Maha Kumbh: Ek Rahasaya, Ek Kahani for life OK. He has directed television series like Saraswatichandra (TV series), Shobha Somnath Ki, Mera Naam Karegi Roshan, Kesar, Aati Rahengi Baharein, Yahaaan Main Ghar Ghar Kheli, Mitwa Phool Kamal Ke, Jiya Jale, Durgeshnandini, Awaz – Dil Se Dil Tak, Chhoti Maa ... Ek Anokha Bandhan , yeshu & kyun rishton mein katti batti arvind babal Productions Pvt. Ltd. Has produced Maha Kumbh: Ek Rahasaya, Ek Kahani for Television channel Life OK.

DESIGNATION

Assistant Creative Head

EXPERIENCE

My anerience of working as an intern with Arvind babal production house was good.

It helped me to boost my confidence, my communication skills while interacting with the Actors, Directors,Sp’s,Ep”s.. it also helped me to develop my personality it made me more familiar to the industry and how it works.

I also learnt working in the best possible manner.

ARVIND BABBAL PRODUCTIONS PVT. LTD.

DATE: 17-07-2021

To,
The Vice-chancellor,
MMP Shah College

This is to certify that Ms. Komal Rajesh Gupta has interned as Associate Creative on television serial 'Yeshu' produced by Arvind Babbal Productions Pvt. Ltd. from 1st June 2021 to 10th July 2021.

With best wishes.

For ARVIND BABBAL PRODUCTIONS PVT LTD

DIRECTOR

ARVIND BABBAL PRODUCTIONS PVT. LTD. MUMBAI 400 063.

Komal Vinod Irawati
2D/005 Building No. 02/D,
MIG Society (88TS) CTS No. 184,
Laxminagar,
Ghatkopar East, Pantnagar,
Mumbai – 400075

Re: Internship offer

Dear Komal,

On behalf of Ziqitza Healthcare Ltd (ZHL), I am pleased to extend this offer of internship to you, which is being provided as an opportunity to learn the functioning of Human Resources at ZHL. Please find below details of your position:

Position title:	Intern
Effective Start Date:	8th June, 2021
Period of internship:	1 month
Working Hours:	As applicable at your place of posting.
& Holidays:	As an intern you will not be eligible for any paid leave.
Stipend:	Fixed amount of Rs. 5000/- p.m.
Function:	Human Resources
Location:	Mumbai HO
Reporting to:	Donald Daniel
Responsibilities:	As determined by your Reporting Manager

While your internship is expected to end on 07th July, 2021 the same can be terminated by either you or the Company, at any time, with or without cause and with or without notice.

During your internship, you may have access to confidential business and people related information belonging to the Company. By accepting this offer of internship, you acknowledge that you will keep all this information strictly confidential and refrain from using it for your own purposes or from disclosing it to anyone outside the Company. In addition, upon conclusion of your internship, you will immediately return to the Company all of its property, equipment and documents, including electronically stored information.

Please indicate your acceptance of the internship by signing this letter and returning it to the HR Representative in your location.

Best Wishes

Ziqitza Healthcare Ltd.
Authorised Signatory

This file is digitally signed using DEMO Version of SENSYS DSIGN.

I accept the above internship offer described in this letter.

(Signature) Date

This file is digitally signed using DEMO Version of SENSYS DSIGN.

Doshi Nursing Home, Ghatkopar (E)

Contact :- 8898953475 / 8898953580
www.3ddimensions.co.in

1.6.2021

Dear Sayali Darekar,

3D Dimensions Academy welcome you for the course of Graphic Designing with effect from June 1,2021 and we sincerely hope that you excel in all the design softwares mentioned in our Graphic Design's curriculum. We look forward to best results from you and execution of skill set you acquire from our institute.

to sheewaneeahluwalia

Lucy Abraham Murari
Roll no 19
TYBAMM (advertising)

Digital Marketing course by Ankur
06 hours 12 minutes

Month / Year
08 / 2021

Student signature:
Lucy Abraham Murari

Adrian Medeiros Dantas
CEO / Director - Cursa

This certificate proves that the student has attended the following courses in the Cursa application, which is available in the Google application store (Google Play), proving the authenticity of the respective viewing time of video lessons that are made available by third parties through the

Screenshot_...143348.jpg

lucy.docx

INTERNSHALA TRAININGS

Certificate of Training

Aarti Agawane

from SMT.M.M.P.SHAH WOMAN'S COLLEGE OF ARTS & COMMERCE, has successfully completed a six weeks online training on **Video Editing**. The training consisted of Essentials of Video Shooting and Editing, Understanding Premiere Pro & Start Editing, Adding Transitions & Titles, Editing Visuals, Audio Editing, Green Screen Editing & Exporting and Final Project - Edit a movie trailer modules.

In the final assessment, Aarti scored 62% marks.

We wish Aarti all the best for the future endeavours.

Sarvesh Agarwal

FOUNDER & CEO, INTERNSHALA

Date of certification: 2021-08-30 Certificate no. : CD0B7A27-8B59-1DB6-005F-67D67DEEE6B3

For certificate authentication, please visit https://trainings.internshala.com/verify_certificate

BUBBLE CO.

LETTER OF APPOINTMENT

June 08, 2021

Employee Code – 3012

Ms. Jenifer Antony Padyachi

Chawl no. F-18 , Room no 2, Ground floor, New Mhada Chawl, Transit Camp, New 90 feet truck terminal road Kokari Agar, Sion koliwada Mumbai 400037.

With reference to your application and the subsequent interview you had with us, we are pleased to appoint you in **BUBBLE CO.** as **Social Media marketing Intern and content writer** on the following terms and conditions:

TERMS AND CONDITIONS OF APPOINTMENT:

l . Your appointment is effective from 02-June-2021 the day you have reported for duty.

2. Your Monthly salary will be Rs.3000/- (Three Thousand Only)

3. You shall be entitled to leave in accordance with the Company's leave policy for its employees, as in effect from time to time.

4. Your salary will be reviewed in each financial year. Increases following a review are not automatic but are dependent on your performance as well as performance of the Company and prevailing market conditions.

5. Base Salary and all other forms of compensation or benefits paid to you hereunder shall be subject to all applicable taxes and the Company may withhold from any amount payable under this agreement such taxes as shall be required to be withheld to any applicable law or regulation.

6. You shall be on probation period for three months. Your services will be confirmed on completion of three months, which will be subject to your performance evaluation during your probation period. The probation period may be extended if your services are not found satisfactory. You shall be eligible for Leave benefits only after a written confirmation of your services from us.

7. During the probation period, you may be terminated on either side by giving 15 days.' notice or salary in lieu of notice, in writing. After confirmation, it can be terminated by either side by giving one month written notice or salary in lieu of notice except dismissal, discharge or termination for Cause when you will not be entitled to any such notice or salary thereof ("Cause" for the purpose of this clause shall mean an act of dishonesty or misconduct or theft or misappropriation or commission of act or acts amount to fraud against the Company or failure to perform

duties or wilful nonconductive or gross negligence in performance of duty or habitual absenteeism or chronic alcoholism or any other form of addiction which prevents performance of duties, or conviction of a felony or any crime involving fraud or breach of representation or warranty, or breach of material obligations, which is not cured within 30 days following receipt of notice from the Company).

8. You shall in the discharge of your functions observe and comply with all the resolutions, regulations and/or directions as may from time to time be made or given to you.

9. You will observe and follow all statutory laws, notifications, rules and regulations that are applicable to the functions assigned to you. You will keep yourself well informed in these matters.

10. Your appointment and continuation in employment in the organization will be further subject to your remaining medical fit. The Management will have the right to get you examined or re-examined by any Registered Medical Practitioner/Surgeon/Physician whose decision shall be final and binding on you. However, it will be at the discretion of the Management to waive off this clause as per exigencies and requirements of the Company.

I l . You will be the whole time employee of the Company and will not engage yourself in any work similar in nature to that of the Company and/or in which you may for the time being be engaged by the Company and/or engage yourself anywhere in any work, profession or employment in any capacity either honorary or otherwise.

12. You agree that during the term of your employment with the Company, you shall not render commercial or professional services of whatever nature to any person or Company, whether word not for pecuniary gain, without the prior written consent of the Company,

and that you will not directly in any manner whatsoever engage in any business that is competitive in any manner with the business of the Company.

13. You shall abide by the rules, regulation, instructions, personnel policies and the policies of the Company and any change thereof, which may be adopted by the Company from time to time and the same shall be deemed to form part of this appointment.

14. You hereby agree that you shall not knowingly participate in any activity that constitutes an actual conflict of interest with your employment with the Company.

15. You will not utilize, disclose or divulge to any person or persons any confidential information pertaining to the Company (Confidential information for the purpose of this clause means, Information regarding the following policy, strategy, management, methods and operating techniques, procedures and methods, research information, sales , advertising and marketing methods, development and service methods, the business techniques, information regarding customers/clients and products, information regarding employees and personnel, training techniques, manuals and procedures, finances, investor details and other proprietary information on compliance and procedures, finances, investor details and other proprietary information of the Company and /or the investors and information that the employee has a reasonable basis to believe was accepted by the Company and for Affiliates form any third party under obligations of confidentiality)

16. The aforesaid restrictions shall continue to apply after the termination of your appointment with the Company without limits in point of time.

17. Your services will be liable to be transferred from one place to any/or from one Department to another and [or from one establishment to another establishment of this organization in India either existing or to be set up in future purely at the discretion of the management on account of exigencies of work on the same terms and conditions and without any additional benefits.

18. You will be required to travel to other stations or deputed for any period of time to any other associate Company.

19. It should be clearly understood that your assignment or work can be changes or altered whenever necessary at the discretion of the management to suit any new development or requirements of the Company on the same terms and conditions, without any additional

20. You will communicate to us your mailing address for correspondence and any change therein in writing. Any Communication sent to you at the address last communicated to us shall be deemed to be duly served on you.

21. Your appointment will be subject to your submission of certified true copies of certificate in support of your (a) Date of Birth (b) Academic Qualifications (c) Past Service Certificate and Salary details etc. as well as passport size photographs, at the time of your joining or earlier.

22. The appointment is made on the basis of the information and details given by you in Application for Employment. If at any time, any information or detail given by you is found incorrect or false, your services will be liable for termination without any notice, salary in lieu in notice or compensation.

23. Your service would come to an end automatically on attaining the age of 58 years by way of retirement.

24. All information, documents, records, data, apparatus, equipment's and physical property, whether-or not pertaining to Confidential Information, which are furnished to you by the Company or are produced by you in connection with employment shall be and remain the sole property of the Company. You shall return to the Company all such materials and property, including any material or medium from which any Confidential Information may be ascertained or derived, as and when requested by the Company. In any event, you will return all such material and property immediately upon the termination of your employments for any reason. You shall not retain any such material or property or any copies, compilations or analyses thereof after such termination.

25. You will further agree that you will not at time after the termination of your services with the Company represent yourself as being in any way connected with or interested in the activities or the Company or its associate Company's.

Yours truly,

Pratiksha Joshi

President - Human Resources

Acceptance Acknowledgement

I have read and understood the terms and conditions governing my series employment with the Company and the same are acceptable to me in totality.

Date: June 08, 2021

Place: Mumbai

NAME : NISHITA JAIN
ROLL NO : 12
TOPIC : REPORT ON COURSE
TYBAMM (ADVERTISING)
COURSES NAME :
ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA AND DIGITAL MARKETING COURSE
SOCIAL MEDIA MARKETING AGENCY: DIGITAL MARKETING + BUSINESS.

Certificate of Completion

This is to certify that **Nishita Jain** successfully completed 93 total hours of **ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA, & DIGITAL MARKETING COURSE 2021** online course on July 2, 2021

Ing. Tomas Moravek | SEO, Facebook Ads & Facebook Marketing Expert

Ing. Tomas Moravek | SEO, Facebook Ads & Facebook Marketing Expert, Instructor

SEO, Facebook Ads & Digital Marketing Academy, Instructor

Beck Robertson, Instructor

Hazel Owens, Instructor

&

Udemy

#BeAble

udemy

Certificate no: UC-cb226497-8dfd2-4deb-beb7-54a5ae646b8a
Certificate url: ude.my/UC-cb226497-8dfd2-4deb-beb7-54a5ae646b8a
Reference Number: 0004

CERTIFICATE OF COMPLETION

Social Media Marketing Agency : Digital Marketing + Business

Instructors **Pouya Eti • Digital Marketing Expert**

Nishita Jain

Date **July 23, 2021**
Length **52 total hours**

LOG SHEET / ATTENDANCE SHEET

Name of the student:- **Nishita Jain**

Name of the Organisation:-**UDEMY**

Name of Centre **:Matunga**

Name of the course:-
1)**Ultimate SEO,Social Media& DigitalMarketing course**
2)**Social Media Marketing Agency: Digital Marketing +Business**

Name of the college supervisor:-**Mrs.Shagufta Memon**

Month(duration):- **June 5-July23**

Part Time / Full time:- **Part Time**

Week And Dates	No. of Hrs completed	Work Done	Remarks	Centre Supervisor's Sign	College Supervisors Sign
5 June-2July	93 Hours	Completed			
3July-23July	52 Hours	Completed			
TOTAL	**145Hours**				

REPORT ON COURSES

SMT. M.M.P. SHAH WOMEN'S COLLEGE OF ARTS AND COMMERCE

SMT. K.G. SHAH DEPARTMENT OF MASS MEDIA

ABOUT ME

NAME: NAMRATA.M. KAPSE

ROLL No: 13

CLASS: TYBAMM (ADVERTSING)

TOPIC: REPORT ON THE COURSES

COURSES

NAME OF THE PLATFORM : UDEMY

NAME OF THE FIRST COURSE: ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA AND DIGITAL MARKETING COURSE 2021

NAME OF THE SECOND COURSE: SOCIAL MEDIA MARKETING AGENCY: DIGITAL MARKERING + BUSINESS

ABOUT THE COURSES

1) ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA, & DIGITAL MARKETING COURSE 2021

- Digital Marketing
- Facebook Ads, Instagram Ads, Messenger Ads, LinkedIn Ads & Google Ads
- SEO
- Content Marketing
- Copywriting
- Website Creation
- Video Creation
- Freelancing & Digital Nomad Lifestyle

2)Social Media Marketing Agency : Digital Marketing + Business

- E-mail automation
- **21 digital marketing strategies** (marketing cognitive biases)
- Sales Funnels
- Google analytics
- Retargeting
- Remarketing
- Twitter marketing
- YouTube marketing

OBJECTIVE OF THE COURSES

- To learn about Facebook ads, Instagram ads, Google Ads and LinkedIn ads in depth
- To learn about social media and digital marketing
- To educate about copy writing and content writing
- To learn about SEO in depth.
- To learn E-mail marketing, Video creation & Chatbot creation
- In depth analysis of Word press.

CONCLUSION

- Both the courses are filled with quizzes, animated videos, screen recordings and more than enough explanations.
- Practical screen recordings with step-by-step explanations is something I felt was well done, was easy to concentrate on them.
- I got to learn a lot about Facebook business manager with the help of assignments and quizzes the courses asked me to fill in while the course.

CERTIFICATES OF COMPLETION

Certificate of Completion

This is to certify that **Namrata Kapse** successfully completed 93 total hours of **ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA, & DIGITAL MARKETING COURSE 2021** online course on July 1, 2021

Ing. Tomas Moravek | SEO, Facebook Ads & Facebook Marketing Expert

Ing. Tomas Moravek | SEO, Facebook Ads & Facebook Marketing Expert, Instructor

SEO, Facebook Ads & Digital Marketing Academy, Instructor

Beck Robertson, Instructor

Hazel Owens, Instructor

&

Udemy

#BeAble

udemy

CERTIFICATE OF COMPLETION

Social Media Marketing Agency : Digital Marketing + Business

Instructors **Pouya Eti • Digital Marketing Expert**

Namrata Kapse

Date **July 29, 2021**

Length **52 total hours**

THANK YOU

udemy

Certificate no: UC-83478517-c989-433e-9e7f-797693231327
Certificate url: ude.my/UC-83478517-c989-433e-9e7f-797693231327
Reference Number: 0004

CERTIFICATE OF COMPLETION

ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA, & DIGITAL MARKETING COURSE 2021

Instructors **Ing. Tomas Moravek | SEO, Facebook Ads & Facebook Marketing Expert, SEO, Facebook Ads & Digital Marketing Academy, Beck Robertson, Hazel Owens, Frantisek Stehlik, Thomas Talavera Karslake**

Namrata bhatt

Date **Aug. 11, 2021**
Length **91.5 total hours**

NAME : RIYA YADGIRI KUNCHIKORVE

ROLL NO : 15

TOPIC : REPORT ON COURSE

TYBAMM (ADVERTISING)

COURCES NAME :

ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA AND DIGITAL MARKETING COURSE

SOCIAL MEDIA MARKETING AGENCY: DIGITAL MARKETING + BUSINESS.

This certificate above verifies that Riya Kunchikorve successfully completed the course ULTIMATE SEO, SOCIAL MEDIA, & DIGITAL MARKETING COURSE 2021 on 06/12/2021 as taught by Ing. Tomas Moravek | SEO, Facebook Ads & Facebook Marketing Expert, SEO, Facebook Ads & Digital Marketing Academy, Beck Robertson, Hazel Owens, Frantisek Stehlik on Udemy. The certificate indicates the entire course was completed as validated by the student. The course duration represents the total video hours of the course at time of most recent completion.

udemy

udemy

CERTIFICATE OF COMPLETION

Social Media Marketing Agency : Digital Marketing + Business

Instructors: **Pouya Eti • Digital Marketing Expert**

Riya Kunchikorve

Date: **July 28, 2021**
Length: **52 total hours**

This certificate above verifies that Riya Kunchikorve successfully completed the course Social Media Marketing Agency : Digital Marketing + Business on 07/28/2021 as taught by Pouya Eti • Digital Marketing Expert on Udemy. The certificate indicates the entire course was completed as validated by the student. The course duration represents the total video hours of the course at time of most recent completion.

LOG SHEET / ATTENDANCE SHEET

Name of the student:- RIYA YADGIRI KUNCHIKORVE

Name of the Organization:- UDEMY

Name of the center:- MATUNGA

Name of the college supervisor:- Mrs. SHAGUFTA MEMON

Month:- May 11 to July 28

Part Time / Full time:- Part Time

Week And Dates	No. of Hrs completed	Work Done	Remarks	Centre Supervisor's Sign	College Supervisors Sign
May 11th to June 12th	86 hrs	Attended	Completed		
June 25th to July 28th	52hrs	Attended	Completed		
Total	138 hrs				

Smt. M.M.P Shah Women's College of Arts & Commerce

Smt. K.G Shah Department of Mass Media

FEEDBACK FORM FROM WORK PLACE

- Name -
- If assigned any task, does students complete it on time –
- Remark about the student's work at the workplace?
- Remark about the communication skills of the student at the workplace?
- Suggestions for the student from the Organization?
- Signature -

WHITE AND BLACK
ENTERTAINMENT

Experience Letter for Internship
1st July 2021

TO WHOM IT MAY CONCERN,

This letter is to certify that **Miss.Mahima Shukla** has successfully completed her internship program of 3 months with **White And Black Entertainment Pvt Ltd**. Her internship tenure was from **24th March, 2021 to 30th June, 2021**. She was reporting to Managing Director as a **Project Coordinator** and she was actively & diligently involved in the projects and tasks assigned to her.

Feedback for her Roles & Responsibilities:

1 - Possess excellent communication and interpersonal skills
2 – She has a good Relationship building quality
3 - Responsible execution from ideation, planning through to completion of the project
4 - Acquires presentation preparing and presenting skills
5 - Innovative mind with creative ideas
6 - Coordinating internal resources with partners for flawless execution of the project
7 - She has very strong administration skills
8 – Her Data mining skills were very strong
9 – She has an Excellent team management skills

During the span, we found her punctual and hardworking person. His learning powers are good and he picks up swiftly. Her feedback and evaluation proved that she learned keenly. Moreover, her interpersonal and communication skills are brilliant.

We wish her a bright future.

Sincerely,
Pathak
Snehaashish Pathak

INTERNSHALA TRAININGS

Certificate of Training

Soni Kunchikorve

has successfully completed a eight weeks online training on **Digital Marketing**. The training consisted of Building Web Presence, Search Engine Optimisation, Digital Advertising with Google Ads, Google Ads Search Certification, Social Media Marketing, Email Marketing, Inbound Marketing, Revisiting Google Analytics, Newer Trends in Digital Marketing and The Final Project modules.

In the final assessment, Soni scored 50% marks.

We wish Soni all the best for the future endeavours.

Sarvesh Agarwal

FOUNDER & CEO, INTERNSHALA

Date of certification: [illegible] Certificate no.: [illegible]

For certificate authentication, please visit [illegible] and quote the relationship certificate

Google Digital Garage

Soni Kunchikorve

is hereby awarded this certificate of achievement for the successful completion of **The Fundamentals of Digital Marketing** certification exam on **24/07/2021**

President - Google EMEA

CEO - IAB Europe

The Open University

Congratulations!

Soni Kunchikorve

Completed

Google Ads Video Certification

on July 21, 2021

Completion ID: 84577810 · Expires: July 21, 2022

Congratulations!

Soni Kunchikorve

Completed

Google Ads Search Certification

on July 22, 2021

Completion ID: 34783546 | Expires: July 22, 2022

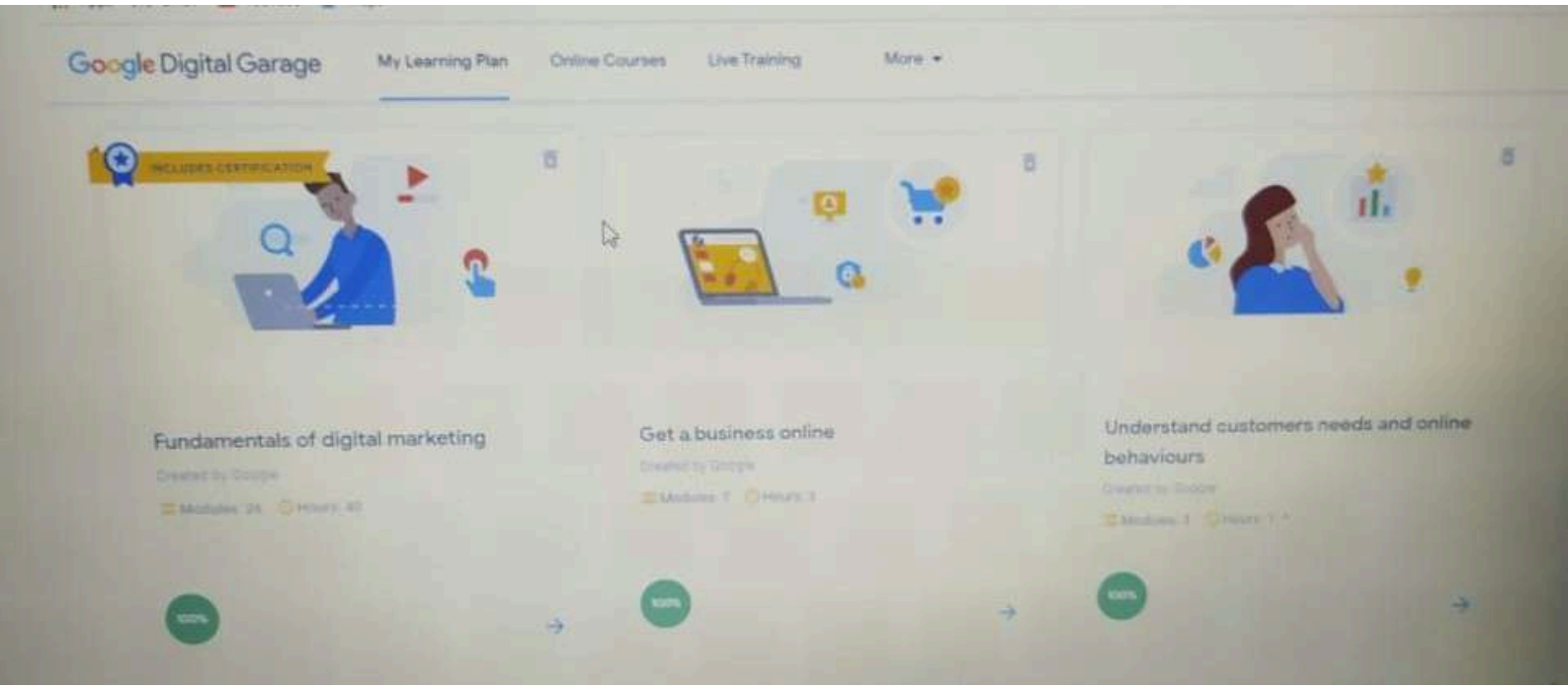
Google Digital Garage
My Learning Plan
Online Courses
Live Training
More
INCLUDES CERTIFICATION
Fundamentals of digital marketing
Get a business online
Understand customers needs and online behaviours

MT EDUCARE LIMITED

Ref No.204457

Date: 09.08.2021

EXPERIENCE CERTIFICATE

This is to certify that Ms. **SAEE MADHUSUDAN SALVI** is working as **CENTER ADMINISTRATOR CUM MARKETING** with **MT EDUCARE LTD** **from 27TH APRIL 2019 to TILL DATE**

During the above period Ms **SAEE MADHUSUDAN SALVI** participated in performing the work with determination & sincerity. As we observed **she** is an active and very qualified person and she could perform all **her** assigned tasks effectively.

Besides, in my opinion, **she** is a motivated, professional, hardworking and innovative person. **She** contributed much to our organizational goals and targets. And her performance proved to be most effective in our organization.

Authorized signatory

MT EDUCARE LTD. Stateboard TARDEO

SANJAY MAHKAUND
(CENTER HEAD)

Scanned by CamScanner

INTERNSHALA TRAININGS

Certificate of Training

Aarti Agawane

from SMT.M.M.P.SHAH WOMAN'S COLLEGE OF ARTS & COMMERCE has successfully completed an 8-week online training on **Digital Marketing**. The training consisted of Building Web Presence, Search Engine Optimisation, Digital Advertising with Google Ads, Google Ads Search Certification, Social Media Marketing, Email Marketing, Inbound Marketing, Revisiting Google Analytics, Newer Trends in Digital Marketing, and The Final Project modules.

We wish Aarti all the best for future endeavours.

Sarvesh Agarwal

FOUNDER & CEO, INTERNSHALA

Date of certification: 2021-09-26 Certificate no. : 0400D1A5-8628-5389-B0A2-12532E692ABC

For certificate authentication, please visit https://trainings.internshala.com/verify_certificate

INTERNSHIP REPORT

SMT.M.M.P SHAH WOMENS COLLEGE OF ARTS & COMMERCE
SMT. SHAH DEPARTMENT OF MASS MEDIA

NAME – HETAL VAGHELA
ROLL NO – 33
CLASS - TYBAMM ADVERTISING

INTERNSHIP

NAME OF THE ORGANISATION
Nagraj Print & Pack

DESIGNATION

Sales and marketing division

Handling the customer

Printing data from the client

EXPERIENCE

My experience of working as an intern with Nagraj Print & Pack was good.

It helped me to boost my confidence, my communication skills while interacting with the clients, it also helped me to develop my personality, regularity, target completion on time.

It helped me create a better vision towards my work and how the market works.

NAGRAJ
Print & Pack

TO WHOMEVER IT MAY CONCERN

This is certify that **Hetal Girdhar Vaghela** has undergone an internship for two month period in our company **NAGRAJ PRINT & PACK** dated - 2nd June 2021 to 7th August 2021, under the position of SALES and MARKETING DIVISION. During this tenure she has undertaken various tasks in Management and has successfully completed them to the best of her abilities. Her conduct has been excellent during this tenure. We wish her good luck for her future assignments.

Her major responsibilities included working/

- Printing data from the clients.
- Weekly report
- Handling the customers.
- Marketing strategies and new ideas.

During her tenure with us we found her

- Disciplined
- Hardworking
- Determined
- Friendly
- Motivated

We thank you for your services at Nagraj Print & Pack and wish you the best in your future endeavours.

Regards

NAGRAJ PRINT AND PACK
DATE: 9.8.2021

Gala No.07, Ground Floor, Rajmilan Rajtilak CHSL,
Opp. Sagar Indl Complex, Chinchpada Naka,
Vasai (East) - 401208 Palghar Maharashtra

Email.: eknath.print@gmail.com
eknath.digital@gmail.com
Contact no. : 095946 32772

IN&OUT

Ref. No. IOAPL/HO/1326/2020
October 26, 2020

Ms. Simeran D. Yadav
Internship – Media Marketing & Development
11/8, Kidwai Nagar,
R.A.Kidwai Road,
Wadala.
Mumbai- 400 031

Dear Simeran

The Management is very much pleased to offer you the position of intern for Media Marketing & Development in our Company. The Specifics of Internship is as follows:-

1. Designation : Intern – Madia Marketing & Development
2. Start Date : 01/11/2020
3. End Date : 31/01/2021
4. No. of Hours Per Week : 20 Hours per week (Monday to Firday)
5. Stipend : unpaid
6. The Travel Allowance will be reimbursed at actuals

You will be reporting to Mr. Santosh Raorane Sr. Manager Marketing

Your Internship Responsibilities will be as follws :

1. Developing marketing resources of different products.
2. Create Sales Presentation and survey reports of prospective client
3. Work with department manager to analyze marketing resource effectiveness
4. Working with department managers in creating new branding verticals
5. Attend weekly review meeting of the working group of our company.

Should you have any questions regarding the specifies of your intern please contact the undersigned on 9930626778 or by email: kailash@inandoutindia.com

Wishing you all the best.

Yours

For IN & OUT ADVERTISING PVT.LTD.

IN & OUT ADVERTISING PVT. LTD. MUMBAI

KAILASH
VICE PRESIDENT

In & Out Advertising Pvt. Ltd
601-603 Kshitij, Opp. Andheri Sports Complex, Veera Desai Rd, Andheri West, Mumbai 40005
+91-22-26559999 info@inandoutindia.com www.inandoutindia.co

IN&OUT

TO WHOM -SO- EVER IT MY CONCERN

This is to certify that Ms. Simeran D. Yadav has done his internship in Media Marketing & Development in our Company at Mumbai, From 1st Nov,2020 to 31st Jan,2021. She has worked on launch campaign of Godrej Properties Limited – The Nest (Vikhroli) and in development of our new Elevator Branding vertical

This Godrej Properties Limited Project was aimed to launch their theme based promotion of new housing project at The Nest (Vikhroli) while Elevator Branding is a new medium in Outdoor Publicity.

During the Internship she demonstrated good creative ideas and execution skills with a self – motivated attitude to learn new things. Her performance exceeded expectations and was able to complete the project successfully on time.

We wish her all the best for her future endeavours.

For IN & OUT ADVERTISING PVT.LTD.

IN & OUT ADVERTISING PVT. LTD. MUMBAI

KAILASH
VICE PRESIDENT

Date : 08/02/2021

Place : Mumbai

In & Out Advertising Pvt. Ltd
601-603 Kshitij, Opp. Andheri Sports Complex, Veera Desai Rd, Andheri West, Mumbai 40005
+91-22-26559999 info@inandoutindia.com www.inandoutindia.co

LOG SHEET / ATTENDANCE SHEET

Name of the student:- YADAV SIMERAN DAYARAM

Name of the Organization:- IN & OUT ADVERTISEMENT

Name of the center:-

Name of the college supervisor:-

Month:- NOVEMBER TO DECEMBER

Part Time / Full time:- PART TIME 4hrs /perday.

Week And Dates	No. of Hrs completed	Work Done	Remarks	Centre Supervisor's Sign	College Supervisors Sign
1st NOV - 8th 2020	20				
11th - 15th NOV	20	SITE TRACKING Analysis	Good		
18th - 22th NOV	20				
25th - 29 NOV	20				
2nd - 6th Dec	20	presentation			
9th - 13th Dec	20				
16th - 20th Dec	20	Finalizing			
23 - 27 Dec	20				
30 - 3 Jan	20	PPT execution Meeting Reviews	Good		
6 - 10 Jan	20				
13 - 17 Jan	20				
20 - 24 Jan	20	Final report launching sites			
27 - 31 Jan	20				

Sign:

Smt. M.M.P Shah Women's College of Arts & Commerce

Smt. K.G Shah Department of Mass Media

FEEDBACK FORM FROM WORK PLACE

- Name - SIMERAN YADAV
- If assigned any task, does students complete it on time – YES
- Remark about the student's work at the workplace?

  VERY CO-ORDINATIVE, TRIES TO COMPLETE THE ASSIGNED TASK ON TIME.

- Remark about the communication skills of the student at the workplace?

  GOOD AT COMMUNICATION, MAINTAINS UNDERSTANDING & ON POINT CONVERSATION.

- Suggestions for the student from the Organization?

  NEEDS TO LEARN UP COMING TECHNOLOGY.

- Signature -

MARKETING WIRE
YOUR DIGITAL MARKETING PARTNER

Laitumkhrah, Shillong, Meghalaya 793003

GSTIN: 17AYHPN9079P1ZB
www.marketingwire.in
support@marketingwire.in

Date: - 18th June , 2021

Priti Pandey

Dear Priti,

I am delighted & excited to welcome you to Marketing Wire as a Journalist/Reporting (Intern). At Marketing Wire, we believe that our team is our biggest strength and we take pride in hiring ONLY the best and the brightest. We are confident that you would play a significant role in the overall success of the venture and wish you the most enjoyable, learning packed and truly meaningful internship experience with Marketing Wire.

Your appointment will be governed by the terms and conditions presented in the Annexure A.

We look forward to you joining us. Please do not hesitate to mails or call us for any information you may need. Also, please sign the duplicate of this offer as your acceptance and forward the same to us.

Badal Nyalang

Marketing Wire
www.marketingwire.in | +91 94851 84375
Badal.Nyalang@marketingwire.in

Internship offer with Marketing Wire

Annexure A

You shall be governed by the following terms and condition of service during your internship with Marketing Wire, and those may be amended from time to time.

1. You are being hired as a **Journalist/Reporting (Intern)** and Badal Nyalang would be your Reporting Manager. As a **Journalist/Reporting (Intern)** you would be responsible to work as a reporter/writer and write articles, success stories, etc. Collect news, relevant information and identify potential news or topics for publishing, Meet daily news story deadlines, coordinate and conduct interviews (written, audio, and video format), suggest innovative concepts and ideas, both related to and unrelated to the content or as required and requested from the client.

2. Your date of joining is 21st June 2021 and the duration of the internship would be 3 months (90 days). Our working hour is 10AM-6PM, Monday – Friday. During this time you are expected to devote your time and efforts solely to Marketing Wire work. You are also required to let your manager know about forthcoming events (if there are any) in advance so that your work can be planned accordingly.

3. All the work that you will produce at or in relation to Marketing Wire will be the intellectual property of Marketing Wire. You are not allowed to store, copy, sell, share, and distribute it to a third party under any circumstances. Similarly you are expected to refrain from sharing confidential details about your work in public domains (both online and offline) without prior discussion and approval with your manager.

4. We take data privacy and security very seriously and to maintain confidentiality of any staff, customers, clients, and companies' data and contact details that you may get access to during your tenure will be your responsibility. Marketing Wire operates on **zero tolerance** principle with regard to any breach of data security guidelines.

Internship offer with Marketing Wire

6. Under normal circumstances either the company or you may terminate this association by providing a notice of 30 days without assigning any reason. However, the company may terminate this agreement forthwith under situations of in-disciplinary behaviours.

7. You are expected to conduct yourself with utmost professionalism in dealing with your team members, colleagues, clients and customers and treat everyone with due respect.

8. Marketing Wire is a start up and we love people who like to go beyond the normal call of the duty and can think out of the box. Surprise us with your passion, intelligence, creativity and hardwork – and expect appreciation & rewards to follow.

9. Expect constant and continuous objective feedback from your manager and other team members and we encourage you to ask for and provide feedback at every possible opportunity. It's your right to receive and give feedback – this is the ONLY way we all can continuously push ourselves to do better.

10. Have fun at what you do and do the right thing – both the principles are core of what Marketing Wire stands for and we expect you to imbibe them in your day to day actions and continuously challenge us if we are falling short of expectations on either of them.

11. You will be provided a stipend of ₹3,500 per month. All the office related expenses (phone calls, field visits etc., if any) would be reimbursed on actual basis.

Internship offer with Marketing Wire

I have negotiated, agreed, read and understood all the terms and conditions of this offer letter as well as Annexure hereto and affix my signature in complete acceptance of the terms of the letter.

Date:
Signature:

Place:
Name:

REPORT

ON

INTERNSHIP

SMT.M.M.P SHAH WOMENS COLLEGE OF ARTS & COMMERCE
SMT.K.G.SHAH DEPARTMENT OF MASS MEDIA

NAME - KHUSHBOO UMEDSINGH RAJPUROHIT
ROLL NO - 25
TOPIC - REPORT ON INTERNSHIP
CLASS - TYBAMM JOURNALISM

INTERNSHIP

NAME OF THE ORGANISATION

Pennews India

Educate , Inform and entertain .

ABOUT THE FIRM

Pennews India is an online website which gives daily news on their website. It aslo hires students as an intern and train them. This organisation emphasize on three things that is to educate, to inform and entertain. It covers all the news from different fields like general news , politics, national, international, sports, entertainment or bollywood news, etc.

DESIGNATION

- Content writer
- Story writer
- I have been working since : 15/06/21

EXPERIENCE

- My experience of working as an intern with Pennews India was good. The news articles, story writing and feature story writing was my daily target .
- It helped me to boost my confidence, my writing skills ,it also helped me to develop my personality, regularity, target completion on time.
- I also learnt how to write effective story writing and time management.

CONCLUSION

I have realized that the media field does not have any limitations when it comes to promotional aspects of any kind of company. While interning with Pennews India whateveri hashabe learnt in class all that concept I've implement in my work during internship. The mistakes as beginners helps the intern to explore their capabilities to handle different work in different fields.

I am Thankful to the BAMM Department of SMT. M.M.P Shah College for supporting us and allowing us to take up internships.

As army repel drones second attacked thwarted

June 29, 2021 by Pen News Team

Jammu: Official said on Monday that Attack by two drones within 24 hours atal Indian air Force IAF station in Jammu the two similar devices were spotted hovering over kaluchak and ratnuchak military facilities in the region prompting soldiers to open fire at them.

A new security threat has emerged from across the border with Pakistan expert says with the

Show pictures

Hello Candidate,
Welcome to Pen News India

We are happy to welcome you as an intern at our organisation. From tomorrow onwards you will be working with us. Please go through below guidelines

1) As a Part of this Internship you will have to write a minimum **6-7 articles per day** related to the beat assigned to you.
2) Word Limit would be **not more than 250 words.**
3) Additionally, once a week you might have to write a feature article for which we will provide you with the topic/subject, or you can come up with your own.
4) **You have to mail your article on pennewsindia1@gmail.com everyday.**
5) **Don't attach word/PDF files to mail**, just copy-paste your article in the mail itself.
6) **End of the Day you have to send a list of articles** which you have covered in a day.
7) You may follow ANI, PTI and other media outlets as a secondary source of information. Paraphrasing is important in that case.
8) You may take ideas about news writing from various news portals, but don't follow them blindly. Do not copy paste articles.

All the best!

--
Pen News India
www.pennewsindia.com

Thank you

BAFI

RULOANS
much more than money

CIN : U74120MH2015PTC265829

Date: 30th March 2021

To,
Sangeeta Ganesh
Mumbai

Dear **Sangeeta Ganesh,**

As per discussion between you & the Management of the Company that you are ready to provide your services as **Consultant – Tele Marketing Executive (refer as "agent")** for our company, as company in need of the agents who can work in different territories & do the marketing & selling of Financial product on behalf of Company who is DSA of various Banks as well as Non-banking financial company.

We want you to report on 25th March 2021 at our **Mumbai** Office & fulfill the formalities along with submitting your KYC & joining date with us will be 25th March 2021.

Terms & conditions

1. Sales Territory: -
   "Agent" shall act as a (sole) sales agent for the "Principal" (**Ruloans Distribution Services Pvt. Ltd.**) within the territory of the **Noida** as well as the area mutually agreed upon.

   The above premises are provided to you for reporting, submission of customers documents, loan/cards files taking guidance and training from our expertise, using our infrastructure

2. Sales products: -
   All Financial products like credit cards, Personal Loans Home loan etc.

3. Agent shall do its best to utmost efforts for the sales of above products and all sales transactions should be confirmed in advance by Principal.

4. You will be paid a Consultancy Fees of Rs. 12,000/- Per Month in Gross. TDS will be deducted as per prevailing rate.

5. Your Service is effective from 25th March 2021 to 25th February 2023, and shall remain effective for Two years. This may be extended automatically unless otherwise informed by either party.

6. Any disputes or claims which may not be resolved amicably between the parties hereto shall be settled by arbitration in Mumbai Jurisdiction.

7. **Your Fees/Commission will be also depending on Following Point: -**
   - Agent's wants to discontinue from his/her service should give One-month prior notice in writing; otherwise, He / She will be not liable for any Commission/fees and/or incentives.
   - Any involvement in Fraud or representation which is detected by the bank or Internal Back office, which is sourced by you, will be liable to pay a fine of Rs. 5000/-.
   - TDS will be deducted from gross Commission/Fees.

RULOANS
much more than money

CIN : U74120MH2015PTC265829

8. Relationship: -
   The relationship between the parties is on principal-to-principal basis and at all times for all purposes shall be construed accordingly.

   The "Agent" shall provide the said services hereunder as an independent service provider and nothing contained herein shall be deemed to create any association, partnership, joint venture or relationship of principal and / or master and servant, or employer and employee between the Company and the "Agent".

IN WITNESS WHEREOF, the parties have caused this Agreement to be executed by their duly authorized representatives as of the date first written above:

If you accept the terms and conditions above mentioned, please sign the declaration in the duplicate and return to us. The original shall be retained by you.

We welcome you to the RULOANS family and look forward to a fruitful collaboration.

With best wishes,

I agree to accept consultancy on the terms and conditions above mentioned. The original of this letter is in my possession.

For **RULOANS DISTRIBUTIONS SERVICES Pvt. Ltd.**

SHRADHA PRAKASH KASKAR
Authorized Signatory
Name: Shraddha Kaskar
Designation: HR Manager

Accepted:
Date:
Name: Sangeeta Ganesh

Signature:

RULOANS DISTRIBUTION SERVICES PRIVATE LIMITED

7 & 8, 3rd Floor, Magan Mahal,
Sir M. V. Road, Andheri (E),
Mumbai – 400069 India

Toll Free : 18002667576
e : info@ruloans.com
www.ruloans.com

Scanned with CamScanner

M.B. AGRAWAL & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
Web.: mbaconsultants.in

204 C, Mhatre Pen Bldg., Senapati Bapat Marg
Dadar (West), Mumbai - 400 028.
Tel.: 2431 4861 / 82, Fax : 2436 3312
E-mail : mbaandco@yahoo.co.in

M. B. AGRAWAL F.C.A., F.I.V.
YATIN MEHTA F.C.A.
RAMESHMAL SANGHAVI F.C.A.
SANJAY LUNKAD F.C.A., D.I.S.A. (ICA)

HARISHAL AGRAWAL F.C.A., D.I.S.A. (ICA), C.I.S.A.
SUBODH N. AGRAWAL F.C.A.
HERIN SHAH A.C.A.
JENNY BHAVSAR A.C.A., LL.B.

Date – 21 June 2021

To,
Miss Manisha Raju Dhebe
Kamraj Nagar, kokri Agar
Antop Hill Church SM Road
Mumbai – 400037

Sub – Certificate of Completion of Internship

This to certify that **Miss Manisha Raju Dhebe** student of TYBAFI has completed her six months internship with us, from 19th January 2021 to 21 June 2021.

As part of her internship she has done a study on **"Income Tax & TDS"** in Tax Department.

During the tenure with us, we found Miss Manisha Raju Dhebe, sincere and result oriented.

We wish Miss Manisha Raju Dhebe all the best for her future.

Yours faithfully
M.B Agrawal & Co.
Chartered Accountants

Sanjay Lunkad
Partner

M. B. AGRAWAL & CO. MUMBAI CHARTERED ACCOUNTANTS

Branch : 610, Churchgate Chambers, 5, New Marine Lines, Churchgate, Mumbai - 400 020.
: 3044, Agra Road, Dhule, Maharashtra - 424 001.
: 306, Swastik Corporate, Disa Park, LBS Marg, Ghatkopar (W), Mumbai - 400 077.

Scanned with CamScanner

A K SOMANI & CO
Chartered Accountants

A K SOMANI & CO.
Chartered Accountants
415, Highway Commercial Centre,
IB Patel Road, Goregaon East,
Mumbai, MH 400 063.

Mob : +91 8286986405
Mob : +91 9082604776
Email : aksomani@outlook.com
Web : www.aksomani.com

INTERNSHIP COMPLETION LETTER

This is to certify that **Ms. Rutuja Sanjay Dhumal** , Student of TY-BAFI (Bachelor Of Accounting Finance & Insurance) SNDT College, Matunga has successfully completed her internship period of three months (01st March,2021 to 31st May 2021) with us. During her internship, she has learned Accounting in Tally and Excel Functioning in our firm.

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us was very fruitful and we wish her ever success in her life and career.

For **A K SOMANI & CO**
Chartered Accountants
ICAI Firm Reg. No.:141941W

A.K. SOMANI & CO. MUMBAI 141941W Chartered Accountants

Akshay Kumar Somani
Proprietor

Mem. No.: 169865

Date – 03rd July, 2021
Place : Mumbai

A K SOMANI & CO
Chartered Accountants

Scanned with CamScanner

STEP-UP

Financial Services

stepupfinancialservices123@gmail.com

022 - 49631157

Date: 13/03/2021

INTERNSHIP LETTER

This to certify that Ms. Komal Atul Dubey , student of TYBAFI(Accounting, Finance, and Insurance) SMT. M. M. P. Shah Women's College of Arts & Commerce, Matunga. Is doing her Internship from 23rd November,2020 to till today and will go on with us. During this period she has learned Banking & Finance (All Loan Products) in our firm.

We found that she is hardworking in her work. She is willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us is very faithful and we wish her success in her life and career.

Thanks & Regards,

(AMIT JADHAV)

9, F- 132, 1st Floor, Haware Fantasia Business Park, Sector 30A, Vashi, Navi Mumbai - 400 703.

Scanned with CamScanner

Sammy
Internet & Services

Sammy Internet Services
Office: Shop No. 26,Sant Janabai Market, Ghodapdev cross rd. no. 1,
Mumbai - 400 033.
Email : info@sammyinternet.in
Contact No : +91 9004 866 583/ +91 9224343071

Date: - 12th June 2021

Sub :- Internship Completion Letter

This Is To Certify That Ms. Sakshi Purushottam Ghadigaonkar Student Of T. Y. BAFI (Accounting Finance & Insurance) SNDT College Matunga Has Successfully Completed Her Internship Period Of 1 month (12th May 2021 To 12th June 2021) With Us During Her Internship She Has Learned Communicate with customer, Billing , Renewals And Renewal Reporting In Our Firm.

We Found Her Hardworking In Her Internship Program With Us She Was Always Willing To Give Her Best Efforts And Get Into The Depth Of The Subject.

Her Association with Us Way Very Fruitful and We Wish Her Ever Success in Her Life & Career.

Sammy Internet and Services

SAMMY INTERNET & SERVICES

Scanned with CamScanner

ASTITVA INTERIORS

Shop No:3 Rumani Manzil, Near Asalfa Metro Station Asalfa Village
Ghatkopar (W), Mumbai 400 084 Mob. 9821081709
Email : astitva81@gmail.com

Date : 15/6/2021

Subject- Internship Completion Letter.

This is to Certify that **Miss. Shrutika Kakasaheb Gharwade,** Student of TYBAFI (Accounting, Finance and Insurance) SMT. M.M.P. Shah Women's College Of Arts and Commerce, Matunga. Has successfully completed Her Internship Period Of 4 Months (**From 10th February 2021 to 15th June 2021**) with us. During her Internship, she has learned the following things while her Internship.

1. Excel workbook
2. Mailings
3. Documentation/Filing of the company
4. GST Maintainance.
5. Daily Handeling all banking transactions.
6. Making Quotations and Tax Invoices.

Over all she has worked in Accounts Department.

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts, and get into the depth of the subject.

Her association with us was very Faithful and we wish her ever success in her life and career.

For, ASTITVA INTERIORS

AUTHORISED SIGNATORY

(Proprietor)

Mr. Shrikant Shingote.

Scanned with CamScanner

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

आशिष डी. कांबळे
सदस्य अभिकर्ताओं के लिये अध्यक्ष क्लब
Ashish D. Kamble
Member Chairman's Club for Agents

2015 - 2016

05th July, 2021

SUB:- INTERNSHIP LETTER

This is to certify that, Ms. SONALI GOVIND GHOGLE student of SMT. MMP SHAH WOMEN'S COLLEGE OF ARTS & COMMERCE, MATUNGA, She is successfully completing her internship for the period of 3 months (01st June, 2021 to 10th September, 2021) with us. During her internship she is learning Office Administration.

We found her very sincere and hardworking during her internship program. She is always willing to give her best and always eager in learning the subject.

Her association with us was very truthful and we wish her every success in her life and easier.

MR. ASHISH D. KAMBLE
LIC Chairman's Club Member
LIC0057488G / 1211019
Mobile No.: 9322878823
Email : ashishkamblelic@gmail.com

...: शाखा क्र. 88G, सी /101, ... डॉ. देशपांडे नर्सिंग होम के सिवे, एल.बी.एस. मार्ग, कुर्ला (प), मुंबई - 400070
...: (कार्या.) (022) 26503098, 26505604, 26505607 (मो) 9322878823 / 9821237413
...: ashishkamblelic@yahoo.com / shankarudamalelic@gmail.com

...Br. No. 88G, C/101, Jagannath House, Below Dr. Deshpande's Nursing Home, L.B.S. Marg, Kurla (W), Mumbai - 400070
...: (022) 26503098, 26505604, 26505607 (M) 9322878823 / 9821237413
...: ashishkamblelic@yahoo.com / shankarudamalelic@gmail.com

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Sakshi Sachin Girkar

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

Mr Dilip H Rahatal

Development Officer
Br 919, LIC OF INDIA 3rd Floor, Jeevan Prakash Bldg, Sir P M Road, Fort, Mumbai 400001

Date: 1st July 2021

Sub: Internship Letter

This is to certify that **Ms. Rutuja Mohan Harachkar**, student of TYBAFI (Accounting, Finance & Insurance) Smt. M. M. P. Shah Women's College of Arts & Commerce, Matunga is doing her Internship from 1st March, 2021 till today & will go on with us. During this period she has learned so many things related to **Insurance and risk management**.

We found that she is Hardworking in her work. She is willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us is very faithful and we wish her success in her life & career.

(Dilip H. Rahatal)

DILIP ... HATAL
Dev. ... Officer
Mob ...
Branch ... Dev. Code 4613
Fort, MUMBAI - 400 001

Scanned with CamScanner

HEAVY ENGINEERING

All Type Of Machanical work Valve Pipe Line
Fabrication Works, Electrical Works & Civil Works.

Near Ganesh Hotel, Godown No.02, Plot No.273, Kolsa bunder, Darukhana, Reay Road, Mumbai - 400010

Mob + 9920665575 / 8291983352, Email : heavyengg3@gmail.com, GSTIN+ 27ADSPH6320H1ZF

Date- 03-07-2021

TO WHOM-SO-EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that **Ms. Suguna Harijan** Daughter of Mr. **Santosh Harijan** worked as **Data Entry Operator** in our company from **May, 2021 to Jun, 2021** with our entire satisfaction. During her working period, we found her a sincere, honest, hardworking, dedicated employee with a professional attitude and very good job knowledge. She is amiable in nature and character is well. We have no objection to allow her in any better position and have no liabilities in our company.

We wish her every success in life.

Sincerely,
Thirusang Dharma
(Proprietor)
Heavy Engineering

HEAVY ENGINEERING MUMBAI

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Swapnali Santosh Hule

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

T-UNIT KIDS

Date:25th june 2021.

Sub: Internship Completion Letter

This is to certify that **Ms. Idrisi Tahsim Bano Matlub Ali** student of TYBAFI (Accounting, finance & insurance) Smt. M.M.P. Shah Women's College of Arts and Commerce Matunga has successfully completed her internship period of 2 months **(3rd april,2021 to 15th april,2021 & 1st june,2021 to 30th june,2021)** with us. During her internship, she has learned **Accounting Billing** in our firm.

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us was very fruitful and we wish her ever success in her life & career.

For T-UNIT KIDS

Director

T-UNIT KIDS
255 SALLU SHETH COMPOUND,
BEHIND DHARAVI RESTAURANT
MAHIM (E) MUMBAI- 400017

Scanned with CamScanner

Letter of Intent Inbox

eoshr 20 Apr
to me, eoshr

Dear neesha

We are happy to announce that you have been selected for the position of CUSTOMER SUPPORT REPRESENTATIVE for OPERATIONS Department in Eureka Outsourcing Solutions Pvt. Ltd.

Enclosed Letter of Intent for your reference.

Reference No - 18796

This Letter of Intent (LOI) will be valid for 7 days from date of this email. If this LOI is acceptable to you, please let us know your acceptance of employment by confirming via email within 7 days of receiving this email. If we do not hear back from you within this period, this offer will be deemed to be cancelled & we are not obliged to hold the position open for you.

Click here to upload your documents for completing joining formalities using the below mentioned credentials.(Please Use Google Chrome Browser Only)

Offer ID 18796
OTP 4926

Thanks

Eureka Outsourcing Solutions Pvt. Ltd.

Human Resource Department

Scanned with CamScanner

P. S. PATIL & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS

Date: 17-06-2021

Sub: Internship Completion Letter

This is to certify that Ms. DEEPA CHETAN JATOLIYA, student of TY-BAFI (Bachelor Of Accounting Finance & Insurance) SNDT College, Matunga has successfully completed her internship period of 2 months (7th april,2021 to 7th june,2021) with us. During her internship, she has learned Accounting & GST in our firm.

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us was very Fruitful and we wish her ever success in her life & career.

For P. S Patil & Co.
Chartered Accountants
FRN – 119901W

P. S. PATIL & CO. M. NO. 105469 CHARTERED ACCOUNTANTS

P Patil

CA. PushkarPatil
M.No. 105469
Date – 17th June, 2021

www.pspatil.co.in
2nd Floor, 13/3, Chandrodaya CHS, Swastik Park, Chembur, Mumbai - 71
+91 9820602079
ca.pushkar@pspatil.co.in

Scanned with CamScanner

Expertrons

Date: - 14 April 2021

Private & Confidential

To,

Akshata Kadam

Subject: ***Business Development (Sales) Internship Offer Letter with Expertrons***

Dear ***Akshata Kadam,***

We are pleased to assign you a ***Business Development (Sales) Internship*** *at Expertrons.*

We believe that our team is our biggest strength and we take pride in hiring ONLY the best and the brightest. We are confident that you would play a significant role in the overall success of the venture and wish you the most enjoyable, learning packed and truly meaningful internship experience with ***Expertrons***

Your appointment will be governed by the terms and conditions presented in ***Annexure A.***
For our records, you are requested to share the following documents

- *College ID*
- *Address proof*
- *Expertrons Offer Letter with your Signature*

We look forward to you joining us. Please do not hesitate to call us for any information you may need. Also, please sign the duplicate of this offer as your acceptance and forward the same to us.

Scanned with CamScanner

KHATTER & ASSOCIATES
ARCHITECTS (INDIA) PRIVATE LIMITED
Architects • Designers • Planners
501, 5th Floor, SAGB, Jn. Of Turner Road & 24th Road, TPS III, Bandra (West), Mumbai - 400 050, INDIA
Tel.: +91-22-2640 3272 / 6671 7188 • Fax : +91-22-2640 3273
Email : mail@khatter.com • Website : www.khatter.com

Date: 05/06/2021

Sub : Offer Letter of Employment

Dear Sayali kadam,

This is in reference to interview you had with us. We are pleased to offer you a position of **Accountant**. Your gross annual salary based on cost of the company will be Rs 72,000/- (Seventy Two Thousand Only) per annum

Your date of Joining will be from **05th June, 2021**. Please note that this offer is valid subject to your signing and returning the duplicate copy of this letter within seven working days.

We welcome you and are delighted that you have chosen to be part of our team. We hope your association with us will be mutually beneficial, pleasant, and fulfilling.

Contact number : +91 7304165844 / 9326869608

For Khatter & Associates Architect (I) Pvt Ltd.

Rajesh Khatter

Director

Scanned with CamScanner

LETTER OF APPOINTMENT

DATE:-21.05.2021

DEAR:MISS ASHWINI MADHUKAR KAMBLE

We are pleased to welcome you to SKY as a Management Trainee.

We are eager to have you work with us on such an important assessment. We see your skills as a value addition to our company and our clients. You would be appointed as a Management Trainee and your date of joining would be DATE:-21.05.2021

Your office timing is 9.00 am to 6.00pm.You will be on training from DATE:-21.05.2021

You will market the product assigned to you by the company from time to time.Your income is based on business procured by you and on COMMISSION basis.your income is subject to Tax Deductional source (INCOME-TAX) at the rate applicable at the time of payment.On the successful completion of your training,you will be absorbed in the managerial position.

We welcome you to the organisation and look forward to long and fruitful business association with you. BEST OF LUCK!!!!

FOR

SKY ENTERPRISES

THIS IS COMPUTER GENERATED LETTER IT DOES NOT REQUIRED ANY SIGNATURE.

SKY Enterprises
Office : No.4, 2nd Floor, IRRANI Building, Next to Dadar Post Office, Dadar (East), Mumbai 400 014
Office : B/6, Basement Washington Plaza, Topiwala Centre, Behind Ratna Hotel, Near Railway Station, Goregaon (W), Mumbai - 400 062
Premises No. 503, 5th Floor,Chhedha Arcade Station Road, Above J.K. Shah Classes, Chendani Naka, Near Gold Cinema, Thane (W), Thane - 400 60

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अश्विन महेश उपाध्याय
वरिष्ठ व्यवसाय सहयोगी
Ashwin Mahesh Upadhyaya
Senior Business Associate
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

Date : 15th March, 2021.

Sub: INTERNSHIP COMPLETION LETTER

This is to certify that Ms. AISHWARYA - GAJENDRA KAMIEKAR, Student of Smt. M.M.P SHAH WOMEN'S COLLEGE of ARTS & COMMERCE, MATUNGA, has successfully completed her internship period of 7 months (15th AUGUST, 2020 to 15th MARCH 2021) both dates inclusive, with us. During her internship she has learned Insurance, and Office Administration.

We found here very sincere and hardworking during her internship programme. She was always willing to give her best and was always eager in learning the subject in depth.

Her association with us was very fruitful and we wish her every success in her life and career.

Am Upadhyaya

ASHWIN M. UPADHYAYA
LIC. DEVELOPMENT OFFICER
S. R. No. 491725
CODE No. 4673 / BR. 919
TEL. : 24311417 / 9821298219
S.B.A.

L.I.C. THE BOND OF LOVE

कार्यालय : शाखा क्र ९१९, जीवन प्रकाश बिल्डींग, तिसरी मंजिल, सर पी.एम. रोड, फोर्ट, मुंबई - ४०० ००१
दूरभाष : 022 66162574, नि : 022 24311417, मो. : 9821298219 / 9969026126
ईमेल : ash_upadhyaya@hotmail.com

Off : Br. No. 919, Jeevan Prakash Building, 3rd Floor Sir P.M. Road, Fort, Mumbai - 400 001.
Tel. : (O) 022 66162574, (R) 022 24311417, Mob. : 9821298219 / 9969026126
Email : ash_upadhyaya@hotmail.com

Scanned with CamScanner

KUTE KIDS
FIRST CHOICE OF KIDS
SHOP NO-14, BHOOMI PLAZA, MASJID GALLI,SENAPATI BAPAT MARG,
DADAR (WEST), MUMBAI-400028
MOB .:9892939260 E-MAIL : kutekids.mumbai@gmail.com
GSTIN: 27AALFK9928N1ZD

DATE :– 31st March 2021

Sub:- Intership Completion Letter

This Is To Certify That Ms. Rupali Rajendra Kherade Student Of TYBAFI (**Accounting Finance & Insurance**) SNDT College Matunga Has Successfully Completed Her Intership Period Of 4 Months (4th December 2020 To 31st March 2021) With Us During Her Intership She Has Learned Billing In Our Firm.

We Found Her Hardworking In Her InterShip Program With Us She Was Always Willing To Give Her Best Efforts And Get Into The Depth Of The Subject.

Her Associction With Us Way Very Fruithful And We Wish Her Ever Succes In Her Life & Career

FOR KUTE KIDS

PARTNER

KUTE KIDS

Scanned with CamScanner

H. R. NAMPURWALA & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS

CA. H. R. NAMPURWALA
(B. Com. FCA)

Date: 3rd February, 2021

Sub: Internship Completion Letter

This is to certify that **Ms. Sanika Arvind Kudtarkar**, student of TYBAFI (Accounting, Finance & Insurance) Smt. M. M. P. Shah Women's College of Arts & Commerce, Matunga has successfully completed her internship period of 4 months **(03rd October, 2020 to 03rd February, 2021)** with us. During her internship, she has learned **Accounting, GST & Income Tax** in our firm.

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us was very fruitful and we wish her ever success in her life & career.

H. R. Nampurwala & Co.
(Chartered Accountants)

CA. H. R. Nampurwala
(Proprietor)
M. No: 128802

2nd Floor, 7972, Kabbar Bldg., Narayan Rao Kali Marg, (Bhandari Street), Mumbai - 400 003. Tel.: 23473045 / 23473047
E-mail: hubalia100@gmail.com

Scanned with CamScanner

TEAM ISO LIFE SOLUTION

INTERNSHIP CERTIFICATE

TO WHOM-SO-EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Ms. Manali Maruti Malap student of M. M. P. Shah Women's College of Arts & Commerce has done her internship in Marketing Department at Team ISO Life Solution, Mumbai from June 2019 to May 2021.

During her internship she has demonstrated her skills with self-motivation to learn new skills. Her performance exceeded our expectations and she was able to complete all given task on time.

We wish her all the best for her upcoming career.

For TEAM ISO LIFE SOLUTION

Proprietor

Mr. Irfan Shaikh
Gold Director,
Team ISO Life Solution, Mumbai.

Scanned with CamScanner

DEEPA INDUSTRIES

Manufacturing & Trading of **ELECTRICAL GOODS.**

102, Mahila Samaj Seva building, R.C.Marg Chembur, Colony Mahul Road, Chembur, Mumbai 400074

DATE: 05.07.21

SUBJECT : Internship Letter.

This is to certify that Miss.Achal Sanjay Mangwankar , student of TY.BAFI(Accounting, Finance, and Insurance) SMT.M.M.P SHAH WOMEN'S COLLEGE OF ARTS & COMMERCE , MATUNGA has completed her Internship Period of 6 Months. She has joined from 10th December,2020 with us . During the Intership she has learned many things like :

1. Maintaining stock .
2. Managing suppliers & customers .
3. Handling Staff .
4. Maintaining Accounts.
5. Arranging finances.
6. Looking after Purchases & Sales of the company.
7. Daily Handling of all banking transactions.
8. Calling Clients.

We found her efforts were sincere, hardworking , dedicated and result oriented. She worked well as a part of the Team during the tenure.

We found her Sincere, Hardworking , Dedicated and Result Oriented.

Her association with us was very Faithful & We wish ALL THE BEST in her future endeavor.

For, DEEPA INDUSTRIES.

(Proprietor)

SHEKHAR NIHALANI

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

M/s. SANJAY D. GUPTA & CO.

CHARTERED ACCOUNTANTS

103, NEW SHREE DATTAKRUPA CHSL, BHAGWAN NAGAR KATEMANEVALI, KALYAN(E) – 421306.

Date: 4th July, 2021

Sub: Internship Completion Letter.

This is to certify that **Ms.Khushboo Rakesh Mishra**, student of TYBAFI (Accounting Finance & Insurance) Smt. M.M.P. Shah Women's College of Arts & Commerce, Matunga has successfully completed her internship period of 4 months (**01st March, 2021 to 04th July, 2021**) with us. During her internship, she has learned **Accounting, GST & Income Tax** in our firm.

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us was very fruitful and we wish her ever success in her life & career.

For **Sanjay D. Gupta & Co**
Chartered Accountants
(Firm Registration No. 144913W)

CA. Sanjay Durgaprasad Gupta
Proprietor
M.N. 157729
Place: Mumbai

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Deepali Balu Monde

Has completed **ManagementTrainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.** She has worked well as part of the team during her tenure.

We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

Hawkins

Hawkins Cookers Limited

CERTIFICATE OF APPRENTICESHIP
(UNDER APPRENTICESHIP ACT – 1961)

Name	:	Miss Gauri Morvekar
Date of Commencement of Training	:	August 13, 2018
Date of Completion of Training	:	August 12, 2019
Designated Trade	:	Technician (Vocational) Apprentice (Accounting & Office Management)
Remarks	:	During the apprenticeship period her conduct was good.

For Hawkins Cookers Limited

Capt. K. S. Khera
Senior Vice President - Personnel

Maker Tower, P101, Cuffe Parade, P.O. Box 16083, Mumbai (Bombay) 400 005. India.
Corporate Identity Number: L28007MH1989PLC011304
Email: info@hawkinscookers.com Phone: (91 22) 2218 6607, 4242 8200 Fax: (91 22) 2218 1190
www.hawkinscookers.com

Shot on Y11
Vivo AI camera

THAR & CO.
...DEATE & TAX CONSULTANT
...8, 1st FLOOR, ECSTAST BUSINESS PARK,
... OF JOY,
...P. EAST-WEST FLYOVER,
... GOSSA ROAD, MULUND (WEST)
...MBAI-400080

Date: 20TH February, 2021

Sub: Internship Letter

This is to certify that **Ms. Gauri Sunil Morvekar**, student of TYBAFI (Accounting, Finance & Insurance) Smt. M. M. P. Shah Women's College of Arts & Commerce, Matunga is doing her Internship from 28th November, 2019 till today & will go on with us. During this period she has learned **Accounting, GST & Income Tax** in our firm. (Subject to Lockdown absent from 20th March, 2020 to 23rd September,2020)

We found that she is Hardworking in her work. She is willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us is very faithful and we wish her success in her life & career.

A. P. THAR & CO.
FOR A. P. THAR & CO.

(Admin & MAR)

Scanned with CamScanner

M. D. SHROFF & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
M. D. SHROFF G.D.A.,F.C.A
K. M. SHROFF B.COM., L.L.B., A.C.A.

Please quote our
Ref No.--------

Phone : 2261 32 04
Call on : 2261 04 29
21, PERIN NARIMAN STREET,
FORT, MUMBAI-400 021.
Mob. : 9820909133

TO WHOM IT MAY CONCERN

This is to certify that **MS. SHRAVANI SUBODH MURKAR** has been in employment with us from **1st May, 2021 to 30th June, 2021** as an apprentice. She bears a reputable character, is hard hardworking and was also able to grasp accounting work with ease.

We wish her all the best in all her future endeavors.

For M. D. Shroff & Company
Chartered Accountants

K.M. Shroff

Proprietor
Firm Registration No. 0110211W
Membership No. : 035052

Scanned with CamScanner

VIVEK MAHESHWARI & ASSOCIATES

CHARTERED ACCOUNTANTS

Ph : (07576) 222044
Mohta Plot, PIPARIYA (M.P.)
Distt – Hoshangabad - 461775

"To whom so ever it may concern"

This is to state that Ms. Avni Harish Nagda a student of third year of T.Y. B. Com (A.F.I.) of Smt. M.M.P. Shah Women's College has successfully completed Internship as required by condition of the course from December 2020 to June 2021.

We wish her success for all her future endeavors.

For VIVEK MAHESHWARI & ASSOCIATES
CHARTERED ACCOUNTANTS

Vivek Maheshwari & Associates
M.No. 402476
FRN 022768C
Mohta Plot, Pipariya
Chartered Accountants

CA VIVEK KUMAR MAHESHWARI
(PARTNER)
M.No. 402476
Firm Reg.No. 022768C

Date : 30.06.2021
Place :Pipariya

Scanned with CamScanner

AF GARMENTS PVT. LTD.

MANUFACTURERS & EXPORTERT OF JALEBIYAT

Room No. 7, Block No. ER, Rajiv Gandhi Nagar, Transist Camp, Sion-Dharavi, Mumbai-400 017, India
Grd. Floor, GNMC/120/8/20/95/1394, W. P. Maharana Pratap Nagar, Dharavi, Cross Road,
Beside Royal Bakery, Dhorwada, Mumbai - 400 017.
Tel.: 022-24041826, Mob.: +91 9324372646 • E-mail : firozshaikh26@yahoo.com • afgarments22@gmail.com

Miss. Mansi Pandey

Date :3/05/2021

Sud: Offer Letter of Employment

Dear Mansi,

This is in reference to interview you had with us. We are pleased to offer you a position of account executive . your gross annual salary on the basis of cost to the company will be RS.1,62,000/-(ONE LAKH SIXTY TOW THOUSAND ONLY) PER ANNUM.

Your date of joining will be from 3th mai,2021. Please note that this offer is valid subject to you

Signing and returning the duplicate copy of this letter within seven working days.

We welcome you and delighted that you have chosen to be part of our team .we hope your association with us will be mutually beneficial , pleasant and fulfilling.

For,AF GARMENT PVT LTD

For AF GARMENTS PVT. LTD.

MOHD ABULLAS SHAIKH

Scanned with CamScanner

Wash & Wander

car wash

It's more than a car...keep it clean

Head Office : 9/406, Shri Building, Gandhi Nagar, Worli, Mumbai 400102.
Address : 19/11/503, 5th Floor, Gokuldham CHS., Sangharsh Nagar,Chandivali Farm Road, Andheri (E), Mumbai - 400 072.
E-mail : washawander@gmail.com Contact : [illegible]

Jignesh Parab
11/305, Gandhi Nagar,
L.R papan marg,
worli 400018.
DOB 27/11/2000.

Dear Concerned,

I hereby certify that Jignesha Parab was employee as Customer Service Executive. Company Wash and Wander during the period started from 6 may 2020 to 25 June 2021.

Jignesh are started working with Wash and Wander company as a trainee and with sincere efforts and excellent performance was moved to the position of Executive officially employed as full time employee. One year of working experience with us, she demonstrated as a deligent and truthful person. Interpersonal skills are outstanding and she has been very helpful and have been highly appraised by her manager.

We wish her success in her future efforts.

Regards

WASH & WANDER
Date : 1/7/20
MUMBAI

Scanned with CamScanner

H. R. NAMPURWALA & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS

CA. H. R. NAMPURWALA
(B. Com. FCA)

Date: 17th January, 2021

Sub: Internship Completion Letter

This is to certify that **Ms. Anushka Naresh Patil** , student of TYBAFI (Accounting, Finance & Insurance) Smt. M. M. P. Shah Women's College of Arts & Commerce, Matunga has successfully completed her internship period of 4 months **(17th September, 2020 to 17th January, 2021)** with us. During her internship, she has learned **Accounting, GST & Income Tax** in our firm.

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us was very fruitful and we wish her ever success in her life & career.

H. R. Nampurwala & Co.
(Chartered Accountants)

CA. H. R. Nampurwala
(Proprietor)
M. No: 128802

2nd Floor, 70/72, Kabibai Bldg., Narayan Rao Koli Marg, (Bhandari Street), Mumbai - 400 003. Tel.: 23473045 / 23473047
E-mail: huzaifa100@gmail.com

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

M.B. AGRAWAL & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
Web.: mbaconsultants.in

204 C, Mhatre Pen Bldg., Senapati Bapat Marg,
Dadar (West), Mumbai - 400 028.
Tel.: 2431 4861 / 62, Fax : 2436 3312
E-mail : mbaandco@yahoo.co.in

M. B. AGRAWAL F.C.A., F.I.V.
YATIN MEHTA F.C.A.
RAMESHMAL SANGHAVI F.C.A.
SANJAY LUNKAD F.C.A., D.I.S.A. (ICA)

HARSHAL AGRAWAL F.C.A., D.I.S.A. (ICA), C.I.S.A.
SUBODH N. AGRAWAL F.C.A.
HERIN SHAH A.C.A.
JENNY BHAVSAR A.C.A., LL.B.

Date – 12 June 2021

To,
Miss Najuka Prakash Patil
Nagesh Patil Wadi ,
Ghatla Village,
Chembur,
Mumbai – 400071

Sub – Certificate of Completion of Internship

This to certify that **Miss Najuka Prakash Patil** student of TYBAFI has completed her six months internship with us, from 11th January 2021 to 12 June 2021.

As part of her internship she has done a study on **"Income Tax & TDS"** in Tax Department.

During the tenure with us, we found Miss Najuka Prakash Patil, sincere and result oriented.

We wish Miss Najuka Prakash Patil all the best for her future.

Yours faithfully
M.B Agrawal & Co.
Chartered Accountants

Sanjay Lunkad
Partner

M. B. AGRAWAL & CO. MUMBAI CHARTERED ACCOUNTANTS

Branch : 610, Churchgate Chambers, 5, New Marine Lines, Churchgate, Mumbai - 400 020.
: 3044, Agra Road, Dhule, Maharashtra - 424 001.
: 306, Swastik Corporate, Disa Park, LBS Marg, Ghatkopar (W), Mumbai - 400 077.

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Anjali Ramdhavan Patwa

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,** and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Nisha Sanjay Patwa

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Aakansha Dattatray Phanse

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Shweta Shankar Pote

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

Janardan B. Brokar & Co.

Advocate's & Tax Practitioner's

K/66, LOKMAANYA PANBAZAR, BEHIND, EVERARD, NAGAR,E.E. HIGHWAY, SION CHUNABATTI, MUMBAI - 400022

DATED : 15th March, 2021

To,
Ms. Shrutika Rahate
Lokande Marg, Chembur Station
Mumbai – 400089.

Subject : Appointment for the post of An Internship....

Dear Madam,

We are pleased to confirm your appointment with our company and your acceptance to in the position of an Internship . Your date of joining will be 1st March 2021 on the Join following conditions:

1. Monthly basic stipend to amount 5500/- per month
2. Your internship period will be for 2 months
3. Office timings will be 8 Hours per day from 9:30 am to 5:30pm on working days.

We knew you will find working here a rewarding and career enhancing experience.

FOR Janardan B. Broker & Co. (Advocate's & Tax Practitioner's)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Manali Govind Rane

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,** and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad N. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

Janardan B. Brokar & Co.

Advocate's & Tax Practitioner's

K/66, LOKMAANYA PANBAZAR, BEHIND, EVERARD, NAGAR,E.E. HIGHWAY, SION CHUNABATTI, MUMBAI - 400022

DATED : 15th March,

2021

To,
Ms. Rani Rathod
Sion Koli Wada, GTB Nagar
Mumbai – 400022.

Subject : Appointment for the post of An Internship....

Dear Madam,

We are pleased to confirm your appointment with our company and your acceptance to
in the position of an Internship . Your date of joining will be 1st March 2021 on the Join following conditions:

1. Monthly basic stipend to amount 5500/- per month
2. Your internship period will be for 2 months
3. Office timings will be 8 Hours per day from 9:30 am to 5:30pm on working days.

We knew you will find working here a rewarding and career enhancing experience.

FOR Janardan B. Broker & Co. (Advocate's & Tax Practitioner's)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Perfect
packaging industries

all types of paper roll tubes

20/06/2021

WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Ms. DEEPA YUVRAJ REDDY has done her internship in Accounting at Perfect Packaging Industries, Mumbai, from 03th May 2021 to 20th June 2021.

During her internship, she has demonstrated her skills with self-motivation to learn new skills. Her performance exceeded our expectations and she was able to complete the project on time.

We wish her all the best for her upcoming career.

Perfect Packaging Industries

Account Manager

Signature

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Kajol Suresh Rewale

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Khushboo Durgesh Saroj

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad. N. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

Mobile No: 9821081097
Office No : 8424842699

Astitva Interiors

Total interior solutions

Shop No.03, Rumani Manzil,Near Metro Station, Asalfa Village, Ghatkopar (W) Mumbai-400084.

Subject :- Internship Completion Letter

This is to Certify that **Miss. Namrata Kailas Sarvade** , Student of TYBAFI (Accounting, Finance and Insurance) SMT. M.M.P. Shah Women's College Of Arts and Commerce, Matunga. Has successfully completed Her Internship Period Of 3 Months **(01 January, 2021 To 01 July, 2021)** with us. During her Internship, she has Learnedthefollowing things while her Internship.

1. **Excel workbook**
2. **Mailings**
3. **Documentation/Filing of the company**
4. **GST Maintainance.**
5. **Daily Handelling all banking transactions**

Over all she has worked in Accounts Department.

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts, and get into the depth of the subject.

Her association with us was very Faithful and we wish her ever success in her life and career.

For, ASTITVA INTERIORS

ASTITVA INTERIORS MUMBAI

AUTHORISED SIGNATORY.

(Proprietor)

Mr. Shrikant Shingote.

Scanned with CamScanner

RENAISSANCE LOGISTICS SOLUTIONS

C-101 GOVING APATMENT, SECTOR 12A PLOT NO 4A OPP ASHWITH HOTEL, KOPARKHAIRANE 400709

DATED : 04th January 2021

To,
Ms. Soni Shah
Deonar Depot, chembur
Mumbai – 400088.

Subject : Appointment for the post of An Internship....

Dear Madam,

We are pleased to confirm your appointment with our company and your acceptance to in the position of an Internship . Your date of joining will be 01st January 2021 on the Join following conditions:

1. Monthly basic stipend to amount 6500/- per month
2. Your internship period will be for 3 months
3. Office timings will be 8 Hours per day from 9:30 am to 5:30pm on working days.

We knew you will find working here a rewarding and career enhancing experience.

FOR Renaissance Logistic Solution

Authorised Signatory

RENAISSANCE LOGISTICS SOLUTIONS

Scanned with CamScanner

Bhutada Mundada & Co.
Chartered Accountants
Contact - 8003430803 / 8104816007, Email – bhutadamundada.mumbai@gmail.com

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to state and certify that **Ms. Shaikh Tabassum Banu Abdul Majeed** a student of third year of T.Y. B.Com (A.F.I.) of "SMT. M.M.P. Shah Women's College of Arts & Commerce" has successfully completed internship as required by condition of the course from April -2021 to June 2021.

We wish her success of all her future endeavors.

For Bhutada Mundada & Co.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 128084W

Bhutada Mundada & Co. MUMBAI Chartered Accountants

CA Dhruvil Ameta
Partner
M. No. 449217
Date. 30/06/2021
Place. Mumbai

302, Rajiv Gandhi, Co-operative Society, Opposite Aayush Hospital, 90 Feet Road, Kumbharwada, Sion, Mumbai 400-017
www.bhutadamundada.org

Scanned with CamScanner

Carrier
turn to the experts

KOOL TECH REFRIGERATION

Authorised Service Franchise

01.07.2021

To Whom It May Concern:

This is to certify that Shaikh Asfiya Mohammed fazlullah, was working with Kooltech Refrigeration as **Data Entry operator** for [**03 months**] starting from [01.Mar-2021] to [30.June-2021].

During her tenure withKool Tech Refrigeration, we foundShaikh Asfiya Mohammed fazlullah to be honest, hardworking & responsible.

she has done an exemplary job while working with us & has always maintained professional relations with the team & colleagues.

The decision of moving on is completely Shaikh Asfiya Mohammed fazlullah

own decision.

We wish her all the best for his/her future opportunities.

Sincerely,

Abu Bakar Shaikh]
[Proprietor/Owner]

Scanned with CamScanner

C.M. Travels
KONKAN TOURS & TRAVELS
Noor Apartment, Shop No. 1, Behind Tanwar Complex, Dongre Nagar, Kausa - Mumbra, Dist. Thane. 400612
CONTACT : 2549 3946 / 2549 1611 / 2549 1612 / 2549 5555 Cell : 9321084900 / 9323027171 / 9321482262 / 93244398

Ref. No.

Date : 2/7/21

Experience Letter

It is to certify that Miss Asifa Shaikh has been serving as an Account assistant in Konkan Tours & Travels from 1st April 2021 to 30th June 2021for three month. During this tenure of work Miss Asifa Shaikh remained involved in her work dedicated we found her active in whatever task we provide her. She is professionally sound and hardworking. She has the motivation to take initivative task.

I wish her all the best in her future endeavor

Konkan Tours & Travel

KONKAN TOURS & TRAVELS

Scanned with CamScanner

TRADESCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Huma Mohammed Ali Shaikh

Has completed **ManagementTrainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.** She has worked well as part of the team during her tenure.

We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

S. S. SIDDIQUI & ASSOCIATES

Siddiqui Naveed
Cell.: 9892808815
Income Tax, Sales Tax Consultant,
Authorised Auditors For Public Trust

Miss. Siddiqui Somaiya
Cell.: 9324388428
ADVOCATE HIGH COURT

RESIDENCE : 6D/42, Taximen's Colony, L.B.S. Marg, Kurla (W), Mumbai - 400 070.

OFF. : C/12, Salman Chambers, Rassiwala Compd., Near Best Depot, L.B.S. Marg, Kurla (W), Mumbai - 70. Off No. 9699540500

Internship Completion letter

This is to certify that SHAIKH SAYEM JOHRA student of TY-BAFI (Account, Finance & Insurance) SNDT College, Matunga has successfully Completed her internship period of 2 months (11th December 2020 to 11th February 2021) with us. During her internship she has learned income tax, GST, Charity Commissioner Audit and Tally accounting in our firm.

During this period we found him honest, hardworking and punctual.

Her association with us very faithful and we wish her ever success in her life and career.

For S. S. SIDDIQUI & ASSOCIATES

Proprietor

Scanned with CamScanner

UNITED TECHNOLOGY SERVICES

Office: 165/1 ZARIWALA COM, K-A ROAD, KAMANI KURLA (W),
MUMBAI - 70, Mo-9820910652 khanirshad@aol.in

Date 05-June-21

This is to certify that **Ms.Shaheena Parveen Shaikh** is working in our company as **"Project Coordinator- Fresher "**

For the period from **1st June 2021 to Till now.** During his tenure with the company we found his work to be completely satisfactory and honest. On behalf of the company

We wish him a successful career ahead and good luck for his future endeavors.

United Technology Services

Authorized Signature

Scanned with CamScanner

Dear Vaibhavi,

As already informed to you that you are being shortlisted for vocational apprenticeship. However , due to the imposed restrictions by government , private offices are allowed only to work with their 50% capacity. We expect that government might lift some restrictions by July 15, 2020 allowing to work with 100% capacity and also public transport would be fully operational. Hence, your date of joining would be July 15, 2021 which is subject to your bringing of negative RT-PCR report on the day and also the government instructions prevailing at that time.

You are requested to check with the undersigned by July 10, 2021 about the status of joining the office.

Regards,

Divya Sharma

Personnel Department

Hawkins Cookers Limited

Maker Tower F - 101, Cuffe Parade

Mumbai 400 005

Corporate Identity Number: L28997MH1959PLC011304

Direct Line: +91-22-4242 5374

www.hawkinscookers.com

Scanned with CamScanner

Dear Vruddhi,

As already informed to you that you are being shortlisted for vocational apprenticeship. However , due to the imposed restrictions by government , private offices are allowed only to work with their 50% capacity. We expect that government might lift some restrictions by July 15, 2020 allowing to work with 100% capacity and also public transport would be fully operational. Hence, your date of joining would be July 15, 2021 which is subject to your bringing of negative RT-PCR report on the day and also the government instructions prevailing at that time.

You are requested to check with the undersigned by July 10, 2021 about the status of joining the office.

Regards,

Divya Sharma

Personnel Department

Hawkins Cookers Limited

Maker Tower F - 101, Cuffe Parade

Mumbai 400 005

Corporate Identity Number: L28997MH1959PLC011304

Direct Line: +91-22-4242 5374

www.hawkinscookers.com

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Ruchira Sanjay Shedge

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad. M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

D. G. THAKARAR & ASSOCIATES (REGD.)
CHARTERED ACCOUNTANTS

CA. DEEPAK G. THAKARAR
B.Com., F.C.A., ASA

CA. NILAM D. SALVI
B.Com., F.C.A., DISA (ICA), CISA (USA), ASA

CA. B. B. SHAH
B.Com., A.C.A.

CA. PRATIK V. MEHTA
B.Com., F.C.A.

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Ms. Kamini Nana Shinde having permanent address at D - 832, Kalapataru CHS, Opp. Gold Field Building, Sion Bandra Link Road, Dharavi, Mumbai - 400017 is working with us since 01st March, 2021.

She has worked in Tally ERP 9 (Accounting Package) for feeding Financial Data of clients for more than 240 Hrs. We further state that she is hard working, sincere and very painstaking employee. She believes in achieving the target/goal in time and also has quality of working / mixing as a member of the team.

This certificate is issued as per her request for meeting with her course - curriculum.

PLACE: MUMBAI

D. G. THAKARAR & ASSOCIATES MUMBAI CHARTERED ACCOUNTANTS

FOR D. G. THAKARAR & ASSOCIATES
FIRM'S REGISTRATION NO. 115170W
CHARTERED ACCOUNTANTS

DATE: APRIL 09, 2021

B/14, Shubhlaxmi, 2nd Floor, 8th Road, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. Tel.: 91-22-2610 2890 (3 lines) - E-mail : info@cadgta.net

Scanned with CamScanner

PPS Financial Services LLP
306, M. B. House, 3rd Floor, 79, Janmabhoomi Marg, Fort, Mumbai - 400 001
Tel. : 022-2202 6523 • Mob. : 090045 81370 • E-mail : info@ppsfs.in • Website : www.ppsfs.in

Date : 15th April 2021

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify **Ms. Divya Abhinay Kanade** d/o Mr. Abhinay Kanade residing at Gauri Shankar Nagar, Halav Pool, Masrani Lane, Kurla (W), Mumbai 400 070 has successfully completed 01 month i.e. from 15th March 2021 to 15th April 2021 internship programme at this Company. During the period of this internship programme with us she was found punctual, hardworking and inquisitive.

We wish her every success in life.

For PPS Financial Services LLP

Rooche Aggarwal

Authorized Signatory.

Perfect
packaging industries

all types of paper roll tubes

Date: 30/06/2021

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Ms. Divya Abhinay Kanade has done her internship in Accounting at Perfect Packaging Industries, Mumbai, from 01 May 2021 to 30th June 2021.

During her internship, she has demonstrated her skills with self-motivation to learn new skills. Her performance exceeded our expectations and she was able to complete the project on time.

We wish her all the best for her upcoming success.

Perfect Packaging Industries

Account Manager

Scanned with CamScanner

AF GARMENTS PVT. LTD.

MANUFACTURERS & EXPORTERT OF JALEBIYAT

Room No. 7, Block No. ER, Rajiv Gandhi Nagar, Transist Camp, Sion-Dharavi, Mumbai-400 017, India
Grd. Floor, GNMC/120/6/20/95/1394, W. P. Maharana Pratap Nagar, Dharavi, Cross Road,
Beside Royal Bakery, Dhorwada, Mumbai - 400 017.
Tel.: 022-24041820, Mob.: +91 9324372546 • E-mail : firozshaikh26@yahoo.com • afgarments22@gmail.com

Miss. KAMNA SIRASWAL

Date :15/05/2021

Subject: Offer Letter of Employment

Dear KAMNA,

This is in reference to interview you had with us. We are pleased to offer you a position of account executive . your gross annual salary on the basis of cost to the company will be RS.10000/-(ONE LAKH TWENTY THOUSAND ONLY) PER ANNUM.

Your date of joining will be from 15th may,2021. Please note that this offer is valid subject to you

Signing and returning the duplicate copy of this letter within seven working days.

We welcome you and delighted that you have chosen to be part of our team .we hope your association with us will be mutually beneficial , pleasant and fulfilling.

From , AF GARMENT PVT LTD

MOHD ABULIAS SHAIKH

Scanned with CamScanner

Hawkins Cookers Limited

PROVISIONAL CERTIFICATE OF APPRENTICESHIP
(UNDER APPRENTICESHIP ACT – 1961)

Name	:	Miss Jyoti Dilip Sutar
Date of Commencement of Training	:	October 18, 2019
Date of Completion of Training	:	March 31, 2021
Designated Trade	:	Technician (Vocational) Apprentice (Accounting & Office Management)
Remarks	:	During the apprenticeship period her conduct was good.

HAWKINS COOKERS LIMITED MUMBAI

For Hawkins Cookers Limited

Capt. K. S. Khera
Senior Vice President - Personnel

1. This is provisional Certificate. Final Certificate shall be issued on receipt of Registration No. from the Regional Directorate of Apprenticeship Training.
2. The apprenticeship period was extended as per letter O.M.No.MSDE-1(3)/2020 AP (PMU) issued by Ministry of Skill Development and Entrepreneurship.

Maker Tower, F 101, Cuffe Parade, P.O. Box 10083, Mumbai (Bombay) 400 005. India.
Corporate Identity Number L28007MH1960PLC011304
E-mail : ho@hawkinscookers.com Phone : (91 22) 2218 0607, 4242 8200 Fax : (91 22) 2218 1190
www.hawkinscookers.com

Scanned with CamScanner

A.K. THAR & CO.
ADVOCATE & TAX CONSULTANT
130, 1st FLOOR, ECSTASY BUSINESS PARK,
CITY OF JOY,
OPP. EAST-WEST FLYOVER,
J. S. DOSSA ROAD, MULUND (WEST)
MUMBAI-400080

Date: **20TH February, 2021**

Sub: Internship Letter

This is to certify that **Ms. Susmita Pravin Tandel**, student of TYBAFI (Accounting, Finance & Insurance) Smt. M. M. P. Shah Women's College of Arts & Commerce, Matunga is doing her Internship from 24th September, 2020 till today & will go on with us. During this period she has learned **Accounting, GST & Income Tax** in our firm.

We found that she is Hardworking in her work. She is willing to give her best efforts and get into the depth of the subject.

Her association with us is very faithful and we wish her success in her life & career.

A.K. THAR & CO.
FOR A. K. THAR & CO.

PROP.
(ASHOK K. THAR)

Scanned with CamScanner

Comfort Airs

Cool your summerWarm your winter

Date : 25 jun2021

To

miss Dipali Tetgure

Sub: Certificate for completion of Internship

This is to certify that **miss. Dipali Shankar Tetgure** , student of Bcom-afi. has completed her 3 months internship with us ,from **2 mar 2021 to 6 May 2021** .

As a part of her internship she has done a study on **"Accountant"** in **Accounting Depertment**.

During the tenure with us , we found **miss. Dipali Tetgure** , sincere and result oriented .

We wish **miss. Dipali Tetgure** All the best for her future endevors.

For Comfort Air

COMFORT AIRS PUNE

Scanned with CamScanner

श्रद्धानन्द महिलाश्रम

Ref.No:Admin/121/2021 June 10, 2021.

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN.

This is to state that Ms. Savita Vijay Thakur was placed in our Shraddhanand Mahilashram for her internships.

She has completed one month internship with our Account Department.

SVParadkar

Joint Honorary Secretary

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Prajakta Satish Tupare

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

अश्विन महेश उपाध्याय
वरिष्ठ व्यवसाय सहयोगी
Ashwin Mahesh Upadhyaya
Senior Business Associate
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

Date: 22nd February, 2021.

SUB: INTERNSHIP COMPLETION LETTER.

This is to certify that Ms. NIRMALA SURESH VAI, Student of SMT. MMP SHAH WOMEN'S COLLEGE OF ARTS & COMMERCE, MATUNGA has successfully completed her internship period of 3 months (15th November to 22nd February, 2021) with us. During her internship she has learned Insurance and office Administration.

We found her very sincere and hardworking during her internship program. She was always willing to give her best and was alway eager in learning the subject in depth.

Her association with us was very fruitful and we wish her every success in her life and career.

ASHWIN M. UPADHYAYA
LIC DEVELOPMENT OFFICER
S. R. No. 491729
CODE No. 4573 / BR. 318
TEL.: 24311417 / 9821216219
S. B. A.

अश्विन महेश उपाध्याय
Ashwin Mahesh Upadhyaya
Senior Business Associates
Off. Sr. No. 318, Jeevan Prakash Building, 3rd Floor
50 P.M. Road, Fort, Mumbai - 400 001

BOND OF LOVE

...एम. रोड, फोर्ट, मुंबई - ४०० ००१
...19 / 9969026126
...M. Road, Fort, Mumbai - 400 001
...98219 / 9969026126

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

TRADE SCHOOL

Internship Certificate

This certifies that

Kanchan Deepak Vinde

Has completed **Trainee** at Mumbai From 1-March-2021 To 31-jun-2021

We found her **Sincere, Hardworking, Dedicated,**and **Result Oriented.**
She has worked well as part of the team during her tenure.
We take this opportunity to thank her and wish her all the best for her **Future.**

Awarded this **31-June-2021**

Prahlad M. Tripathi

Director

Trade school Mumbai

Scanned with CamScanner

Astitva Interiors

Total interior solutions

Shop No.03, Rumani Manzil,Near Metro Station, Asalfa Village, Ghatkopar (W) Mumbai-400084.

Subject :- Internship Completion Letter

This is to Certify that **Miss. Shivani Upendra Vodale** , Student of TYBAFI (Accounting, Finance and Insurance) SMT. M.M.P. Shah Women's College Of Arts and Commerce, Matunga. Has successfully completed Her Internship Period Of 3 Months **(2nd January, 2021 To 2nd July, 2021)** with us. During her Internship, she has Learnedthefollowing things while her Intership.

1. **Excel workbook**
2. **Mailings**
3. **Documentation/Filing of the company**
4. **GST Maintainance.**
5. **Daily Handelling all banking transactions**

We found her hardworking in her internship program with us. She was always willing to give her best efforts, and get into the depth of the subject.

Her association with us was very Faithful and we wish her ever success in her life and career.

For, ASTITVA INTERIORS

ASTITVA INTERIORS MUMBAI

AUTHORISED SIGNATORY.

(Proprietor)

Mr. Shrikant Shingote.

Scanned with CamScanner

P. G. GOPALAKRISHNAN *Ph.D.*

M.Com, L.L.M., M.Phil. A.C.S., AMIMA, F.C.A.

M/s. P. G. GOPALAKRISHNAN

Chartered Accountants

110, 'Saideep' N.G. Acharya Marg,
Chembur, Mumbai - 400 071.
Tel. : 9967211744
E-mail : pggk@yahoo.com

Ref: PGG.NW.CERT.1

Date: 03.07.2021

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Ms Namrata Namdev Washivale is working as a Tra nee with us since 1st July 2019 and she is committed and sincere to her assignments. She bears a very good understanding of the subjects and contributes well in her activities.

We wish her all the success in all the her endeavour.

For M/s P G Gopalakrishnan

Chartered Accountants

Dr P G Gopalakrishnan FCA-33121

MUMBAY

Scanned with CamScanner

Ajit K Shah & Co
Office No 2, Adi House Gokhale Road, Opp Portuguese Church, Dadar (W) Mumbai 400028
Mob: 98208 25209 / 80808 25209
Email : - ajitkshahit@gmail.com

To Whom So Ever It May Concern

This is to certify that Ms. Kajal Sushil Yadav student of TYBAFI (Accounting, Finance & Insurance) from Smt. Maniben M.M.P. Shah women's college of Art and Commerce , Matunga has completed her internship period of 1 month (18th march 2021 to 21st April 2021) with our organisation . During her internship, she has learned Tally at elementary level and Banking Transactions.

We found her hardworking in her internship program.

We wish her ever success in her life & career.

For Ajit K Shah & Co

(Chartered Accountants)

AJIT K. SHAH & CO. M. No 119228 CHARTERED ACCOUNTANT

01/07/2021

Ajit Shah

01.07.2021

Scanned with CamScanner

BMS Letters

Nirmala's
BRIGHT WAYZ
enlighten in YOUR path

Certificate of Internship

THIS IS TO CERTIFY THAT

Aakanksha Sanjay Arote

successfully completed her work with Brightwayz from 1st May 2021 to 30th June 2021 on Marketing and Administration work.

The candidate demonstrated considerable acumen and skills to complete the given work to her.

We wish her all the best for her future career and endeavour.

CERTIFIED BY

HR DEPARTMENT

muskurahat
foundation

CERTIFICATE OF COMPLETION

Presented To

Namrata Vinod Suyani

for recognition of your performance in Fundraising Internship of about One Month from 15th February 2021 to 17th March 2021, for the children catered by Muskurahat Foundation.

AMOUNT RAISED: Rs [redacted]

HIMANSHU GOENKA
President & Founder

20th March 2021
Date

10:25 PM

aashman
FOUNDATION

OFFER LETTER

(Note: This is an offer letter not meant to be represented as internship completion document/certificate. If the internship successfully completes the intern will get an internship completion certificate.)

Date : 13/06/2021

Student Name : Pratiksha Ghadge
Father's Name : Subhash Ghadge
City/ State : Maharashtra

Dear Pratiksha Ghadge
We would like to congratulate you on being selected for the Human Resource (HR) [6+ months]internship with Team Aashman Foundation, effective from 13/06/2021. All of us at Aashman Foundation are excited that you will be joining our team!

As we discussed during the interview process, this is a non-paid internship during which you will be expected to provide work as per given timelines. You might be awarded with different perks too if your performance speaks loud

Firmway Services Private Limited
(CIN No: U72900MH2016PTC283841)
Jai Hind Estate, Bldg. No. 1, Shop No. 18, Dr. A. M. Road, Bhuleshwar, Mumbai 400002.
022 66 355 226 www.firmway.in

Date: - May 3, 2021

Ms. Priya Rajput

Offer Letter

Dear Priya,

I am delighted & excited to welcome you to FIRMWAY as a **Business Development Intern**. At FIRMWAY, we believe that our team is our biggest strength and we take pride in hiring the best and the brightest. We are confident that you would play a significant role in the overall success of the venture and wish you the most enjoyable, learning packed and truly meaningful internship experience with FIRMWAY.

Your appointment will be governed by the terms and conditions presented in the **Annexure A.**

We look forward to you joining us. Please do not hesitate to call us for any information you may need. Also, please sign the duplicate of this offer as your acceptance and forward the same to us.

Congratulations!

Prashant Gupta

CEO, Co-founder

GALAXY CLOUD KITCHENS LIMITED

Date: -09th April, 2019

Subject: - Internship Completion Letter

To whom so ever it may concern that **Sajida Shaikh** a student from **SNDT College, Matunga** has successfully completed her internship at **The Galaxy Cloud Kitchen Ltd** from **8th April, 2019** to **8th May, 2019**.

In her internship she was exposed to various activities in Bakery- Foodhall Department.

During the internship period we found her extremely hard working and shown passion towards work given to her.

We wish her success in her future endeavours.

For Galaxy Cloud Kitchen Ltd.

Thomas Lewis
Lead - People Office

(Formerly Known as **Galaxy Entertainment Corporation Limited**)
CIN : L15100MH1981PLC024988
Registered Office : Eyelet House, M.S. Patel Compound, Near John Baker Bus Stop, Opp. Shah Industrial Estate, Saki - Vihar Road, Saki Naka, Andheri (East), Mumbai - 400 072.
Tel: 022 6199 4412 • Email: investors@galaxycloudkitchens.in • Website: www.galaxycloudkitchens.in

Date: 14th March 2021

Ms. Sumaiya Khan

Pankesha Baba Darga Room No 10,

Dear **Sumaiya Khan**,

Subject: **Letter of Engagement**

With reference to the discussions we had with you, we hereby confirm having agreed to engage your services as **"Beauty Consultant"** for **Colorbar Store, Marketcity Kurla-Kiosk(Mumbai)** on the following terms and conditions:

1. **Duration:**

   This engagement will be effective from **1st April 2021** and will be for the entire duration and shall automatically come to an end on the closing hours of **31st March 2022**.

2. **Nature of Engagement:**

   a. You will devote whole of your time, to your duties with the Company and not engage in any other activity during this time. Your engagement is such as to require your undivided loyalty to the company at all times.

   b. Your services will be renewed based on the performance & continuity of the services with the Company.

   c. Your services are liable to transfer at any other location of the company as per the business requirement, however this is subject to change which shall be intimated to you in advance.

3. **Retainership Fee:**

   During the period of this engagement you will be paid consolidated retainer ship fee of **Rs. 20000/-** (Rupees Twenty Thousand Only) Per month, which may be reduced or Increased as per the Business scenario at any time without any notice at the sole discretion of the company. The retainer ship fee will be paid basis number of hours you rendered the services at the location of the company as per the business requirement, in absence of your presence; the company has no obligation to release the payment for the month. The whole of the payment shall be subjected to Tax Deduction at Source, in accordance with the applicable provisions of the Income Tax Act, 1961.

During the subsistence of this arrangement, you shall not be eligible to any other benefits, perquisites or privileges such as Medical, provident fund, LTA, Anuual Leaves, Maternity benefits etc. enjoyed by permanent employees of this concern. You shall also not be eligible for any statutory benefits that are applicable to our regular employees during the tenure of their service or which arise on termination or conclusion of their services.

July 31, 2020

Dear Kirti Harishankar Pandey

Congratulations!!

We refer to your application and the subsequent interviews you had with us at your college.

We are pleased to announce that you are selected for Internship course with our organization

Branch – Parel – Bhavya Suprim

Welcome to Wellness Forever Family!!!

We look forward to your joining on 1/08/2020 and we shall complete the Joining Formalities and Induction training on the same day.

The terms of your Internship are:

- On completion of your internship period, your performance shall be evaluated and you stand a chance to be absorbed on the rolls of the company.
- Stipend is 10000/-; duty hours would be 9 hours per day.
- Tenure would be for 12 Months
- During the internship, you shall abide by the rules and regulations of the company.
- A certificate will be issued on completing internship.

Wishing you the very best and look forward to a mutually rewarding and long lasting association.

Do sign the copy of this letter as a token of your acceptance of the offer.

I accept the above offer

Date - March 12th 2021

Name - Payal Jangid
Address - Bldg no 10/ room no 279, 90ft road, Pantnagar, Ghatkopar east, Mumbai 400075
Phone - +91 9819675991
Email - payalpjangid@gmail.com

Dear Payal,

I am delighted and excited to welcome you to **Do Your Thng (DYT)** as a **Customer Support Intern.** At DYT, we believe that our team is our biggest strength and we take pride in hiring only the best.

We are confident that you would play a significant role in the overall success of the organisation and wish you the most enjoyable, learning packed and truly *meaningful* internship experience with DYT.

Your appointment will be governed by the terms and conditions presented in **Annexure A.**

We look forward to having you onboard. Please don't hesitate to call us/mail us for any information you may need.

Congratulations!

Ankit Agarwal
(Founder & CEO)

Annexure A

You shall be governed by the following terms and conditions of service during your internship with DYT, and those may be amended from time to time.

- You are being hired as a Customer Support Intern and Ankit Agarwal would be your Reporting Manager and Mentor during the internship

- Your date of joining is **12th March, 2021** and the duration of the internship would be 3 months. During this time you are expected to devote your time and efforts solely to DYT's work. You are also required to let your mentor know about forthcoming events (if there are any) in advance so that your work can be planned accordingly

- You will be under probation for the first 15 days of your internship, during which the company may terminate you without any notice period.

- You will be working remotely for the duration of the internship. There will be catch ups scheduled with your mentor to discuss work progress and overall internship experience at regular intervals.

- All the work that you will produce at or in relation to DYT will be the intellectual property of DYT. You are not allowed to store, copy, sell, share, and distribute it to a third party under any circumstances. Similarly you are expected to refrain from talking about your work in public domains (both online such as blogging, social networking site and offline among your friends, college etc.) without prior discussion and approval with your mentor

- We take data privacy and security very seriously and to maintain confidentiality of any students, customers, clients, and companies' data and contact details that you may get access to during your internship will be your responsibility. DYT operates on zero tolerance principle with regard to any breach of data security guidelines. At the completion of the internship you are expected to hand over all DYT work/data stored on your Personal Computer to your mentor and delete the same from your machine

- During the appointment period you shall not engage yourselves directly or indirectly or in any capacity in any other organisation (other than your college). In the event of breach of this condition, this appointment is liable to be terminated forthwith by the company. In addition, you shall be liable to pay liquidated damages to the Company of an extent estimated by the Company

- Under normal circumstances either the company or you may terminate this association by providing a notice of 7 days without assigning any reason. However, the company may terminate this agreement forthwith under situations of in-disciplinary behaviours

- You are expected to conduct yourself with utmost professionalism in dealing with your mentor, team members, colleagues, clients and customers and treat everyone with due respect

- DYT is a start up and we love people who like to go beyond the normal call of the duty and can think out of the box. Surprise us with your passion, intelligence, creativity and hard-work – and expect appreciation & rewards to follow

- Expect constant and continuous objective feedback from your mentor and other team members and we encourage you to ask for and provide feedback at every possible opportunity. It's your right to receive and give feedback – this is the ONLY way we all can continuously push ourselves to do better.

- Have fun at what you do and do the right thing – both the principles are core of what DYT stands for and we expect you to imbibe them in your day to day actions and continuously challenge us if we are falling short of expectations on either of them.

- You will be using your own laptop for this internship and will be paid INR 10,000 per month as stipend

I have negotiated, agreed, read and understood all the terms and conditions of this Internship letter as well as Annexure hereto and affix my signature in complete acceptance of the terms of the letter.

Date - 12 Mar 2021

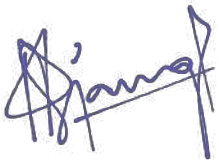

Name Payal Jangid